THE TIMES

VED CHAKSHU वेद चक्षु

The Gateway of Cosmos

श्री सनातन मार्ग

SWAMI SAMATAN SHREE

(English Translation : Achyut Shanker)

द टाइम्स The Times

वेद चक्षु

The Gateway of Cosmos

श्रद्धेय स्वामी सनातन श्री जी के श्रीमुख से

श्री सनातन आश्रम

गौराबाग, फुर्सी रोड, लखनऊ

English Translation: Achyut Shanker

प्रस्तुति : राजेश्वरी शंकर

(संपादिका : 'द टाइम्स ऑफ एस्ट्रोलॉजी)

NISHKAAM PEETH PRAKASHAN

(Publication Divison of "The Times of Astrology")

First Edition : 2006

© Rajeshwari Shanker Associates.

All rights reserved. No part of this book may be used or reproduced in any manner whatsoever without written permission from the publisher except in the case of brief quotations embodied in critical views and reviews.

ISBN - 81-87528-59-1

Also available at :
Lucknow Beureau of **"The Times of Astrology"**
B-4, Arif Vikas Chamber, Sector-2, Vikas Nagar, Lucknow
Phone : 0522 - 2769462

Cover Design: Achyut Shanker

Published by **Rajeshwari Shanker** on behalf of Rajeshwari Shanker Assoicates for Nishkaam Peeth Prakashan (Publication Divison of **"The Times of Astrology"**) Rajeshwari Shanker Associates.
R-12 A Hauz Khas,
New Delhi - 110 016 Ph : 011-26512523,
Email. *editor@jyotirved.com*
Printed at : Supreme Offset Press, K-5, Malviya Nagar, New Delhi- 110017

अनुक्रम Index

विषय	पृष्ठ संख्या
संक्षिप्त परिचय	4
श्री ब्रह्ममुख से	7
प्रवेश से पूर्व	9
वेद चक्षु	14
Ved Chakshu: The Gateway of Cosmos	55

श्रद्धेय स्वामी सनातन श्री

(एक संक्षिप्त परिचय)

आज से लगभग सैंतालीस वर्ष पूर्व एक अदभुत तपस्वी का लखनऊ नगर में पदार्पण हुआ। विशाल देह, आजानु बाहु, चिर मुस्कान लिये ज्योतिर्मय शुभ आकृति! उस महान व्यक्तित्व ने नौ दिन के प्रवचन में { जो बाद में सनातन दर्शन नौ अध्याय अथ पृष्ठभूमि नामक, अमर ग्रंथ के रूप में प्रकाशित हुआ} जन मानस को ऐसा मोह लिया कि कोई भी उससे बिछुड़ने को तैयार न था।

परन्तु संन्यासी रुकने को तैयार न था। कारण? गृहस्थ और संन्यासी धर्म की अपनी मर्यादा है। गृहस्थों के बीच संन्यासी को अधिक समय नहीं रहना चाहिये। शेर और संन्यासी जंगल में ही शोभा देते है। उसका स्पष्ट मत था जो अटल था।

कुर्सी रोड पर अलीगंज हनुमान मन्दिर से लगभग चार किलोमीटर आगे "श्री सनातन आश्रम" की स्थापना हुई। संन्यासी रुक गया।लखनऊ वासियों के प्रेम के वशीभूत जैसा हो ।

आश्रम बना। आत्म ज्योतियों से वातावरण मुखरित हो उठा। भक्त मित्रों ने कहा, "स्वामी जी अब चेला बनाइये, अन्यथा आश्रम खर्चा कैसे चलेगा?"

"चेलों के सहारे यह संन्यासी जी लेगा परन्तु जिनके नाम का वस्त्र धारण किया है उनके सहारे कब जियेगा? सनातन स्वामी आगत को ईश्वर ही जानेगा! सेवा करेंगे तथा चरण रज से अधिक कामना नहीं होगी! जैसे नारायण रखेंगे, वैसे ही सबकी सेवा करते हुए तपेंगे! इच्छा जब नारायण से नहीं तो ससार से कैसी कामना?" संन्यासी का उत्तर था!

वर्षों उपरान्त! एक क्षण, एक शब्द भी तो नहीं बदला। पावन संन्यासी ने न तो कभी किसी से इच्छा की, न ही चेला आदि का विचार ही उभरने दिया।

"पुष्प और सन्त "

परहित में मुस्कराते हैं। स्वामित्व की संकीर्णता में--

कुण्ठित हो, मर जाते हैं। कृपया इन फूलों को न तोड़ें।
स्वामी सनातन श्री

आश्रम के द्वार पर आते ही पुष्प वाटिका में लगा उक्त पट आगन्तुक का मौन, किंतु अन्तर से मुखर स्वागत करता है।

लखनऊ नगर से उत्तरायण सनातन आश्रम पडता है। अलीगंज चुंगी से लगभग डेढ किलोमीटर आगे। चुंगी से आगे बढते ही शहर का शोर भरा वातावरण पीछे छूट जाता है। साथ ही आधुनिकता की उकता देने वाली नकली व्यावहारिकता। दूर-दूर तक फैले हरे-भरे खेत और बागीचे सड़क के दोनों ओर पंक्तिबद्ध खडे विशाल झुकते पेड़ों का अलौकिक दृश्य, संन्यासी से मिलने की अभिलाषा तीव्रतर होती जाती हैं। फिर आश्रम का सामीप्य और पुष्प, लताओं और पेडों के समूहों का मौन स्वागत। शान्त, नीरवता में मूक प्रार्थना-पट! पुष्प और.

बरामदे में कदम रखते ही कुछ और पट नेत्रों को आकृष्ट करते हैं। आश्रम की लक्ष्मण रेखाओं का भान कराता एक पट तो दूसरा ··

"आप जब प्रणाम करते हैं अथवा चरण रज लेते हैं तो आपकी श्रद्धा आस्था एवं अपने संकोच के कारण यह संन्यासी आपको रोक नहीं पाता है!

अन्यथा, आपके चरणों की धूल ही इस संन्यासी का चन्दन तिलक है।

अच्छा हो, आप मन ही मन प्रणाम करें तथा ऐसा कुछ न करें जो संकोच का कारण हों।"

गुरुता की गरुता का भार ढोये कौन!
जन-जन की चरण रज को।।
हम गाल तिलक जानते हैं।
स्वामी सनातन श्री

आगन्तुक स्तब्ध पट को देखता रह जाता है, एक संन्यासी इतना अकिंचन! यह आगन्तुक का प्रणाम नहीं, चरण रज चाहता है तभी दूसरा पट्ट---

"मन्दिर, मस्जिद, गिरजा, गुरुद्वारे,
मानव प्रेम के सबल सहारे।
सावधान! धर्मद्रोही हत्यारे।।
बना न दें कसाई बाड़े।
हर एक राह, नेक राह।।
स्वामी सनातन श्री

प्राणीमात्र में ईश्वर को देखने की बात तो सारे सम्प्रदाय और गुरू कर्णधार करते आये हैं परन्तु क्या किसी ने.....।

सद्ग्रन्थों में, अतीत कथाओं में, हमने पढ़ा एवं सुना था कि आश्रमों में पशु-पक्षी भी मनुष्यों की तरह बोलते हैं।श्री सनातन आश्रम में आज भी आपको ऐसा सुखद आश्चर्य होता है जहाँ कुत्ते बिल्लियां और जंगली पशु-पक्षी भी वाणी से वरद् होकर ईश्वर का नाम जप एवं ध्यान करें। जहाँ कुँआरी बछियां भी स्तन से दूध गिरावें। जो अविश्वसनीय है तथा कथाओं में ही मिलता है उसका प्रत्यक्ष दर्शन कराते आश्रम के पशु, भक्त को स्तब्ध कर देते हैं। अतीत की कथाओं पर अनायास विश्वास हो उठता है।अकिंचन, किसी से कोई इच्छा नहीं, फिर भी सारे भारत में मुफ्त बँटती किताबें नाना प्रादेशिक भाषाओं में, सब कुछ एक सपने सा लगता है फिर भी इतना सत्य और प्रत्यक्ष कि प्रमाण का प्रश्न ही नहीं।

अतीत की मर्यादाओं का निर्वाह भी कितना स्पष्ट एवं पाखण्ड से रहित। आश्रम में प्रवेश पाते ही आगन्तुक की निगाहें सूचना पट पर टिक जाती है।

'अनन्त काल से सूर्य और पृथ्वी असीम प्यार की डोर में बँधे एक दूसरे के लिए तपते, और फलते फूलते हैं, परन्तु एक दूसरे से मिलते नहीं हैं। मिलन दोनों का सर्वनाश ही तो है।

संन्यासी और गृहस्थ का प्रेम सूर्य और पृथ्वी की भांति ही है " संन्यासी तपे जिससे गृहस्थ, सदगृहस्थ बन वासना और अज्ञान जलाकर सुखपूर्वक फलें फूलें। पृथ्वी और सूर्य की भांति अपनी सीमाओं और लक्ष्मण रेखाओं का सम्मान करते हुए।

आप हमारी और अपनी मर्यादा एवं दूरी का सम्मान करते हुए हम सन्यासियों को सेवा का अवसर दें। संकोच का कारण न बनें।

धन्य है वे लोग जो इस आश्रम में आते हैं। धन्य है यह आश्रम जो सनातन मूल्यों को अनायास और सहज ढ़ग से जनमानस में स्थापित करता चल रहा है। धन्य है स्वामी सनातन श्री, उनका स्नेह और आशीर्वाद जो सर्व सुलभ है, साक्षात आश्रम में, उसके कण–कण में और उनकी वाणी में जो कैसेट्स और पुस्तकों में शाश्वत रूप से अक्षुण्ण रहेगा, सदा ही ।

।।नारायण हरि।।

श्री ब्रह्म मुख से

जीवन की अवधारणा को लेकर नाना मतभेद सदा ही रहे हैं। आदि वेदादिक की मान्यतानुसार जीवन धरती पर वृहस्पति ग्रह से धरा पर उतारा गया था। वृहस्पति ग्रह निरन्तर ग्रह की अवस्था से निकलकर सूर्य की अवस्था में वदल रहा था। यह प्रकृति का सर्वमान्य नियम है। ग्रह समय की सीमा को लांघकर धूम्रकेतु वन आकाश में मृत्यु को प्राप्त हों अथवा रूद्रवलय को धारण कर अनन्तायु सूर्य की अवस्था पायें। नियमानुसार वृहस्पति भी सूर्य की अवस्था की ओर तेजस को प्राप्त हो रहा था। मानव जीवन को अन्यत्र स्थानान्तरित करना महाराज सगर की अनिवार्यता वन गयी। इसकी चर्चा वेदों तथा महाभारत महाकाव्य में है। वहुत से अभियान असफल हुए। अन्ततः देवगुरू वृहस्पति के सद्प्रयास सफल हुए। महाराज दिलीप एवं उनकी महारानी के निशेचित भ्रूण को देव गाय माता सुरभि की वेटी नन्दिनी सुनयना के गर्भ में स्थापित कर तथा नन्दिनी सुनयना को शीतनिद्रा में स्तम्भित कर पृथ्वी पर लाया गया। नन्दिनी के गर्भ से धरती पर प्रथम मानव पुत्र का जन्म महाराज रघु के रूप में हुआ। इन्ही से रघुवंश का धरा पर अवतरण हुआ तथा वे धरा के प्रथम मानव कहाये। इसकी चर्चा रघुवंश महापुराण में भी है। ऋग्वेद में सर्वत्र है। दैत्याचार्य शुक्राचार्य ने शुक्र तथा शनि ग्रहों से असुर संस्कृतियों को भैंसों के द्वारा उपरान्त में धरा पर उतारा था। महिषासुर प्रथम असुर वालक के रूप में धरती जन्मा था।

वेदादिक ग्रन्थों का अवतरण भी उसी काल में देवगुरू वृहस्पति द्वारा हुआ था। काल के लम्वे अन्तरालों में इनका ज्ञान लुप्त होता रहा, वहुत कुछ नष्ट हुआ, भ्रमित हुआ, वदलता रहा। भगवान श्रीवेदव्यास के अथक

प्रयासों से उसे पुनः सुस्पष्ट किया गया। ब्रह्मसूत्र की रचना भी उनके सद्प्रयासों में एक सर्वोत्कृष्ट सम्पूर्ण ब्रह्म सृष्टि सदृश्य है। सनातन दर्शन के नौ अध्याय के चौथे अध्याय वेद चक्षु का अलग से प्रकाशन एवम् उसका अंग्रेजी में भाषांतर चिरंजीव अच्युत शंकर द्वारा भव्य तथा भावपूर्ण कवर डिजाइन के साथ प्रस्तुत करना अद्भुत आयोजना है। वेदादिक रहस्यों का सम्पूर्ण अनावरण ही इसका सर्वोपरि ध्येय है। इस ग्रंथ से सभी को ब्रह्म एवं परमब्रह्म के अन्तर को स्पष्ट जान लेना सुगम होगा। इसको अधिक स्पष्ट रुप से जानने के लिए पहले आपको महाविष्णु के सुदर्शन चक्र के दर्शन करने होंगे। उस चक्र के दर्शन के लिये ज्योतिष की आंख को जागना होगा। वेदस्य चक्षुः राहु! यह ग्रंथ आपको आपकी जिज्ञासा शान्त करने में अवश्य सहायक होगा। श्रीहरि आपके सद्प्रयास को अमरता प्रदान करें।

-स्वामी सनातन श्री

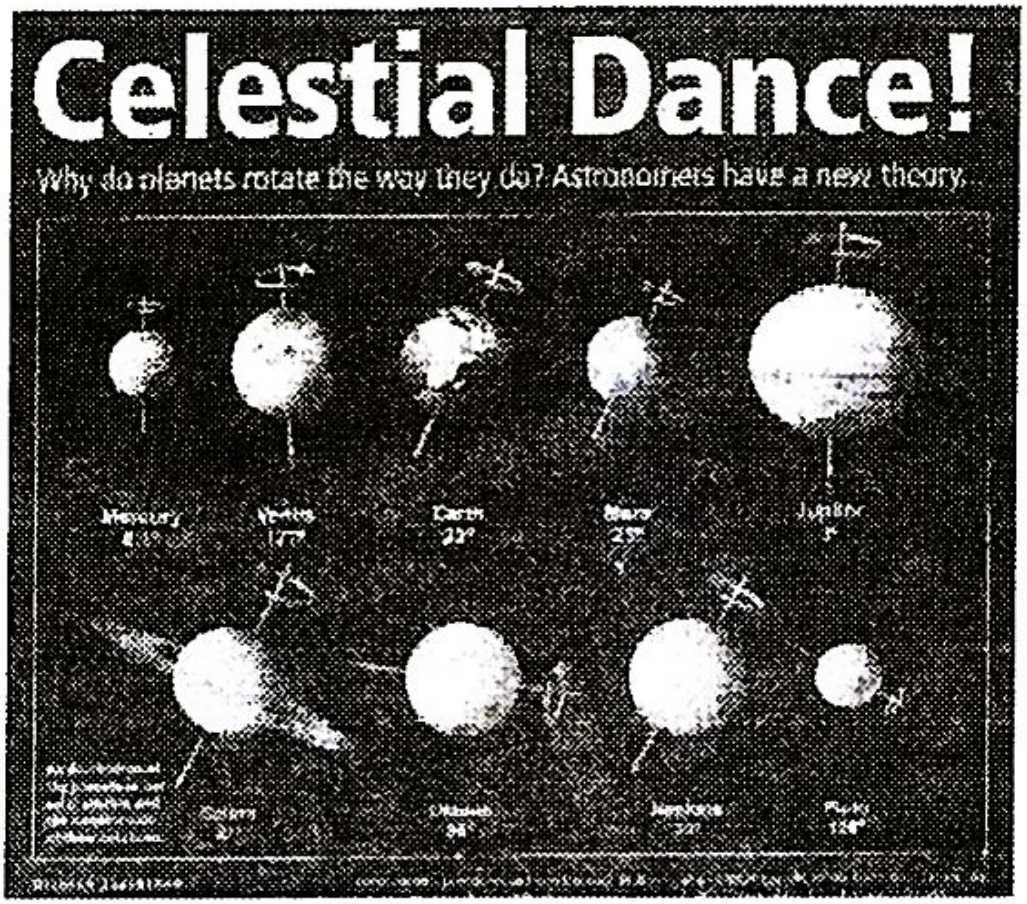

प्रवेश से पूर्व

धर्म और सम्प्रदायः-धर्म तथा ग्रंथों के ज्ञान को लेकर समाज में वहुत सा भ्रम व्याप्त है। धर्म तथा सम्प्रदाय में मूलभूत भेद होता है और हम अक्सर साम्प्रदायिक मान्यताओं व आचार-विचार को धर्म मान लेते हैं जो कि दुर्भाग्यपूर्ण है। धर्म जीवन उत्पत्ति सृष्टि से जुड़ा ज्ञान तथा विज्ञान है जव कि सम्प्रदाय किसी व्यक्ति विशेष अथवा व्यक्तियों के समूह द्वारा एक लंवे समय तक जिन विचारों व मान्यताओं को स्वीकार किया जाता है, वह एक सम्प्रदाय विशेष का रूप ले लेता है और वही उनका धर्म हो जाता है। सनातन धर्म शब्द का अर्थ है, "नित्य" "अजर" "अमर" । इस प्रकार सनातन शव्द सम्पूर्ण सचराचर से लिया गया है। किसी व्यक्ति के नामान्तर धर्म चलाने की कल्पना यहाँ नहीं की गयी है।

धर्म और सम्प्रदाय के भेद को स्पष्ट करने के लिए हम पवित्र माँ गंगा का उदाहरण लेते हैं। गंगा हिमालय से निकल कर सागर तक सतत् प्रवाहित होती है। गंगा का पवित्र निर्मल सदा वहता हुआ जल ही धर्म की मूल भावना को प्रदर्शित करता है। गंगा किसी से भेद नहीं करती है सभी जीव प्राणियों की प्यास वुझा कर उन्हें जीवन देती है। गंगा के ही दोनों तटों पर असंख्य मठ, मन्दिर स्थापित हैं जो विभिन्न सम्प्रदायों की भांति हैं। जो पूजा अर्चना तो गंगा (धर्म) की ही करते हैं परन्तु भेद-भाव की संकीर्णता से उपर उठ नहीं पाते हैं। गंगा सदा वहती रहती है और मठ (सम्प्रदाय) एक ही स्थान पर सीमित रहते हैं। यही धर्म और सम्प्रदाय का भेद हैं। अक्सर लोग मठ (सम्प्रदायों) को ही धर्म का मूल स्वरूप मान वैठते हैं जो कि नितान्त गलत है।

सनातन धर्म की मान्यताएँः- "एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति" सनातन धर्म की आदि कालीन अटूट मान्यता है। भारत के संत आदिकाल से वहुत ही निर्मल, इच्छारहित और परहित में जीवन को उत्सर्ग करने वाले रहे हैं। धर्म ने ईश्वर की कल्पना जीव मात्र के शरीर में की है। सबमें ईश्वर आत्मा होकर बसते हैं "एकोऽम बहुस्याम"। ईश्वर के अनगिनत स्वरूपों को नाना प्रकार की मूर्तियों और मन्दिरों के रूप में पूजने की आदिकालीन परम्परा रही है। मूर्तिपूजा पूर्णतया वेद सम्मत तथा

मानव मनोविज्ञान का एक उच्चतम शिखर है, क्योकि मानव मस्तिष्क विना किसी रूप या आकार की कल्पना विना कार्य नहीं करता है। सनातन धर्म की यह विलक्षणता रही है कि उसने मनुष्य को बुद्धि, विचारों की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की है, इसीलिए ईश्वर के निर्गुण तथा सगुण दोनों स्वरूपों की उपासना का विधान सनातन धर्म में आदिकाल से रहा है। नाना ग्रंथों की तरह नाना ऋषि, मनीषी जन, विचारक तथा संत समय के अंतरालों में प्रकट हुए और उन्होंने अपने मत व्यक्त किए। सनातन धर्म ने सबको धर्म पुरूष के रूप में स्वीकार किया, परन्तु उनके नाम पर धर्म चलाने की परम्परा को अस्वीकार कर दिया। यहाँ जितने भी ऋषि, मनीषीजन और संत हुए उन्होंने सनातन धर्म से हटकर किसी धर्म की स्थापना भी नहीं करनी चाही। वे सम्प्रदायों को बनाने के पक्ष में भी नहीं रहे हैं। किसी संत और मनीषीजन के गोलोकवास के लम्बे काल के उपरान्त ही दासता के अंतरालों में सम्प्रदायों को सब कुछ मानकर, सम्प्रदाय चलाने की धारणाओं ने जन्म पाया है। छुआ-छूत, भेदभाव का चलन भी कुछ सम्प्रदायों की ही देन है, धर्म का इससे कुछ भी संबंध नहीं है। सम्प्रदायों द्वारा पवित्र धर्मग्रंथों की गलत व मनचाही व्याख्याओं द्वारा ही समाज में छूआ-छूत आदि धर्म विरोधी मान्यताओं का चलन हुआ है। पूर्ण बौद्धिक परिपक्वता को सनातन धर्म ने सर्वोपरि माना है। आदिकाल से ही तर्कशास्त्र को धर्म के साथ जोड़कर मनुष्य को तर्क की कसौटियों पर संदेह निवारण का व्यापक अधिकार दिया गया है। सनातन धर्म ही एक ऐसा धर्म है जिसमें धर्म पर, मान्यताओं पर, यहाँ तक कि ईश्वर पर भी संदेह करने का अधिकार मनुष्य मात्र को दिया गया है। जो ईश्वर को नहीं मानते, ऐसे नास्तिक दर्शन को भी एक दर्शनशास्त्र के रूप में सनातन धर्म ने ग्रहण किया है।

ईश्वरः- ईश्वर शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा में ऐश्वर्य से होती है "जो प्राणिमात्र को ऐश्वर्य दे, स्वयं को भुलाकर, इच्छारहित और निष्काम होकर, उसे कहते हैं, ईश्वर। वेद आदि धर्म ग्रंथों ने ईश्वर को मनुष्य से अलग नहीं किया है आत्मा शब्द को ही ईश्वर के रूप में सम्पूर्ण सचराचर में प्रतिष्ठित किया गया है। ईश्वर अर्थात् आत्मा, परमेश्वर अर्थात् परमात्मा। यहाँ सभी अवस्थाओं में केवल परम को ही जोड़ा गया है, जो कि संज्ञा न होकर मात्र विशेषण है। इससे भी स्पष्ट है कि आत्मा और परमात्मा को अलग-अलग नाम न देकर केवल सूक्ष्म और व्यापक बनाकर दर्शाया गया है। घट-घट वासी आत्मा ने पेड़-पौधों के गर्भ से मिट्टी को अन्न और फलों में लौटाया तथा पेट भरने का सम्मान प्राणि मात्र को मिला, जोकि उत्पत्ति तथा जीवन के रहस्यों को नहीं जानते हैं। इसी प्रकार घट-घट वासी आत्मा ने ही आत्म-यज्ञों के द्वारा अन्न को बालक में तथा जीवधारियों को यथा संतति में प्रकट किया, जबकि माता-पिता कहलाने का सम्मान मानव तथा समस्त प्राणिमात्र को मिला।

धर्म ने ईश्वर की कल्पना मनुष्यों को इसलिए नहीं दी कि वे डर, भय अथवा लोभ के लिए ईश्वर की उपासना करें। ईश्वर की कल्पना इसलिए प्रदान की गयी है कि धरती का मानव भी ईश्वर तुल्य वने प्राणि मात्र के सुख के लिए अपने सुखों का परित्याग करे तथा धरती माता की पीड़ाओं को दूर कर धरती को स्वर्ग सा सुन्दर व सुखद वनाये। इस प्रकार सनातन धर्म में ईश्वर की कल्पना विदेशी धर्मों अथवा सम्प्रदायों से विल्कुल अलग है।

धर्मग्रंथः-सनातन धर्म की मान्यता है कि सम्पूर्ण प्रकृति, जीवन्त सचराचर ही परमेश्वर द्वारा लिखा जा रहा निरन्तर धर्मग्रंथ है तथा जीव मात्र एवं जीवन्त पेड़-पौधे, सचराचर ही परमेश्वर द्वारा लिखे जा रहे धर्मग्रंथ के अक्षर हैं, हम सव मनुष्य भी इसी धर्मग्रंथ के एक जीवन्त अक्षर हैं, जिसे परमेश्वर आत्मा होकर स्वयं लिखते हैं। **"पश्य देवस्य काव्यं, न ममार न जीर्यते"**। देखो ईश्वर का काव्य अर्थात् रचना जो न कभी मरती है तथा न ही जीर्णता को प्राप्त होती है। यही मूल धर्मग्रंथ है। कोई भी ईश्वरीय रचना जड़, मृत कागज अथवा भोजपत्रों या पुस्तकों में नहीं होती है। वेदों ने स्वयं माना है कि वे भी ईश्वरीय रचना प्रकृति के ही भाष्य ग्रंथ हैं, मूल धर्मग्रंथ नहीं हैं। इसीलिये सनातन धर्म में प्रकृति को ही मूलधर्म ग्रंथ माना है तथा प्रकृति, ब्रह्माण्ड के नियमन को ही धर्म की मान्यताओं तथा रीति-रिवाज के रूप में ग्रहण किया गया है, किसी व्यक्ति विशेष अथवा सम्प्रदायों के अपने चलन को धर्म के नियम नहीं वनाएं गए हैं।

सम्पूर्ण आध्यात्मिक ग्रंथों का मूल उद्देश्य मनुष्य की मानसिकता को पूर्ण परिपक्वता प्रदान कर ऋषि के स्तर तक लाने में है, जिससे वह मूल धर्मग्रंथ अर्थात् प्रकृति को स्वयं आत्मस्थ होकर ग्रहण कर सके। इसीलिए सनातन धर्म में प्रकृति को ही मूलग्रंथ माना गया है तथा धर्म को तर्क शास्त्र की कसौटियों से वरद किया गया है। अन्य धर्मों में तर्कहीन, संदेह रहित पशुवत आचरण को धर्म की राह माना गया है।

मन्दिर और यज्ञशालाः- मन्दिर तथा यज्ञशाला के रूप में मनुष्य को ही प्रतीक के रूप में प्रदर्शित किया गया है। मन्दिर और यज्ञशाला दोनों ही मानव के प्रतीक स्वरूप हैं। वेद ने मन्दिर को एक समाधिस्थ योगी के रूप में दर्शाया है। जैसेः पाल्थी के जैसा मन्दिर का चवूतरा, धड़ के जैसा गोल कमरा, सिर के जैसा गुम्वद तथा जटाओं के जूड़े जैसा कलश, आत्मा जैसी प्राण प्रतिष्ठित मूर्ति तथा जीव के रूप में निमित्त सेवक पुजारी। श्रुति ग्रंथों वेद, ब्रह्मसूत्र आदि में इसी कल्पना को सर्वत्र ग्रहण किया गया है। यज्ञशाला के रूप में भी तथा यज्ञ के रूप में भी मनुष्य के स्वरूप को दर्शाया गया है। यथाः- आत्मा यज्ञ का अधिष्ठित देव आचार्य है। प्राणवायु उपवृत्विज अर्थात उपाचार्य है। आत्म-ज्वाला, ब्रह्माग्नि को इस आत्म-यज्ञ की ज्वाला के रूप में दर्शाया गया है। शरीर को सामिग्री के रूप में ग्रहण किया गया है। जीव

ही यजमान है। वेद में प्रत्यक्ष और परोक्ष दो यज्ञों की समानान्तर कल्पना की गयी है। वाह्य यज्ञ तथा आन्तरिक यज्ञ। आन्तरिक यज्ञ में आत्मा-आचार्य, प्राण-उपाचार्य, आत्म-ज्वाला यज्ञ की अग्नि, तन सामिग्री एवं समिधा तथा जीव यजमान है। वाह्य यज्ञ में यथा आचार्य, उपाचार्य, समिधा तथा पवित्र भोजन को सांकल्य के रूप में ग्रहण किया गया है। मंत्रोचार के द्वारा पवित्र अग्नि के रूप में प्रकट करने की परम्परा है तथा जीव यजमान है। इस प्रकार भीतर और वाहर दोनों यज्ञों में जीव को यजमान के रूप में ग्रहण किया गया है। यजमान उभय है। वाहर के यज्ञ में सांकल्य के साथ संकल्प पूर्वक उसे वाह्य जगत के असत्य अज्ञान तथा अतृप्तियों को भस्म करना है, तभी वह पूरी तरह से अंतर्मुखी होकर स्वंय को उन्हीं ब्रह्म-ज्वालाओं में अर्थात् आत्मा रूपी अग्नियों में यज्ञ करते हुए ब्रह्म ज्वाला के द्वारा नूतन जन्म को धारण करे। दूसरे जन्म को प्राप्त होता हुआ द्विज कहलाये। इसी कल्पना को गुरूकुल में यज्ञोपवीत के साथ आज भी ग्रहण किया जाता है। सनातन धर्म की यह अद्भुत विलक्षण कल्पना है जिसकी चर्चा विश्व के किसी भी धर्म अथवा सम्प्रदायों के ग्रंथों में नहीं है।

राष्ट्र का नामः- वैदिक ग्रंथों में देश का नाम भरत-खण्ड के रूप में आया है। **"जम्बूद्वीपे भरतखण्डे"** यही हमारा जातिसंज्ञक परिचय है। हमारी धार्मिक, वैचारिक, समसामाजिक एवं परिपक्व मान्यता है। 'भरत'शव्द का प्रयोग 'भरतार' अर्थात् भरण पोपण करने वाले परमेश्वर के हित में लिया जाता है। दूसरे महान व्यक्तित्वों को सम्मानित करने के लिए भी इन शव्दों का प्रयोग होता है। चूँकि हमारा प्रभु घट-घट वासी है, सचराचर में व्याप्त है, इसलिए हमारा मातृस्थान भरतखण्ड कहलाता है। "जम्वूद्वीप" सम्पूर्ण धरती को कहते हैं। जव जीवन को धरती पर उतारने का प्रयास शुरू हुआ तो धरती को जम्वूद्वीप का नाम दिया गया क्योंकि सुदूर अंतरिक्ष से देखने पर सम्पूर्ण धरती एक जामुन के फल की भांति नीली आभा से युक्त दिखाई देती है इसीलिए इसे जम्वूद्वीप कहते है। जम्वूद्वीप का भरतखण्ड अर्थात परमेश्वर का घर। हमारी मान्यता है कि भरत अर्थात परमेश्वर ही हमारा पिता है इसलिए भरत के पुत्र होने के कारण हम सव 'भारत' हैं। भरतस्य अपत्यम् भारतम्। हम महान भारत संस्कृति है। 'हिन्दु' 'इण्डियन' आदि शव्द विदेशी भापाओं के है। दुर्भाग्यवश जव हमारा देश विदेशी दासता में वंध गया तो विदेशियों द्वारा मूल निवासियों को अपमान के रूप में इन शव्दों से सम्वोधित किया जाता था। यह दोनों शव्द (हिन्दु तथा इण्डियन) अपमान सूचक अपशव्द हैं। यह हमारी संस्कृति का दुर्भाग्य है कि आज हमें अपनी पहचान के लिये विदेशियों द्वारा दी गई अपमान जनक शव्दों का सहारा लेना पड़ रहा है। जव नागरिक के मन में रहेगा कि वह भारत है, ईश्वर का पुत्र है तो उसमें अपने होने का गर्व होगा तथा

दी गई अपमान जनक शव्दों का सहारा लेना पड़ रहा है। जव नागरिक के मन में रहेगा कि वह भारत है, ईश्वर का पुत्र है तो उसमें अपने होने का गर्व होगा तथा साथ ही अपनी कमजोरियों पर लज्जा का भाव, उसके गहरे मानस में उसे उद्वेलित करता रहेगा कि वह अपने पिता परमेश्वर की भांति अच्छा और सद्गुणी क्यों नहीं है। ऐसी सुन्दर पहचान को खोकर विदेशी जूठन के रूप में मिली गालियों से नयी पहचान खोजना, क्या उचित है ?

पुनर्जन्म तथा आवागमनः- (जीवन एक यात्रा है) आत्मा को अमर मानते हुए उसके पुनः-पुनः योग माया से प्रकट होने की वात सभी श्रुतियों में तथा श्रीमदभगवदगीता में आयी है। जीव के पुनर्जन्म की वात भी व्यापक रूप से आदि-कालीन ग्रंथों में मिलती हैं। प्रकृति को यदि मूल धर्म ग्रंथ के रूप में स्वीकार किया जाये तो पुनर्जन्म की कल्पना स्वयं सिद्ध हो जाती है। सम्पूर्ण भौतिक दृश्य, प्रकृति, वृक्ष वनस्पति जीव सचराचर सभी मृत्यु के उपरान्त पुनः नये रूप में निरन्तर जीवन के आवागमन के चक्र से लौट रहे हैं। यदि पुनर्जन्म नहीं होता तो प्रकृति का स्वरूप कुछ और ही हो जायेगा।

सम्पूर्ण सचराचर प्रकृति एक यात्री के समान है। जीवन एक यात्रा है तथा हम सव यात्री है। गति ही जीवन है तथा सम्पूर्ण व्रह्माण्ड, प्रकृति इसी नियम के अनुकूल आचरण करती है। जव हम सव इसी व्रह्माण्ड के अंग है तो हम सव इसी सत्य से जुड़े हैं। ग्रहो एवं नक्षत्रों की भांति ही शरीर के नाना अवयव रक्त के कण, शिराये, कोश सभी निरन्तर परिक्रमाओं को प्राप्त है। परिक्रमा ही जीवन का सूत्र है। पृथ्वी के साथ हम भी सूर्यदेव की परिक्रमा कर रहे हैं। सभी ग्रह, ग्रह नक्षत्र सम्पूर्ण व्रह्माण्ड परिक्रमाओं को प्राप्त है। यही जीवन परिक्रमा हमारे शरीर में निरन्तर गतिमान रहती है। जीवन का प्रत्येक क्षण परिक्रमा से ही हमें प्राप्त होता है।

वेद चक्षु

भक्तगण!

आज महात्माओं की भक्ति और श्रद्धा से मोहित हो, कोटि-कोटि अभिनन्दन करता है, आपका भक्त! ज्ञान यदि भक्ति एवं श्रद्धा से रहित है तो मात्र भटकाव है! ढोंगे है!! पाखण्ड है!! ज्ञान से महान है श्रद्धा एवं भक्ति !! आप महान है! मेरे द्वारा दिये गये सनातन प्रवचन को आप प्रश्नरहित, शंकारहित हो भक्ति एवं श्रद्धा से सुन रहे हैं। मेरे ज्ञान से आपकी श्रद्धा भक्ति अति महान है!! श्री हरि मुझ पापी को भी आप जैसा भक्त वना दें- ऐसा आशीर्वाद दीजिये मुझको!

आज आप महाप्रभुओं को सुनाऊंगा कि किस प्रकार यज्ञ के द्वारा नाना ग्रह, नक्षत्र आदि की सृष्टि होती है, किस प्रकार यह पृथ्वी अस्तित्व में आई तथा किस प्रकार यहां जीवन का स्थानान्तरण हुआ; किस प्रकार ग्रह महाप्रलय को प्राप्त होते हैं; तथा किस प्रकार ग्रह महाप्रलय को न प्राप्त हो रुद्रवलय धारण कर, नित्य सनातन स्वरूप को प्राप्त हो जाते हैं।

पूर्व इसके कि, मैं आपको ग्रहों की सृष्टि का सनातन मत सुनाऊं; कुछ उस विषय में भी बताता चलूं कि आधुनिक पाश्चात्य वैज्ञानिक भी कैसे दिखाते है, सृष्टि इस ग्रह की।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार सूर्य एक आग का जला हुआ गोला है। इसमें निरन्तर विस्फोट होते रहते हैं। इसी प्रकार एकक बार सूर्य में अति भारी विस्फोट [big bang] हुआ। विस्फोट से सूर्य का एक हिस्सा टूटकर अलग हो गया। यह हिस्सा जो स्वयं में जलता हुआ गोला था पुनः विस्फोट के कारण दो भागों में विभक्त हो गया। एक हिस्सा पृथ्वी बना और दूसरा चन्द्रमा। दोनों धीरे-धीरे ठन्डे पड़ने लगे। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करने लगी और चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करने लगा। जैसे मोम पर पपड़ी सा ठण्ड से जमने लगती है, वैसे ही इस पृथ्वी पर भी पपड़ी जमने गी। निचले हिस्सों में भाप ठन्डी होकर पानी बनी। पानी से सागर लहराने लगे।

सागर में अचानक उत्पन्न हो गये, दो प्रकार के एक कोशीय जीव, एमीबा और बैक्टीरिया। यह जीव धरती पर चढ़ाई कर दिये। धीरे-धीरे यह एक कोशीय से दो और नाना कोशीय जीवों में परिवर्तित होते चले गये। वगैरह! वगैरह!!

बन्धुओं! यह कहानी की, जो सुनाते हैं आपको वैज्ञानिक लोग! एकदम तोसिर-पैर की तेबुनियाद है। सनातन जब घेरता है तो बगलें झांकने लगते हैं।

पुछा इनसे, कि महाराज! यदि पृथ्वी इसी प्रकार अस्तित्व में आई है तो बाकी ग्रहों की सृष्टि कैसे हुई? उत्तर नदारद!

"पूछा– यदि मान लें कि पृथ्वी सूर्य से अलग हुई तो बताओ सूर्य क्या है"? कहने लगे "आग का जलता हुआ गोला, ढटामिक रियेक्टर है। पृथ्वी है। पृथ्वी के किसी भी रियेक्टर से कई करोड़ गुना अधिक गर्मी वहां हैं।" ठीक!! इतनी गर्मी में ठोस अथवा तरल तो रही ही नहीं सकता! इतनी अधिक गर्मी में तो पदार्थ का विघटन [decay] सूक्ष्म अणुओं [atoms] में स्वतः हो जावेगा। वहां तो पदार्थ [element] भी नहीं बना रह सकता।" पूछा- आपके भक्त सनातन ने।

ठीक! है!! हम आपसे पूरी तरह सहमत है। "Matter shall always split into atoms in such a heat. These atoms may further become radio&active and cosmic due to temperature and Blast".

"तब तो मित्रो! सूर्य से धमाके [Blast] के साथ जो अलग हुआ होगा वह radio-active atoms का समूह [mass] रहा होगा।"

"निरसन्देह!! बिल्कुल ठीक!" बोले वे!

वे अणु [atoms] जब धमाके के साथ क्षीरसागर [space] में आये तो माया ने होने से, उनकी गति का ह्रास ही नहीं हो सकता। माया [gravity] से ही प्रतिघर्षण [friction] होता है जिससे शक्ति का परावर्तन होने से गति मन्द होती है।

"बिल्कुल ठीक!!" माना उन्होंने।

"तो महाराज! यदि सूर्य से कुछ अलग हुआ तो वह समूह [mass] था radio atom का, क्षीरसागर [space] में उनकी गति रुक ही नही सकती थी। तो बताओ कि वह समूह पृथ्वी कैसे बन गया? स्पष्ट है कि radio-

active atom एक दूसरे से लड़कर करोड़ों प्रकाशवर्ष दूर, नाना ग्रहों पर गये होंगे; तथा उन ग्रहों की माया से उनकी गति परावर्तित हुई होगी। तब क्या प्रत्येक अणु ने प्रत्येक अणु को टेलीफोन करके पूछा होगा कि, अरे भाई तुम कितने करोड़ वर्ष दूर निकल गये। यदि नहीं, अपने को क्षीरसागर में अमुक स्थान पर लौटकर जुड़ना था, पृथ्वी बनना था।"

"अरे भाई! यदि यह आपका विज्ञान है तो कोरी गप्प किसे होगे? यदि यह आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धि है तो किस्सा तोता-मैना तो महानतम उपलब्धि हो जावेगी।" बन्धुओं! आपके भक्त के प्रश्नों का उत्तर देने में, समर्थ नहीं, आज विश्व का सारा वैज्ञानिक समाज। उनका विज्ञान उन्हें ही शर्मिन्दा कर रहा है।

सुनो! अब क्या कहते हैं सनातन वेद एवं गीता। हिरण्यगर्भ में, क्षीरसागर में यज्ञ के द्वारा ग्रहों की सृष्टि होती है। जय हो! जय हो सनातन तुम्हारी!! करोड़ों; करोड़ों; अनगिनत वर्षों की मान्यता कट न सकी। और कटकर रह गया वैज्ञानिक आज का। स्तब्ध है! आवाक है!! जिस कहानी पर नाना पारितोषिक बंटे हैं, वही कहानी मात्र बकवास बन रह गयी है।

ज्योति जली क्यों? लपट उठी क्यों? क्योंकि सूक्ष्म ब्रह्म [atoms] जब छिटक कर अलग हो गये, पदार्थ [matter] से, तो उनके चारों ओर का क्षीरसागर नष्ट हो गया। पदार्थ में रहने से, क्षीरसागर [space] था तो माया [gravity] प्रभावहीन था। परन्तु क्षीरसागर के हटते ही सूक्ष्म-ब्रह्म को माया घेरने लगी। क्या करे सूक्ष्म-ब्रह्म? परन्तु क्षीरसागर के हटते ही सूक्ष्म ब्रह्म को

माया घेरने लगी। क्या करे सूक्ष्म-ब्रह्म? ब्रह्म अमर है ! परन्तु माया में तो उसका विघटन [decay due to gravity] होगा। किस प्रकार अपने अमरत्मव को बनाये रखे। माया के पैंनेवाणों को निरस्त्र करने के लिए ब्रह्म कुपित [radio active] हो उठा और उसका स्वरुप विराट होने लगा। [atoms expands; atom does not break] उसकी नाना [electrons] प्रकट होने लगीं और तेजस्वी स्वरुप धारण कर मायाओं को निरस्त्र करता हुआ, सुदर्शन चक्र की नाई घूमता हुआ, वह ऊपर को उठने लगा। इस प्रकार मायाओं को निरस्त कर क्षीरसागर [space] में आया तो पुनः शांत हो उसी सूक्ष्म विन्दु स्वरुप में आ गया। ऐसे ही क्षीरसागर [space] में आया तो पुनः शांत हो उसी सूक्ष्म विन्दु स्वरुप में आ गया। ऐसी ही असंख्यों बिन्दु निरन्तर क्षीरसागर में जुड़ते रहते हैं। नन्हीं-नन्हीं गोलियों का ऐसे ही असंख्यों विन्दु निरन्तर क्षीरसागर में जुड़ते रहते हैं। नन्हीं नन्हीं गोलियों का स्वरुप धारण कर लेते हैं। ये नन्हीं गोलयाँ अनन्त क्षीरसागर में दौड़ती रहती हैं, तथा निरन्तर मायाओं को परस्त कर, क्षीरसागर में प्रवेश करते सूक्ष्म ब्रह्म को स्वयं में समेटती रहती हैं। इस प्रकार ये गालियाँ आकार का विस्तार करती हैं और उल्काओं का स्वरुप धारण कर लेती है। ये उल्कायें यदि किसी ग्रह की माया में प्रविष्ट हो जाती हैं तो इनका उल्कापात हो जाता है।

परन्तु यदि ये उल्कायें किसी भी ग्रह की माया में प्रविष्ट नहीं होतीं– तो क्षीरसागर में धीरे धीरे सृजन के द्वारा ग्रह के स्वरुप को प्राप्त हो जाती हैं। इस प्रकार क्षीरसागर में, हिरण्यगर्भ में यज्ञ के द्वारा विन्दु ग्रह

केस्वरुप को प्राप्त होता है। जिस प्रकार माता के गर्भ के क्षीरसागर में बिन्दु बालक के स्वरुप को प्राप्त होता है। बिन्दु से बालक बना है, गर्भ में क्षीरसागर के, यज्ञ के द्वारा! उसी प्रकार बिन्दु से ग्रह बना है, हिरण्य गर्भ के क्षीरसागर में, यज्ञ के द्वारा!

अरे! प्रकृति ही तो सनातन है। उसका प्रत्येक नियम ही तो सनातन है। जैसे बना बालक, तैसे बना ग्रह। बोलो इस महान नोबल इनामी वैज्ञानिकों को, कि काट दिखाये मत सनातन के!

जिस प्रकार किसी ग्रह की माया का गर्भ पर प्रभाव आने से , गर्भपात हो जाता है, ठीक उसी प्रकार माया के प्रभाव में आने से, उल्कापात हो जाता है। अरे मेरे कोटि-कोटि सनातनो! पहचानो कि क्या धर्म है तुम्हारा? विज्ञान का चरम है जो, सनातन धर्म तुम्हारा है। आत्मा का धर्म, प्रकृति का धर्म ही, मात्र धर्म है। सम्प्रदाय धर्म हो सकते नहीं हैं। धर्म के नाटक कहो उनको!

ब्रह्मा! विष्णु!! महेश!!! धारक-सृजक-संहारक!!

ब्रह्मा के ब्रह्म [सूक्ष्म-विन्दु] जब विष्णु द्वारा जुड़ने लगे क्षीरसागर में, तो होने लगी सृष्टि नूतन ग्रहो की! बिन्दु उल्काओं में एवं उलकायें ग्रहों के स्वरुप को धारण कर परिक्रमाओं को प्राप्त होने लगीं। इन ग्रहों पर निरन्तर उल्कापात होने से इनका भार बढ़ता रहता है तथा ये ग्रह जिस ग्रह की परिक्रमा को प्राप्त हैं, उससे अपनी बढ़ती हुई माया का संतुलन करते हुए निरन्तर पीछे हटते रहते हैं। माया का भार निरन्तर बढ़ता जाता है। इसका जीवन्त उदाहरण आपकी पृथ्वी ही है। इस पर माया का प्रभाव निरन्तर बढ़ रहा है। इसे विश्व के

सम्पूर्ण वैज्ञानिक मानते हैं इस। प्रकार शनैः शनैः ग्रह पर माया [gravity] का प्रभाव निरन्तर [ग्रह के स्वरुप का उल्कापात द्वारा बढ़ने के कारण] बढ़ता रहता है और माया के विस्तार को प्राप्त होता, ग्रह पीछे हटता रहता है। उसकी परिक्रमा का विस्तार होता जाता है। एक समय वह भी आता है जबकि ग्रह अत्यधिक माया के विस्तार को प्राप्त होने के कारण परिवार [सूर्य परिवार, ववउचसमग] के छोर पर आ जाता है। तभी एक तीसरा पुच्छल तारा पास से गुजरा अथवा अचानक कोई विशाल उल्कापात हुआ। माया का एक अचानक झटका-टूट चला ग्रह परिवार से बाहर, सारे ग्रहों से अपनी माया का अनुपात एवं नियन्त्रण खोकर भागने लगा, अनन्त क्षीरसागर में।

Balance of gravities with different planets of complex was lost. Total gravity of planet fell on the planet. Total gravity resulted in total decay of that planet. Thus entire planet disintegrated into radio active atoms due to absolute gravity. This is MAHA-PRALAYA.

इस प्रकार ग्रह जब माया का सन्तुलन खो बैठा, तो सारी मया का प्रभाव उस गह पर आने से सारा ग्रह विघटन को प्राप्त होकर सूक्ष्म ब्रह्म-बिन्दुओं में परिवर्तित हो गया। यह ब्रह्म बिन्दु अति कुपित हो, माया से संघर्ष कर पुनः क्षीरसागर में आकर शान्त होने लगे। पुनः नन्हीं नन्हीं गोलियों में जुड़ने लगे। ग्रह का विन्दु बिन्दु में परिवर्तित हो जाना ही महाप्रलय है।

धुम्रकेतु, पुच्छल तारे वस्तुतः महाप्रलय को जाते ग्रह हैं, जो महाप्रलय को जाते ग्रह हैं, जो अपने परिवार

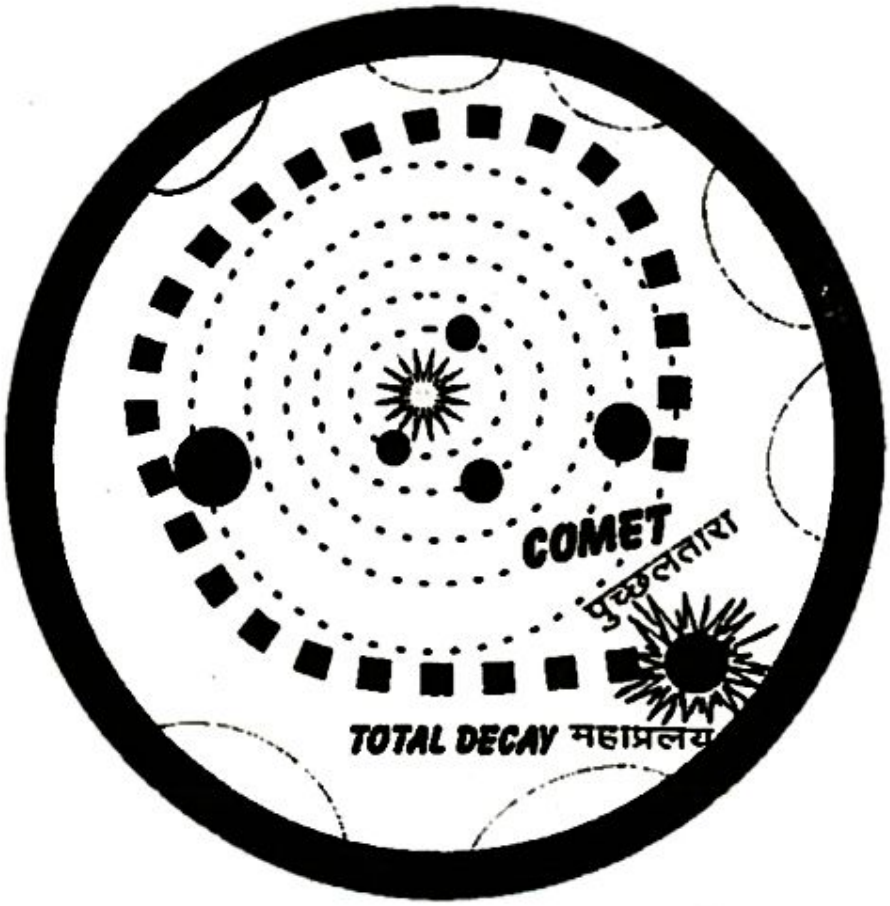

(बवउचसमग) से टूटकर अब बिन्दु बिन्दु में बदल रहे हैं तेज के! उनके पीछे से आप तेज की पूंछ देखते हैं; वह विसर्जित होता ग्रह का ब्रह्म ही है।

पाश्चात्य विद्वानों का भ्रम है कि यह निरन्तर परिक्रमा करते रहते हैं। यह सरासर निमूल है। यदि पुच्छल तारे परिक्रमा पथ पर होते, तो उनके साथ ग्रहों का समूह रहना चाहिये तथा माया नियन्त्रण से निश्चित मार्ग पर उन्हें चलना चाहिये। ऐसा कुछ नहीं है। दशानन मार्ग पर महाप्रलय को प्राप्त होता ग्रह ही पुच्छल तारा है।

प्राचीन काल से ही नाविक तथा लम्बी यात्रा पर जाने वाले यात्री इसे अशुभ मानते आये हैं। चूंकि यह तारा स्वयं मरण पथ पर जा रहा है, इसलिए यह यात्रा

भी मरण यात्रा होगी। पाश्चात्य विज्ञान को अपना मत पुनर्निधारित करना चाहिये।

इस प्रकार इस अनन्त क्षीरसागर में भ्रमण करते असंख्य ब्रह्माण्डों में कहीं तो कोई ग्रह अस्तित्व को प्राप्त हो रहा है तथा कहीं कोई बूढ़ा ग्रह विसर्जन को प्राप्त हो रहा है महाप्रलय द्वारा! यह ठीक उसी प्रकार है, जिस प्रकार नन्हा शिशु तो जन्म को प्राप्त हो रहा है, बूढा व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हो चिता पर बिन्दु-बिन्दु में परिवर्तित होने जा रहा है!

प्रकृति की परिक्रमाओं में बँधा सनातन एक क्षण भी प्रकृति से अलग हो सकता नहीं है। उसके ईश्वरीय आदेश उसे प्रकृति से ही प्राप्त होते हैं, जिसका वह स्वयं अंग है तथा प्रकृति सनातन के धर्म, सनातन का अनुयायी है।

जिस प्रकार पशुपताग्नि { cosmic fire } के द्वारा सम्पूर्ण ग्रह विन्दुओं में विभक्त होता है; उसी प्रकार इस शरीर की भी गति होनी चाहिये। इसलिये सनातन ने अग्नि द्वारा शरीर को भी विन्दु विन्दु में परिवर्तित करने का आदेश दिया। दूसरी ओर उसने इस तथ्य को भी ध्यान रखा कि नवजात शिशु अथवा छोटा बालक तो छोटी बड़ी उल्काओं के समान है। इसलिये उसने छोटे बालक एवं शिशु को अग्नि द्वारा विसर्जन से वर्जित कर उल्कापात की भाँति जलप्रवाह कर देने अथवा दफन कर देने का आदेश दिया। प्रकृति का नियम कहीं भी भंग न होने पावे।

सनातन ने इतना ही नहीं वरन, प्रत्येक स्थिति का पूरा ध्यान रखा। उसने देखा कि ग्रह सदा परिवार

से वाहर जाकर ही विसर्जन को प्राप्त होता है। सनातन ने अने अनुयायियें को भी आदेश दिया, कि चौथी अवस्था में भी गृह त्याग कर, वानप्रस्थ हो एवं परिवार से दूर जाकर शरीर का त्याग करें। प्रकृति के अंग, प्रकृति के नियम के विपरीत जा सकते नहीं हैं।

किस मूर्ख ढोंगी ने कहा था कि मनुष्य आदि काल में भय से अग्नि आदि देवताओं को पूजने लगा था। अरे नयनसुख महाराज! भीष्ण भाष्ण त्याग कर कुछ मनन करो! कुछ आत्मचिन्तन करो! दीवारें टटोलकर, पैर रगड़कर, चलना छोड़ो!

विज्ञान का चरम, आज है सनातन है! ज्ञान का चरम, आज है सनातन! मात्र सनातन! मात्र सनातन!! तू भी सनातन! मैं भी सनातन!! सर्वत्र सनातन! सर्वत्र सनातन!! एको सनातन द्वितीयो नास्ति!

भक्तगण! प्रभु सनातन का ज्ञान तो अथाह सागर है। पृष्ठभूमि सुना रहा हूँ आपको! अधिक विस्तार में इस समय जा सकता नहीं हूँ, वरना कथा पूरी हो सकेगी नहीं! परिचय रह जावेगा अधूरा! सुनेंगे, सुनायेंगे, फिर कभी सविस्तार, वारम्वार!

जाना मेरे नाना प्रभुओं ने, कि किस प्रकार यज्ञ के द्वारा आत्मा कृष्ण, प्रभु, ॐ नाना सृष्टि करते हैं! यज्ञ द्वारा वनस्पति की सृष्टि का रहस्य वताया; यज्ञ के द्वारा सम्पूर्ण चराचर की सृष्टि का रहस्य वताया; यज्ञ के द्वारा सशरीर तेज में परिवर्तित हो यज्ञेश्वर पद की प्राप्ति का मार्ग दिखाया। संक्षेप में चल रहा हूँ। विषय अति भारी है। अभी तो आप प्रभुओं को सुनाऊंगा कथा क्षीरसागर मन्थन की। चाचा डारविन वोले

एमीबा-बैक्टीरिया पितर हमारे।

डारविन साहब के अनुसार यह एक कोशीय जीव सागर में, 'मूड' में आकर पैदा होने लगे। 'मूड' बिगड़ा तो धरती पर धावा बोल दिया। एक कोशीय से द्विकोशीय हुए फिर बहुकोशीय जीवों की सृष्टि करने लगे एक वनस्पति बना, दूसरा जीवधारी बन बैठा। फिर यह महादानव (मैमल) बन बैठे फिर घटने लगे और वर्तमान स्वरूप में आ गये। बन्दर से आदमी बन गया।

डारविन साहब की अति सुन्दर कहानी अब उतार कर फेंक दी गई है। उनकी कहानी इसी शर्त पर स्वीकार की गई थी कि एक कोशीय जीव कालान्तर में द्विकोशीय में परिवर्तित हो सका तो पुनः अनुसन्धान किया जावेगा। एक कोशीय जीव का तब से अब तक निरन्तर परीक्षण होता रहा। परन्तु डारविन साहब की धारणा एकदम गलत सिद्ध हुई। दूसरी बात डारविन साहब की जो नहीं समझ मे आती है, वह यह है कि जब पृथ्वी पर माया (gravity) कम थी तब तो एमीबा-बैक्टीरिया अति विशालकाय जीवधारियों में परिवर्तित हो गए, जबकि बढ़ती माया के साथ उन्हें अधिक बढ़ना चाहिये था, वह लौट कर छोटा क्यों होने लगा? क्यासत्य का विलोम भी सत्य सावित किया जावेगा? (higher gravity, hgiher decay, higher shape and size; lower gravity lower decay, lower shape and size.) इस प्रकार उल्टी गंगा बहाने से काम चलेगा नहीं। फिर यदि मनुष्य बन्दर की ही सन्तान है तो इन बन्दरों में यह क्रम लुप्त क्यों हो गया? जब माया (gravity) कम थी तब एमीबा और बैक्टीरिया मैमल बन गये और अब जबकि माया

[gravity] अति विस्तार को प्राप्त हो चुकी है तो क्यों नहीं वनते ये गाय, बकरी, मुर्गे, मुर्गियाँ। हड़ताल क्यों भाई? प्रतिकूल परिस्थितियों में कमाल किये और अनुकूल परिस्थिति में बायकाट! ऐसे सैकड़ों प्रश्न हैं जिनका उत्तर डारविन साहव नहीं दे पाते हैं। थ्योरी फेल हो गयी! अब पुनः विश्व के सामने एक ही थ्योरी सनातन की!

सनातन के अनुसार जीवन का इस लोक पर स्थानान्तरण किया गया था, न कि जीवन उग आया अचानक! तव प्रश्न उठेगा कि इनकी सृष्टि कैसे हुई कैसे? उसका उत्तर है यज्ञ के द्वारा, न कि अमीबा-वैक्टीरिया से! यज्ञ के द्वारा क्षीरसागर में ही सृष्टि सम्भव है। माया में ब्रह्म का पुनर्सृजन सम्भव ही नहीं है। [Integration of atoms is possible only only in space (gravity free zone), not in gravity. We can disintegrate the matter into atoms but cannot integrate the atoms in to new matters.]

माया में तो प्रलय ही सम्भव है पुनर्सृजन तो क्षीरसागर में ही हो सकता हैं जव तक आत्माकुण्ड द्वारा वृक्ष का क्षीरसागर रक्षित है भस्मी वनस्पति में पुनर्सृजन को प्राप्त हो सकती है। परन्तु भस्मी को स्वतः ही वनस्पति अथवा रक्त में वदलना असम्भव है माया में! इसीलिये वेद माया की निरन्तर चर्चा करते हैं।

ध्वनि पर अधिकार कर लिया है मानव ने। ध्वनिसे भी तीव गति से चलने वाले यान वना लिये। परन्तु प्रकाश गति नहीं पा सका। क्यों? क्योंकि माया पर नियन्त्रण लिये विना प्रकाश की गति प्राप्त नहीं हो सकती! माया पर नियन्त्रण मिल जावे तो यान भारहीन

स्थिति, एक क्षण में एक लाख अस्सी हजार मील की गति से कहीं अधिक चलेगा और राख के अणुओं को रक्त, सोना, हीरा, केक आदि में स्वेच्छा से वदला जा सकेगा। एक वैज्ञानिक सत्य है यह। अकाट्य है। आप ही वताइये कि माया पर नियन्त्रण मिल जावेतो मनुष्य अमर हो जावे; यह भी धुव सत्य है। विश्व का कोई वैज्ञानिक इसे ठुकरा सकता नहीं है माया को इसीलिए इतना अधिक महत्व दिया गया है। सनातन के अनुसार सम्पूर्ण चराचर निर्मित है जिनसे वे सम्पूर्ण सूक्ष्म विन्दु एक ही हैं राख के सूक्ष्म अणु, रक्त के सूक्ष्म अणु, लोहे, पत्थर के सूक्ष्म अणु मूलतः एक ही हैं। सृजन के रहस्य से इनके नाना रुप गुणदि प्रकट होने लगते हैं। एको ब्रह्म द्वितीयों नास्ति [atom is one]! परमब्रह्म का अर्थ है जो सूक्ष्म अणु से भी अति सूक्ष्म है तथा परम्ब्रह्म का अर्थ है अति विशाल जिसमें सम्पूर्ण लोक-लोकान्तर समाये हुए हैं। इस प्राकर परम्ब्रह्म एवं परम्ब्रह्म के अन्तर को स्पष्ट जान लेना चाहिए। इसको अधिक स्पष्ट रुप से जानने के लिए पहले आपको महाविष्णु के सुदर्शन चक्र के दर्शन करा दूँ। उस चक्र के दर्शन के लिये ज्योतिष की आंख को जागना होगा। वेदस्य चक्षुः राहु!

सनातन ज्योतिष के अनुसार सर्वप्रथम इस धरतीपर जीवन लाकर देवताओं ने इसे सजाया, संवारा। प्रश्न उठा कि 'काल निरुपण प्रणाी' क्या हो। ऐसा कौन सा सिद्धांत वनाया जावे जो सम्पूर्ण लोक-लोकन्तरों को ग्राह्य हो। सनातन नियम वनाओं अनन्तकाल तक समय का सही वोध करा सकें।

काल तो मिथ्या है, गति ही सत्य है! इसलिये गति

को ही समय की इकाई बनाओ देवताओ ने मनन किया और सनातन-काल-निरुपण वनाकर इस धरावासियों को दो। ऐसी प्रणाली जो अनन्त काल तक गड़बड़ नहीं हो सकती।

प्रत्येक ग्रह का धुरी-भ्रमण (spin) उस ग्रह की दिवारात्रि होगी तथा प्रत्येक की परिक्रमा उस ग्रह का एक वर्ष होगी। चूंकि कोई भी वृत छोटा हो अथवा बड़ा हो, उसके अंश 360 (360 degrees) ही रहेगें। इसलिये 360 तिथियों वर्ष की रहेंगी। 30 तिथियों का माह एवं 12 माह का एक वर्ष अथवा एक परिक्रमा होगी। इसी प्रकार 30 अंश की राशि एवं 12 माह का एक वर्ष अथवा एक परिक्रमा होगी। इसी प्रकार 30 अंश की राशि एवं 12 राशि का जन्म-चक्र रहेगा। इस प्रकार प्रत्येक ग्रह की समय की इकाई का अनुपात प्रत्येक ग्रह को मिल सकेगा तथा ग्रह चाहे परिक्रमा घटावे अथवा वढ़ावे परिक्रमा के अंश 360 ही रहने से प्रणाली पर कोई प्रभाव नहीं आवेगा।

इस प्रकार प्रत्येक ग्रह के समय का अनुपात स्पष्ट हो गया। जैसे पृथ्वी जितनी देर में एक परिक्रमा सूर्य की करती है, चन्द्रमा पृथ्वी की 12 परिक्रमा कर लेता है। पृथ्वी का एक वर्ष = चन्द्रमा के 12 वर्ष। जितनी देर में वृहस्पति सूर्य की एक परिक्रमा करता है, उतना ही देर में पृथ्वी सूर्य को 12 परिक्रमा कर लेती है। इसलिये पृथ्वी के 12 वर्ष = वृहस्पति का एक वर्ष। इसी प्रकार शनि का एक वर्ष पृथ्वी के 30 वर्ष के वरावर आया।

उसके वाद सनातन देवों ने वताया कि, इस सम्पूर्ण चराचर में सूर्य भी अस्थिर है। सूर्य अपने सम्पूर्ण परिवार

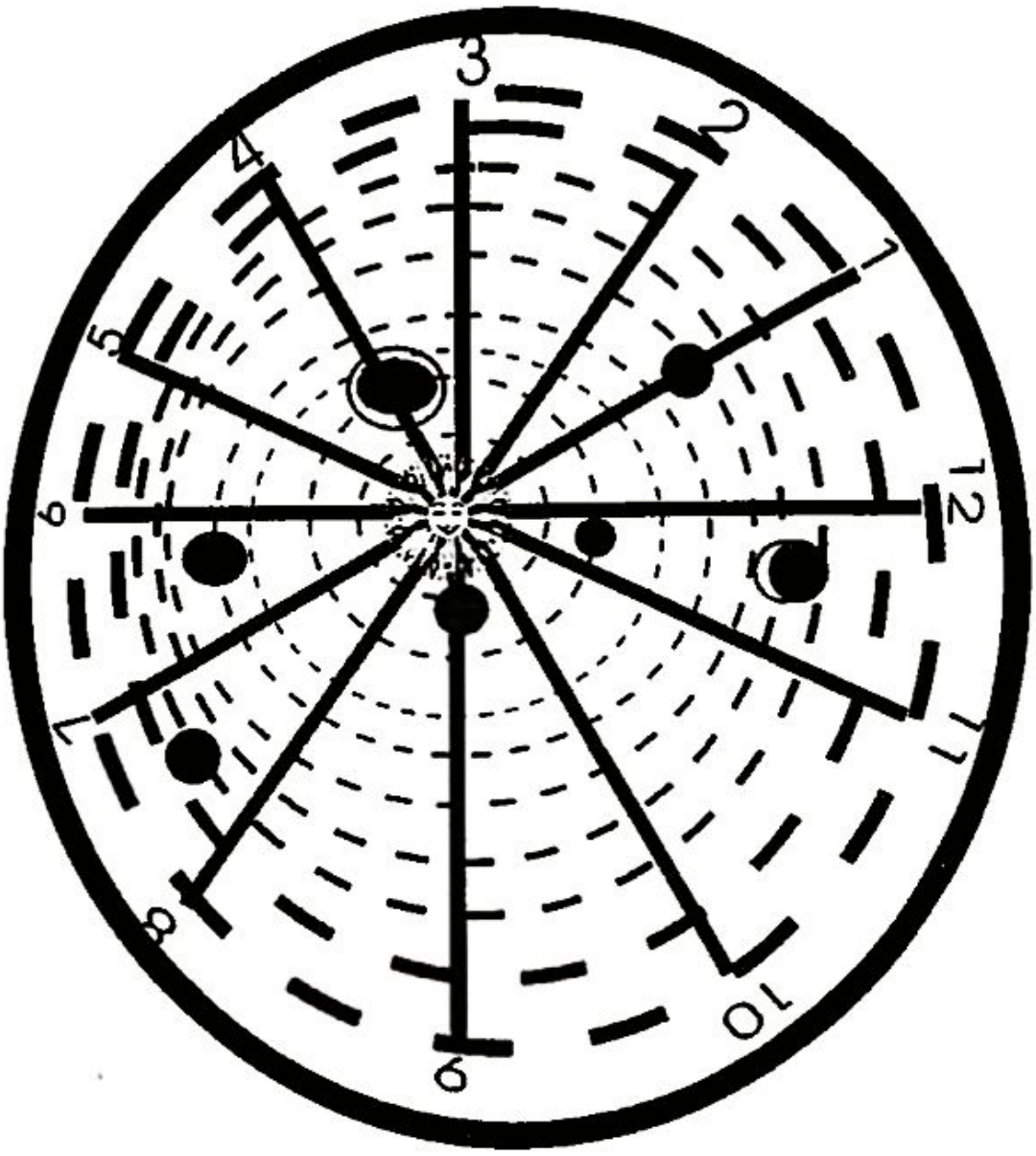

के साथ परिक्रमा कर रहा है। जैसे पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करते हुए भी चन्द्रमा से अपनी परिक्रमा कराती है, उसी प्रकार सूर्य देवलोक की परिक्रमा करता हुआ अपने आधीन ग्रहों से निरन्तर अपनी परिक्रमा कराता है। इस प्रकार जितनी देर में सूर्य अपने 360 अंश पूरे करता है, पृथ्वी सूर्य की तैतालीस लाख वीस हजार वार परिक्रमा करती है। इस प्रकार सूर्य का का वर्ष पृथ्वी के 43,20,000 वर्ष के वरावर हुआ।

इसी सूर्य वर्ष को चार दिशाओं के रुप में वताया तो, चतुर्युगी वना दी। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुगा। इस प्रकार सूर्य के एक वर्ष का अनुपात मिला इसी तरह नाना सूर्य परिवार एक देव की परिक्रमा करते है। प्रत्येक सूर्य की नाना पृथ्वी आदि ग्रह निरन्तर परिक्रमा करते हैं।

पुनः सनातन देवों ने कहा कि, यह देवलोक भी अस्थिर है। यह नाना देव ब्रह्मलोक की परिक्रमा करते हैं। जितनी देर में सूर्य हजार परिक्रमा देव की करता है, उतनी देर में देवलोक, ब्रह्मलोक की एक परिक्रमा पूरी करता है। इस प्रकार देवलोक का एक वर्ष सूर्य के एक हजार वर्ष के वराबर हुआ। अर्थात् 1 देव वर्ष = 1000 गुंणा 43,20,000 वर्ष पृथ्वी के।

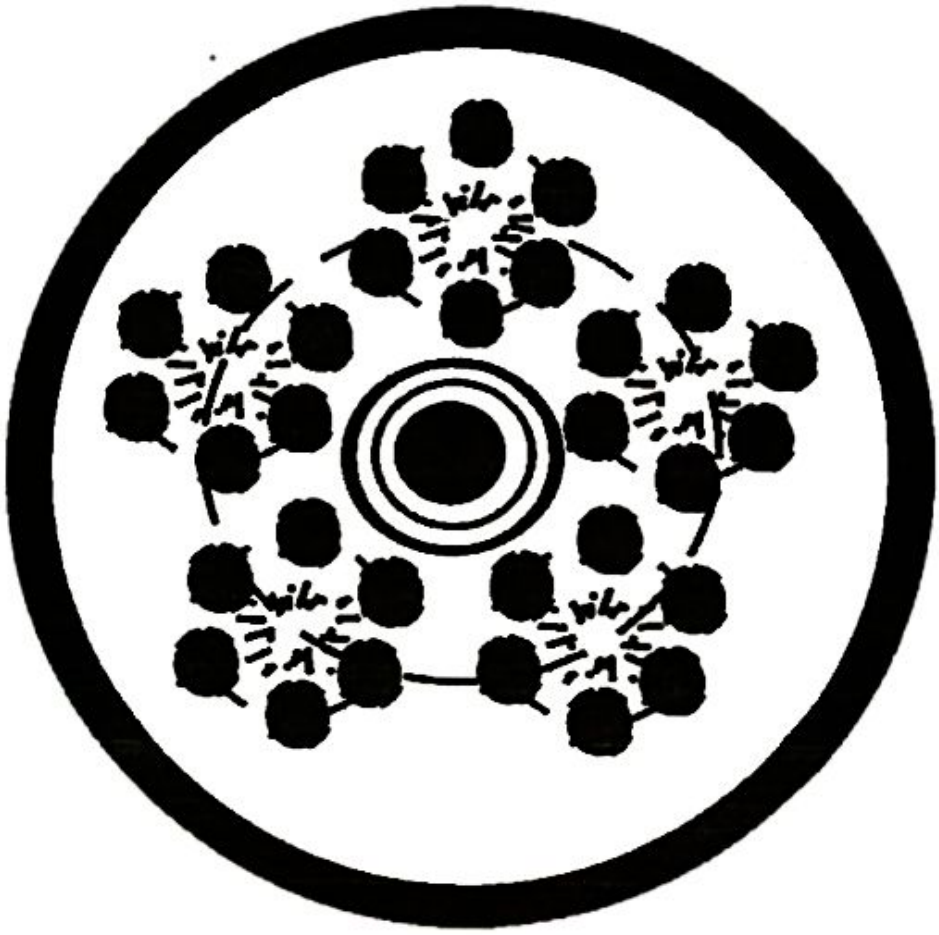

यह ब्रह्मलोक का एक दिन है तथा इसी अनुपात से रात्रि है तथा इसी अनुपात से रात्रि है। अर्थात् देवका 1 वर्ष ब्रह्मलोक का 1/2 अंश भ्रमण है, सनातन-लोक के चारों ओर! इसी अनुपात से ब्रह्म 360 अंश भ्रमण करते हैं और सनातन लोक को परिक्रमा करते हैं। इस तरह 1 ब्रह्म - वर्ष = 2 गुणा 360 गुणा 1000 गुणा 43, 20, 000 वर्ष पृथ्वी के।

इस अनुपात से ब्रह्म के पचास वर्ष वीत चुके हैं। 51वें वर्ष के प्रथग दिन का उदय होकर 13 घटी, 42 पल, 3 विपल, 43 प्रतिविपल व्यतीत हो चुके है। अर्थात् इतने वर्ष इस पृथ्वी को, जब से इस पर जीवन स्थानातरित हुआ, ब्रह्मलोक की परिक्रमा करते हो चुके

हैं। वर्तमान काल-निरूपण प्रणाली इतने समय पूर्व ही इस धरा पर लायी गयी थी।

अब चलें सनातन-लोक-मण्डल जिसका दूसरा नाम ही सुदर्शन चक्र है। सनातन का अर्थ है नित्य; जो किसी ग्रह की परिक्रमा नहीं करता है। परिक्रमा न करने से कालातीत है, अर्थात वहाँ समय को इकाई हो ही नहीं सकती।

एक नित्य सनातन-लोक है, जिसके प्रत्येक ओर से नाना ग्रह उसकी परिक्रमा करते हैं। प्रत्येक ग्रह की, नाना-नाना देव प्रत्येक ओर से परिक्रमा करते है। प्रत्येक

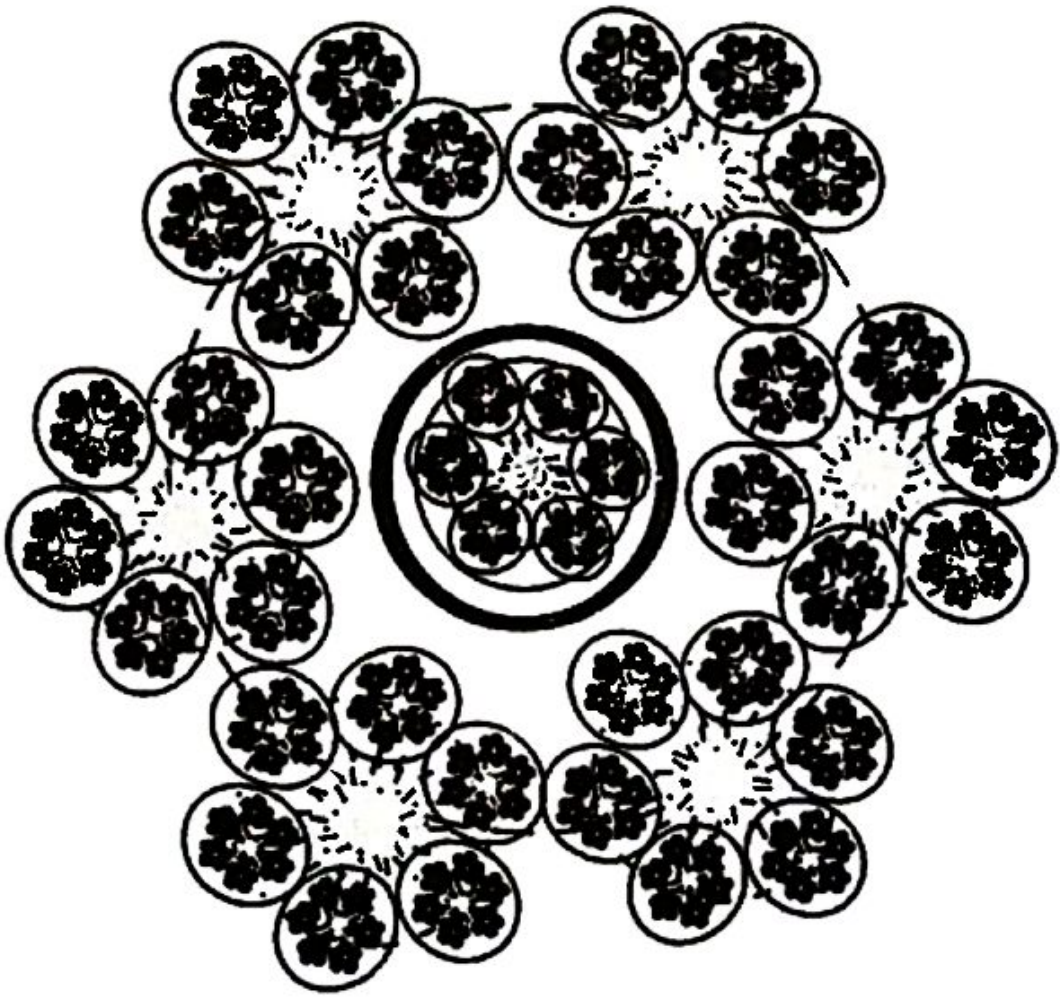

देव की, नाना-नाना सूर्य प्रत्येक ओर से परिक्रमा करते हैं। प्रत्येक ग्रह की हम और आप जेसे नाना-प्राणी प्रत्येक ओर से परिक्रमा करते है तथा प्रत्येक शरीर की नाना कोश परिक्रमा करते हैं एवं प्रत्येक कोश की नाना सूक्ष्म-ब्रह्म परिक्रमा करते हैं। इस सम्पूर्ण को सुदर्शन चक्र की संज्ञा दी है वेद सनातन ने! सनातना दर्शन जो सु + दर्शन है; सो सुदर्शन चक्र दिखाया मैंने आपको! अनंत क्षीरसागर के अधिपति महाविष्णु इसे थारण करते हैं।

सनातन की परिक्रमा सर्वोपरि हे। किसी प्रकार की भी पूजा, पाठ, हवन, यज्ञ, संस्कार परिक्रमा के विना अपूर्ण एवं फलहीन माना जाता है। प्रकृति के अंग हैं हम! प्रकृति को ठुकरा दें कैसे?

पाश्चात्य वैज्ञानिक सूर्य को स्थिर मानते रहे है; परन्तु अव उनकी थारणा भी वदलने लगी है। उनके अनुसार (sun is moving in the destination unknown.) हम कहते हैं महाराज! अव थर्म संकट छोड़ो। आगे की वात भी मान लो। 'दिशा अज्ञात' कोई अपनी मर्जी से तो सूर्य चलेगा नहीं। प्रकृति का अंग है, प्रकृति के नयम के अनुरूप ही परिक्रमावत् चलेगा। लेफ्ट-राइट करने से रहा।

हमारी बात वे माने कैसे? हमारा अस्तित्वं ही क्या है? इतिहास अटवर्थन-पटवर्थन से शुरू होता हैं। वेद का काल, रामायण का काल, गीता का काल, कहीं है ही नहीं। लगता है यह किताबें अचानक अनाधिकार इस देश में चली आई हैं। फिर कोई वैज्ञानिक यही बात कहेगा और हम दिवस मानयेंगे उसका! कर्परनिकस की

पाँचवी शताब्दी मनाई गई, लाखों रुपये खर्च किये गये एक मार्ग का नाम रखा गया। उसने आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व बताया था कि, पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है।

वेद द्वारा अभिशप्त, इन कर्णधारों से पूछो, कि पृथ्वी यदि सूर्य की परिक्रमा नहीं करती, तो काल निरूपण प्रणाली असंख्यों वर्ष पूर्व बनती केसे? आपने एक संस्कृति को तिरस्कृत किया है; एक देश की सार्वभौमिकता को छिन्न भिन्न किया है; एक राष्ट्र का सम्मान अपने पैरों के नीचे कुचला है। समय रहते इसका प्रायश्चित हो जावे, तो अति उत्तम है अन्यथा हिरण्याकश्यप और रावण के पुतले आज भी जलते हैं। जिनके हाथ देश का सम्पूर्ण धन है, नियन्त्रण है, बागडोर है, उन्हें किसी भी नपुंसक बहाने से बच निकलने का अधिकार नहीं है। राष्ट्र का महान सम्मान चाहने वालों! सारा कर्तव्य तुम्हारे सिर है। उच्छृंखलता और उदण्डता, बहानेबाजी बचा सकेगी। कर्म करो। दिशा लो! जन जन पूजगा तुम्हें! आरती उतारेगा! अमर ही जाओगे, लोक गीतों के नायक बनकर!

यहां एक बात और भी स्पष्ट कर देना चाहूँगा कि नाग के फन पर पृथ्वी बैठी क्यों है। पृथ्वी से तात्पर्य पृथ्वी से है तथा नाग से तात्पर्य है, पृथ्वी की परिक्रमा का स्वरूप। इसे वेद ने स्पष्ट किया है। अर्थात् पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा एक मार्ग अथवा रेखा पर नहीं करती वरन् उसकी परिक्रमा का चलन वैसा ही है जैसे नाग पानी में चलता है। अगल-बगल तथा ऊपर-नीचे डोलता हुआ ही नाग सागर में चलता है, उसी प्रकार क्षीरसागर

में पृथ्वी नागिन सी गति से सूर्य की परिक्रमा करती है। वैसे भी यह स्वयं सिद्ध है पृथ्वी नाना-ग्रहों की मायाओं का यथा-सन्तुलन रख कर ही अपनी परिक्रमा पूरी कर सकती है। प्रत्येक ग्रह चलायमान है तथा उल्काओं का भी निरन्तर वदलता प्रभाव रहता है। इसीलिए पृथ्वी की ऐसी ही नागिन की गति हो सकती है। एक महायुद्ध के उपरांत नष्ट संस्कृति ने दुवारा उन चिन्हों से स्वयं को पहचानना चाहा। कहीं सत्य से हटकर सत्य मान वैठे तो इसका यह अर्थ कैसे लग गया कि सत्य ही नहीं है।

यह भी नहीं भूलना चाहिए कि 200 वर्ष की गुलामी में शिक्षा के अंग भी यह ग्रन्थ नहीं रहे इसलिए अनुसंधान हो न सका। आजादी के वाद इस देश की दिशाहीन राजनीति इनको शिक्षा का माध्यम में ला सकी; न ही यह वैज्ञानिक अनुसंधान का विषय वन पाया। साथ ही यदि किसी वैज्ञानिक ने पाश्चात्य विज्ञान से हटकर नई दिशा वेदों में ढूंढना चाही, तो अवसर तथा सहायता उसे भारत में नहीं मिली! अमरीका तैयार है! यह अति दुर्भाग्यपूर्ण सत्य है, क्या भारत कभी भारत वन सकेगा?

वेदों में वह्मास्त्रों (,atomic warheads) एवं पशूपतास्त्रों (cosmic warheads) का अनेक वार वर्णन आया है। देवयान (gravity controlled spaceship) का नाम ही नहीं, इसकी यान्त्रिक प्रणाली का भी स्थूल वर्णन है। आश्चर्य तो इस वात का है कि इसके अतिरिक्त कोई मार्ग भी नहीं हो सकता है, मायायुक्त यान का। इस यान का संक्षिप्त वर्णन आप भक्तजनों को सुनाता हूँ।

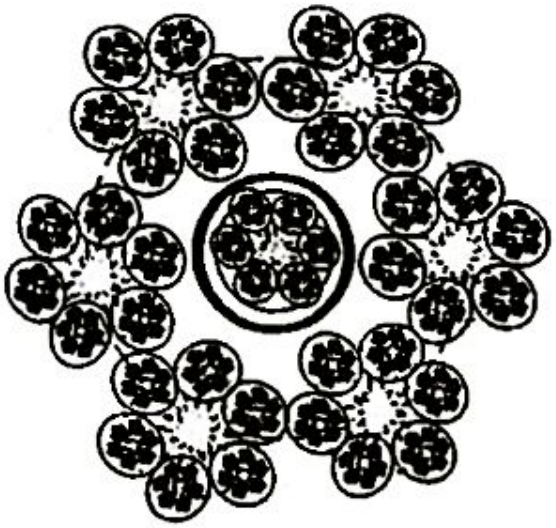

सुदर्शन चक्र की कार्यप्रणाली के अनुरूप ही देवयान का निर्माण होता था। एक कमाण्डिशिप है, जिसके प्रत्येक ओर से मैगनेटिक कन्ट्रोल पर गोले तीवतम गति से घूमते थे। प्रत्येक गोले के हर ओर छोटे गोले उसी प्रकार घूमते थे, ठीक जिस प्रकार सनातन के चारों ओर परिक्रमा एवं धुरी भ्रमण कर रहे हैं ग्रह्म एवं देवलोक। इन्हीं तीवतम परिक्रमाओं से माया [gravity] को निरस्त्र [neutral] कर देवयान [spaceship] ऊपर उठने लगता था; और भारहीन स्थिति को प्रापत हो विघुतगति से क्षीरसागर में प्रविष्ट हो जाता था; क्षीरसागर में पहुंचते ही उसकी परिक्रमा करते माया के न रहने से उससे चिपक जाते थे और यान विघुत से तीवतम गति को प्राप्त हो क्षीरसागर को पारकर इच्छित ग्रह की माया में प्रविष्ट हो जाता था। माया में आते ही पुनः पिण्ड धुरी-भ्रमण एवं परिक्रमा करके उसकी गति का नियन्त्रण करने लगते थे। माया को इच्छानुार घटाता-वढ़ाता यान किसी वर्फीले पहाड़ अथवा ठण्डे सागर-तल पर उतर जाता था। मैदान में यह यान उतर नहीं सकते थे क्योंकि ऐसा करने पर उसकी गर्मी से सव कुछ ध्वस्त हो जाता। यान जव उतरते थे तो लाखों टन बर्फ भाप बनकर उड़ जाती थीं तथा नदियों में वाढ़ आ जाती थीं इसी से लोग इन्द्र की पूजा करते

थे। इन्द्रयान का उस धरा पर कई बार आना दिखाया गया है। यह मात्र कोरी कल्पना हो ऐसा मानकर एक महान मूर्खत होगी। सत्य है कि वेद लिखे हैं सन्यासी ने कविता रूप में! वह वैज्ञानिक नहीं था। परन्तु जो विज्ञान उसने देखा उसे अपने ढंग से उपमाओं में बताया उसने तथा वह मात्र उपमाओं में बता गया उसे आज तक न बदल सके, हम! हमारी मान्यतायें नित्य बदलती रहीं। जागो हे सनातन जन-जन!! पहचानों कि तुम कौन हो? क्या दर्शन है तुम्हारा? कैसे थे पूर्वज तुम्हारे? उनके ज्ञान का सहस्त्रांश मात्र भी तुम्हारे दर्शन को भूतल का महानतम दर्शन बना देता है।

ज्योतिष! सनातन की विशिष्ट उपलब्धियों में आता है। बालक ने क्षीरसागर गर्भ का त्यागा- माया में प्रविष्ट हुआ। मापने लगा माया के प्रभावों को ज्योतिषी। Astrology is the secience which studies gravitational impacts on different subjects at different times and places. Comparative study of these impacts is the predictive side of astrology.

माया के भिन्न भिन्न प्रभावों को मापने; उनका जन्म से आनुपातिक प्रभाव जानने; स्थान और समय पर गोचर के प्रभाव नापने-वाली विधा का नाम ज्योतिष है।

आज का वैज्ञानिक तो जान ही नहीं पाया है कि माया क्या है और कितनी प्रकार की है? ज्योतिष कल का महानतम् विज्ञान होगा। जिस प्रकार माया के प्रभाव के कारण मृत्यु को झुठलाया जा सकता उसी प्रकार माया के प्रभाव का ज्ञान कराने वाली विधा की महानता को भी न्यून नहीं किया जा सकता।

सब खेल माया का है। सनातन के अनुसार सूक्ष्म-ब्रह्म विराट स्वरूप को प्राप्त होते हैं। पाश्चात्य में सूक्ष्म-ब्रह्म [atom] टूटते हैं।

Sanatan believes in expansion of atom while western science believes that atom breaks. Satatan says atom does never breaks, it expads according to the pressure of gravity and is competent to produce electrons and decrease their number when needed. Atom is one.

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सूक्ष्म अणु जिसमें ब्रह्माण्ड की सर्व शक्तियां निहित हैं-ब्रह्म है। यह बिन्दु एक ही प्रकार के हैं। उनको अलग-अलग प्रकार से कहना भ्रान्ति है। यह बिन्दु एक दसरे से जुड़ते भी नहीं हैं, वरन् मोहित होते हैं। यह बिन्दु अमर है। इन्हें नष्ट नहीं किया जा सकता ।

किसी भी पदार्थ को अणु मात्र में परिवर्तित करके उनका पुनर्सृजन किसी भी पदार्थ में किया जा सकता है। लकड़ी हीरा वन सकती है। पत्थर नवजात शिशु वन सकता है।जिसे आप कोरी गप्प कहते हैं, वह एक अटल वैज्ञानिक सत्य है।

Matter can be changed to light and light can ge converted to desired matter,-say Sanatna Vedas.

And this eill be the lone discovery of tomorrow,--says Bhakta sanatan.

तत्व को तेज में रुद्राग्नि द्वारा परिवर्तित कर उन्हीं तेज विन्दुओं का पुनर्सृजन करती है तो राख वनस्पति में एवं वनस्पति रक्त, मांस आदि में परिवर्तित हो जाती है। इसलिए तत्व ही तेज है; तेज ही तत्व है। पदार्थ भारहीन स्थिति को प्राप्त हो तेज की गति को प्राप्त हो सकते है।

Therefore light is matter and matter is light. matter can take the speed oflight and can travel swiffr than light. space ship can move with the speed of light.

कल्पवृक्ष उल्टा है। उसकी जड़ें उपर को है; टहनियां नीचे हैं क्यों? क्योंकि ऊपर क्षीरसागर में पहुँचते ब्रह्म; जो तेज में परिवर्तित हो ऊपर जाते हैं, जुड़कर नाना पदार्थो की सृष्टि करते हैं तथा उल्कापात द्वारा पुनः भू पर अवतरित होते हैं। इसलिए कल्पवृक्ष उल्टा है अर्थात् यह ऐसा पेड़ है, जो ऊपर से पदार्थ ग्रहणकर नीचे धरा पर हमको देता है। जड़ें ऊपर को है न! रस ऊपर से लेकर उन्हें फलस्वरुप बना हमको नीचे प्रदान कर रही हैं।

यही रहस्य है यज्ञ का! तेज में परिवर्तित ब्रह्म, क्षीरसागर में तेज विन्दु जुड़कर नाना पदार्थो की सृष्टि करेंगे! क्योंकि यह तेज ही तत्व है एवं तेज ही तत्व में परिवर्तित होगा।

Atom can expand to any extent. Single atom can cover the whole Universe, says Gita.

ब्रह्म का विस्तार इतना विशाल हो सकता है कि एक ही ब्रह्म में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समा जावे! ऐसा विराट स्वरूप दर्शन दिया है गीता में!

वेद की वैज्ञानिक उपलब्धियों का अधिक विस्तार करना यहाँ ठीक न होगा। यह तो वैज्ञानिकों के सुनने की वस्तु है। यहाँ पर केवल अति संक्षिप्त रूप में आपको बता दिया है, जिससे आप जान सकें कि आपके वेद क्या हैं? आज सारा विज्ञान क्षुब्ध खड़ा है और वेद मुस्करा रहे हैं। देखना एक दिन, लौटेंगे वेद सनातन के, भारत में कब? जब यह गुलाम देश और गुलाम सत्ताधारी मानसिक दासता त्यागकर भारत लौटंगे!

सनातन आशावान है! निश्चिन्त है!! शान्त है!!!

सनातन विज्ञान का सूक्ष्म दर्शन मैंने आपको इसलिए दिया जिससे आप क्षीरसागर मंथन की कथा को वास्तविक रूप से जान सके। क्षीरसागर-मंथन "The Space Research," इसे कथा रुप में सुनाऊगा। इस प्रकरण में जहाँ "मैं " का उच्चारण करूँ, उसका अर्थ मुझसे नहीं, उस महाप्रभु, सनातन, कृष्ण, ॐ सर्वव्यापी से लगाइयेगा।

जैसे—जैसे ग्रह बढ़ता जाता है; उसका परिक्रमा-वृत निरन्तर बढ़ता जाता है। माया का प्रभाव गहन होता जाता है। माया का प्रभाव अधिक होने के कारण शरीर का विघटन भी तीव होने लगता है। इस विघटन [decay] को सहन कर सकने के लिए शरीर बढ़ने लगते हैं। इस प्रकार ग्रह अपने सम्पूर्ण जीवधारियों के साथ दानव [decay] स्थिति को प्राप्त हो जाता है। ऐसी स्थिति को प्राप्त ग्रह की महाप्रलय अवश्यम्भावी हो उठती है।

मैं, जो इस सुदर्शन—चक्र का अधिपति हूँ, सनातन लोक का स्वामी हूँ, नाना ब्रह्मलोक तथा देवलोक अधिपतियों द्वारा पूजित हूँ! मैंने दिव्य चक्षु से देखा कि कुछ काल उपरांत सूर्य लोक-मण्डल में जो जीवधारी ग्रह है, माया का भार अत्यधिक बढ़ जाने का कारण महाप्रलय को प्राप्त होगा। वहाँ जीवन भी दानव स्थिति को प्रापत हो चुका है।

मैंने देवलोक को [जिसकी यह सूर्य- परिवार परिक्रमा कर रहा है] आदेश दिया कि, हे देवो! जाओ! उस परिवार में, वह भूमण्डल सर्वनाश, प्रलय को चलनेवाला है। तुम तुरन्त कोई नया ग्रह ढूंढकर, उस

जीवन स्थानान्तरित कर दो; जिससे अमुक सूर्य परिवार में जीवन निरन्तर रहे और सृष्टि के चक्र में बाधा न आवे।

अहंब्रह्मास्म प्राप्त देव तेज की गति से क्षीरसागर में दौड़ चले; नये गह की खोज में। इस अभियान का नाम दिया गया क्षीरसागर-मन्थन अर्थात् (space research) देवों ने आदेश पाते ही क्षीरसागर में प्रवेश किया। नाना विशाल उल्काओं को देखा। परन्तु उन्हें उपयुक्त उल्का-पिण्ड मिला नहीं। ढूंढतेहुए वे एक अति विशाल उल्का-पिण्ड पर आये। यह पिण्ड ग्रह के सब गुणों को धारण कर चुका था। धुरी भ्रमण एवंसूर्य की परिक्रमाओं को प्राप्त हो चुका था। माया भी उचित थी। निश्चय किया गया के जीवन इसी ग्रह पर स्थानान्तरित कर दिया जावे।

परन्तु एक समस्य जटिल थी। पानी नहीं था इस ग्रह पर। पानी के विना जीवन चलेगा नहीं। इस ग्रह को पहले पानी दिया जाना चाहिये। देवो ने इस सूर्य-परिवार के सारे ग्रहों का अवलोकन किया। जल नहीं मिला कहीं पर भी। क्या हो? कैसे जल लाया जावे इस ग्रह पर?

देव पुनः क्षीरसागर में लौट आये। देवों ने क्षीरसागर में विचरण करते तेज बिन्दुओं के यज्ञ के द्वारा जल में परिवर्तित करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार एक विशाल जल का सागर एकत्र हो गया। इसका नाम वैतरणी रखा गया। यह जल इस ग्रह से कई गुना अधिक था। प्रश्न उठा इस जल को इस ग्रह पर उतारें कैसे?

यदि इस जल को सीधा ग्रह पर गिरा दें तो झटका खाकर यह ग्रह सूर्य परिवार से बाहर जाकर महाप्रलय

को प्राप्त हो जावेगा। फिर जल के पृथ्वी पर चले आने से भार का अचानक वढ़ जाना भी इस ग्रह के अस्तित्व को खतरे में डाल सकता है। दोनों स्थितियों में जल पृथ्वी पर लाया जा नहीं सकता। इस ग्रह को तो जल धीरे धीरे एवं निरन्तर गति से दिया जाना चाहिये। इस वैतरणी के इस भूतल पर गंगावतरण का कोई उपाय सोचो।

योजना वनी, इस पृथ्वी की माया को घटाया जाए किसी छोटे ग्रह के द्वारा; छोटा एवं उपयुक्त गह खोजने चले दये देव! एक परिवार से दूसरे परिवार [सौर-परिवार] में, फिर तीसरे में। अन्त में नन्हा ग्रह चन्द्र, लोक-मण्डल में मिल गया। इस नन्हें ग्रह को माया नियन्त्रण द्वारा इस ओर ले आये।

This Planet has no weight; weight is of gravity. If I can liftthe gravity, I carry this planet on may finger tips, say Vedas.

इस ग्रह का भार नहीं है! भार तो माया का है। यदि मैं माया निरस्त्र कर सकूँ तो मैं इस ग्रह को अपनी अंगुली पर धारण कर सकता हूँ। इस प्रकार राम के दर्शन में, हनुमान ने ग्रह ['पर्वत'] उठा लिया तो कृष्ण के दर्शन में, कृष्ण ने।

चूँकि इस नन्हें ग्रह को, चन्द्रलोक-परिवार से लाये थे इसलिये देवों ने इसका नाम चन्द्रमा रख दिया और इस चन्द्रमा को पृथ्वी की माया से सन्तुलित कर छोड़ दिया। यह पृथ्वी का उपग्रह वन पृथ्वी की परिक्रमा करने लगा। देवों ने आकाश-गंगा उतारी ठीक पृथ्वी चन्द्रमा की सन्तुलित माया में लाकर। चन्द्रमा और पृथ्वी के

बीच के क्षीरसागर तक गंगा, बिना किसी माया के प्रभाव में आ गई। अब चन्द्रमा ने जल को अपनी माया से खींचा; पृथ्वी ने अपनी माया में खींचा, तो जल नियन्त्रित हो, मूसलाधार बरसने लगा। निरन्तर गति

से पृथ्वी को जल मिलने लगा। झटका भी नहीं लगा।

इसीलिये उस चित्र में दिखाया गया है कि क्षीर-सागर के देवता विष्णु, जो कि क्षीरसागर स्वयं है; के पैर से निकलती है यह गंगा माया के देवता [cosmic

lord) शंकर के जटाओं में उतारी गई। चन्द्रमा उनके भाल पर दिख दिया गया कि इस प्रकार चन्द्रमा के माध्यम से जल इस पृथ्वी पर लाया जा सका।

उपरान्त देवयानों द्वारा नाना प्रकार की वनस्पति एवं जीवधारी यहा लाकर वसाये गये। यहाँ एक विशिष्ट बात यह है कि वेद भी दानवाकार जीवधारियों का अस्तित्व मानते हैं तथा डारविन ने तो इसे सबूत देकर सिद्ध कर दिया है।

सनातन के अनुसार विसर्जन को जा रहे ग्रह से जो जीवधारी लाये गये, वे उस ग्रह कीमाया के अनुसार दानवाकार हो गये थे। कम माया में लाये जाने के कारण उनके शरीर का विघटन हो गया तो उनकी आयु वढ़ गई इसलिये वे हजारों साल जीवित रह सके। परन्तु धीरे--धीरे पीढ़ी दर पीढ़ी उनके आकार घटते गये तथा आयु भी इस पृथ्वी के माया के अनुपात के अनुसार होती चली गई इस प्रकार वे वर्तमान स्थिति को प्राप्त हुये। इस प्रकार क्षीरसागर मन्थन द्वारा देवताओं ने, नये ग्रह की खोज की और जीवन स्थानान्तरित किया जो आप चित्र में यहाँ वहाँ देखते हैं। वेद का सही ज्ञान न रहने से पौराणिककाल में कुछ भ्रम वढ गया। अन्यथा यह वेद का विज्ञान ही अव इस जगत् के पास है क्योंकि डारविन और विग वैंग दोनों उतार दिये गये हैं।

यहाँ एक वात और भी स्पष्ट हो गई है कि चन्द्रमा कभी भी इस पृथ्वी का भाग नहीं रहा है। क्योंकि अमेरिका द्वारा भेजे गये वैज्ञानिक जो मिट्टी लाये हैं वह किसी प्रकार भी इस ग्रह से सम्वन्ध नहीं जोड़ती है। अव अमरीका भी मान गया है कि चन्द्रमा कभी

भी पृथ्वी का भाग नहीं रहा। इस प्रकार वैंग थ्योरी एक वार फिर गलत सिद्ध हुई तथा क्षीरसागर मन्थन को पुनः वल दिया।

माया के रहस्य समझाते हुए वेद वताते है कि चन्द्रमा को देखकर क्यों सागर का जल ज्वार [high tide] हो उठता है तथा चन्द्रमा के न रहने पर डरे वालक की नाईं क्यों धरती से लिपट जाता है [low tide]। इसको समझने के लिये हमें जानना पड़ेगा कि सूर्य से आने वाली रोशनी गर्म क्यों है? तथा चन्द्रमा से आने वाली रोशनी ठन्डी क्यों है।

पाश्चात्य विद्वानों से पूछा, आज से कुछ तीस वर्ष पूर्व, तो वे वोले सूर्य में आणविक विस्फोट होते हैं इसलिये सूर्य से आने वाली रोशनी गर्म है तथा चन्द्रमा पर वर्फ के पहाड़ है इसलिये उनसे टकरा कर जव किरणें लौटती हैं तो ठन्डी होती है। चाँद पर एक वूंद पानी न मिला। अव उनके पास कोई उत्तर नहीं है। सूर्य से आने वाले किरणें यदि लगभग नौ करोड़ मील क्षीरसागर [space] में ऊष्मा [heat] को चलाकर धरा पर ला सकें तो थर्मस फलास्क में तो ठन्डा अथवा गर्म कुछ टिकेगा ही नहीं।

Heat cannot travel in space. Heat can travel only in gravity-Vedas.

सनातन वेद के अनुसार न तो सूर्य से आने वाली रोशनी गर्म है और न चन्द्रमा से आने वाली रोशनी ठन्डी है। खेल सव माया का है। सूर्य से किरणों के पुनः रुद्र क्रिया [cosmic force] द्वारा विस्फोटित हुए तो Space में आते ही उनके युद्ध का अन्त हो

गया। अणुओं के घर्षण प्रतिघर्षण का युद्ध क्षीरसागर में चल ही नहीं सकता। अतः वे सब शांत हो गये परन्तु उनकी गति तथा शक्ति निर्बाध रही। उसी गति से वे विन्दु जब पृथ्वी की माया में प्रविष्ट हुए, तो माया के कारण पुनः उनका मायायुद्ध आरम्भ हो गया। वे विराट स्वरूप धारण करने लगे और माया को निरस्त्र करने लगे।

Atoms has no electrons when in space. It is competent to produce as many elelctrons neededto repulse the attack of gravity.

When it exploded from the Cosmic Arch of Sun-matter changed toatoms and atoms came- radioactive and cosmic. But when these atoms reasched the sapce the electrons disappeared and there was no war no heat.

But speet and force of blast remained unchanged as there was no friction in the space Atoms with the speed and force in fact fouched the gravity of planet and became radioactive again to repulse the proessure of gravity. Due to heavy force of blast it touched thebottom of the planet and repulsed the gravity with the force of electrons and fled away to space again. Again electrons disappeared in in the space.

Now I felt the heat of friction of electrons with gravity; not that the heat was transmitted from sun to eath.

इस प्रकार सूर्य से आने वाले ब्रह्म जब माया से संघर्ष करते हैं तो उस संघर्ष से उर्जा उत्पन्न होती है, न कि ब्रह्म सूर्य से उर्जा लेकर आते हैं। चूंकि उनके पीछे धक्के का प्रभाव अधिक होता है, इसलिए वह माया से लड़ते हुए भी पृथ्वी के तल तक आ जाते हैं। यही भयंकर युद्ध कर भाग जाते हैं, पुनः क्षीरसागर में।

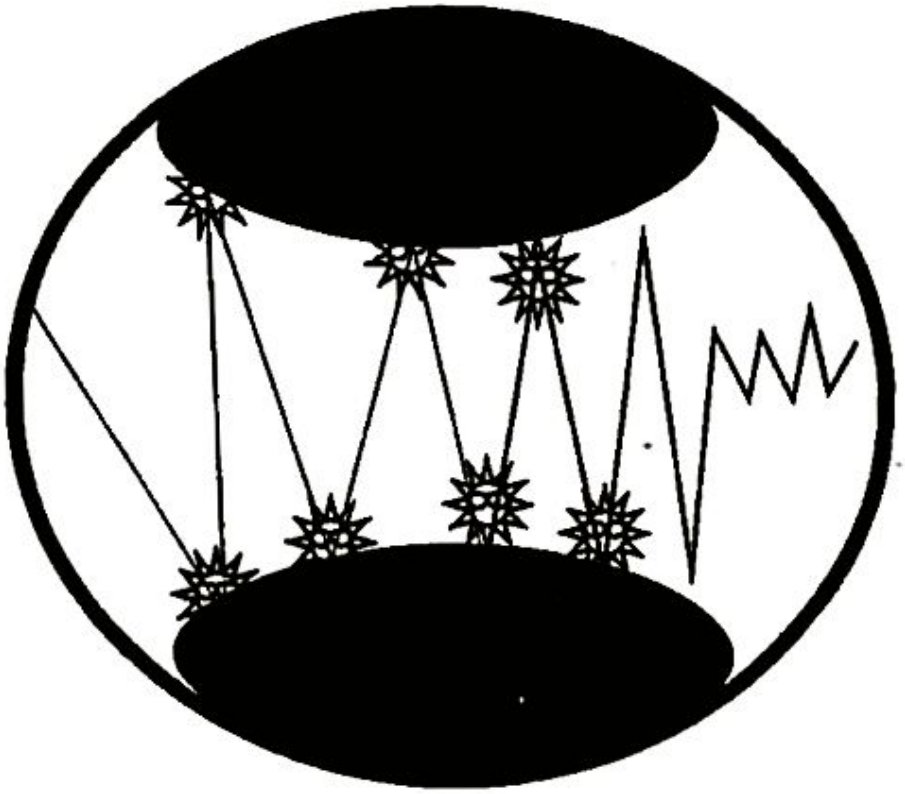

यही ब्रह्म जब पुनः चन्द्रमा की माया में प्रविष्टि होत हैं, तो पुन कुपित (radio active) हो उठते हैं और माया से लड़कर पलट भागते हैं। पुनः उनकी गति क्षीरसागर में न रुक सकने के कारण, वे फिर पृथ्वी की माया में प्रविष्ट होकर कुपित [radio active] हो उठते हैं और माया से संघर्ष करते हैं, परन्तु इस बार थमाके के शक्ति न होने के कारण ऊपर से ही लड़कर लौट जाते हैं, तो उनकी चमक तो मुझे पृथ्वी पर दिखायी पड़ती है, परन्तु संघर्ष की गर्मी मुझे छूती नहीं। मुझे लगता है चाँद से आने वाली रोशनी ठन्डी है।

इस प्रकार न तो सूर्य से आने वाली गर्म है, न चाँद वाली ठन्डी। गर्मी अथवा ठण्डक क्षीरसागर के आर-पार जा नहीं सकती। इसीलिये पूर्णिमा के दिन सागर में भारी ज्वार [high tide] रहता है। चन्द्रमा से

टकराकर लौटते ब्रह्म पृथ्वी की माया में प्रविष्ट होकर जब लड़कर भागते हैं, तो वायुमण्डल में एक खिंचाव पैदा करते हैं, जिससे प्रत्येक वस्तु ऊपर को खिचती है, सागर में ज्वार आता है, बीजों से कोपलें फूट आती है आदि-आदि! इससे भी कई गुणा अधिक खिचाव सूर्य से होता है, परन्तु हम उसका प्रभाव नहीं देख पाते हैं। उसका कारण है कि सूर्य से आने वाले ब्रह्म पृथ्वी तल को छू जाते हैं, तो भारी खिंचाव के कारण पानी को ही उठा ले जाते हैं। चन्द्रमा केवल रिक्तता पैदा कर पानी से खींचता है, जब कि सूर्य उड़ा ही देता है। यह सनातन मत है।

सूर्य को लेकर भी वेद और पाश्चात्य वैज्ञानिकों में भारी मतभेद है। पाश्चात्य वैज्ञानिक सूर्य को आग का जलता हुआ गोला [atomic reactor] बताते है। वेद इसे ठण्डा ग्रह बताता हे। वेद के अनुसार सूर्य स्वयं आग का गोला नहीं है; वरन् सूर्य से कई लाख मील दूर, सूर्य के प्रत्येक ओर रुद्रवलय, है जो प्रकाशवान है। यह रुद्रवलय अपनी भारी माया द्वारा उल्काओं एवं गैस के बादलों को अपनी ओर आकृष्ट करता है तथा माया द्वारा सूक्ष्म-ब्रह्म में परिवर्तित कर कुपित कर देता है। यह ब्रह्म समूह इस वलय के भीतर जा ही नहीं सकते, क्योंकि जितना भीतर जावेंगे, माया उतनी गहन होती जावेगी। कुपित-ब्रह्म सदा क्षीरसागर की ओर दौड़ता है। इसलिये यह ब्रह्म-समूह के पुंज बने वृत्ताकार [सूर्य तीव्र धुरी-भ्रमण कर रहा है] क्षीरसागर में दौड़ते हैं।

यदि सूर्य स्वयं atomic reactor होता तो कुल तीन मिनट में उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाता और उसके

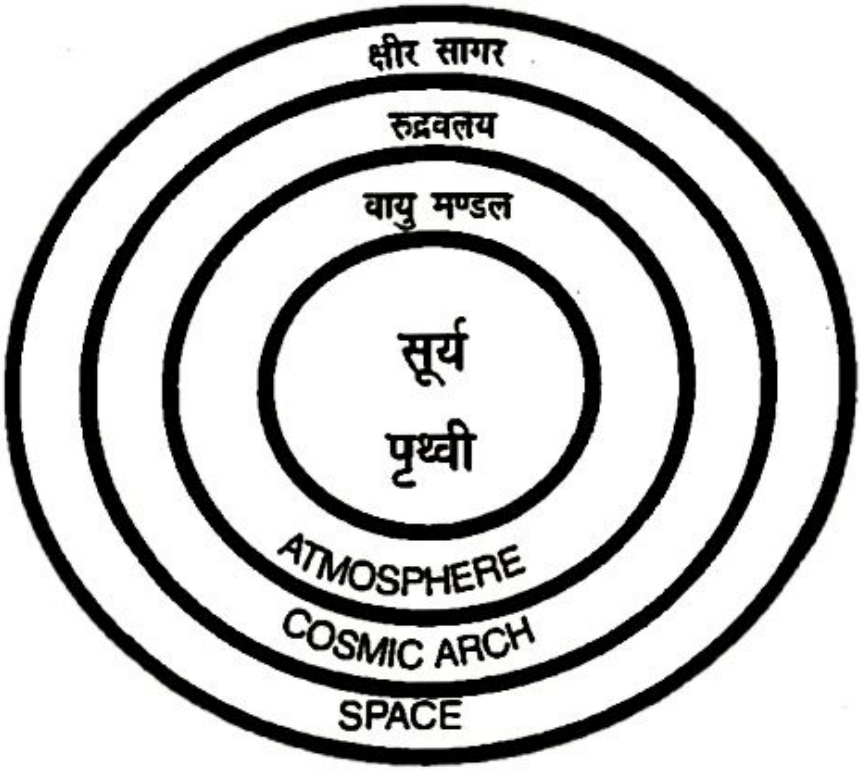

सूक्ष्म अणु क्षीरसागर में छितरा गये होतो। पाश्चात्य वैज्ञानिकों का यह मत निराधार है। निश्चय ही सूर्य ठण्डा है और वह न तो तेज लेता है; न देता है! उसकी भारी माया जो उसको चारों ओर से घेरे है, इस रुद्रवलय [ववेउपव तवी] द्वारा नियन्त्रित है। यह रुद्रवलय भोजन स्वरूप उल्काओं का निरन्तर भक्षण करता है और उन्हें पुनः कुपित सूक्ष्म-वह्न के समूह में क्षिरसागर में छितरा देता है। वेद का यह मत वर्तमान वैज्ञानिक मत से कहीं अधिक सशक्त एवं वैज्ञानिक है।

इस प्रकार पाश्चात्य वैज्ञानिकों के मूखर्तपूर्ण भय; कि सूर्य से पृथ्वी दूर चली जावेगी तो गर्मी घट जावेगी; निर्मूल है। यदि पृथ्वी सूर्य से एक करोड़ मील और दूर चली गई तो भी गर्मी वढ़ेगी। घटने का प्रश्न ही नहीं उठता। दूर जाने से माया वढ़ेगी। माया से गर्मी अधिक वढेंगी। जहाँ तक दूरी का प्रशन है उससे काई अन्तर

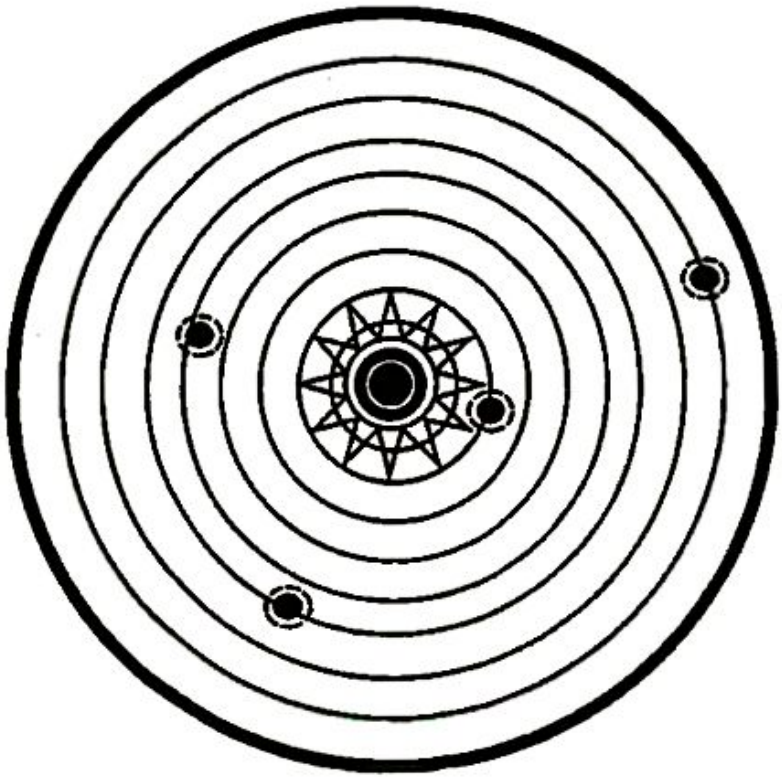

पड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता। क्षीरसागर में गति (space) के ह्रास होने का कोई कारण हो नहीं। जैसा आठ करोड़ मील वैसा अस्सी करोड़ मील। जहां प्रति-घर्षण ही नहीं मायारहित होने से, वहां गति से कम होने का प्रश्न तो नितान्त मूर्खतापूर्ण है।

दूसरे यह कहना कि सूर्य ठण्डा हो रहा है, हमें कुछ काल उपरान्त नया सूर्य ढूढ़ना पड़ेगा एकदम वेबुनियाद है। न तो सूर्य कभी गर्म था और न ही ठण्डा होगा। रुद्रवलय जब तक सूर्य का अस्तित्व है; शान्त नहीं हो सकता तथा जब तक रुद्रवलय है, सूर्य के अस्तित्व को खतरा हो नहीं सकता । स्पष्ट है कि सूर्य अमर हो चुका हैं

जिस प्रकार एक ग्रह विन्दु बिन्दु में विसर्जित होकर अस्तित्व खो बैठता है और दूसरी ओर वैसा ही ग्रह रुद्रवलय धारण कर अमर हो जाता है। रे मनुज! तू

भी दशानन हो विन्दु-विन्दु होगा चिता पर; अथवा दशरथ ही तेज धारण कर अमर हो जावेगा। ऐसा कहा सनातन वेद ने!

वेद के अनुसार पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा ठीक उसी प्रकार करती है जैसे भंवर में फंसा लकड़ी का टुकड़ा निरन्तर भंवर की परिक्रमा करता रहता है। बीच में थोड़े काल को दवरक अदृश्य हो जाता है पुनः प्रकट होकर परिक्रमा करने लगता है। देव और सूर्य के बीच के भाग में यह उठा रहता है, पीठ के भाग में कुछ दव जाता है जिससे सर्दी-गर्मी आदि मौसम वनते है।

पाश्चात्य वैज्ञानिकों का मत है कि पृथ्वी के दूर चले जाने से ठंड पड़ने लगती है नितान्त हास्यापद है [वेद के अनुसार पृथ्वी जिनती दूर जायेगी, माया [gravity] के वढ़ते प्रभाव के कारण गर्मी अधिक वढ़ेगी।] देवलोक की परिक्रमा सूर्यदेव अपने परिवार सहित कररहे हैं। पृथ्वी अपने परिवार, एक मात्र चन्द्रमा के साथ सूर्य की परिक्रमा कर रही है। परिक्रमा करती पृथ्वी जव देवलोक की ओर आ जाती है उत्तरायण सूर्य होता है। जव देव के विपरीत दिशा में पृथ्वी पहुंच जाती है तो दक्षिणायन सूर्य होता है। इस प्रकार पृथ्वी छः महीने सूर्य की परिक्रमा देव ओर से तथा छः महीने सूर्य की परिक्रमा दानव ओर से करती है।

भीष्म पितामह छः महीने तक वाणों की शैय्या पर लेटे पृथ्वी के उत्तरायण होने की प्रतीक्षा करते रहे। मकर संक्रान्ति से कर्क संक्रान्ति तक उत्तरायण पक्ष रहता है, जिसे देवपक्ष कहा है उपरान्त दक्षिणायन पक्ष, जिसे काल रात्रि कहा गया है।

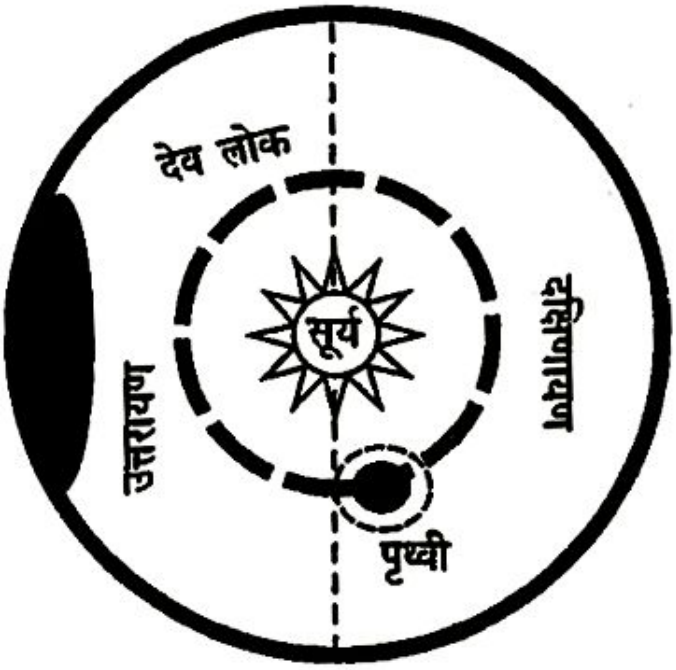

पृथ्वी आदि ग्रह अपनी इच्छा से न तो थुरी-भ्रमण करते हैं और न ही परिक्रमा। इस विषय में वेद के अतिरिक्त कोई मत नहीं है। पाश्चात्य विज्ञान का अभी अपना मत स्थिर करना बाकी है।

वेद सनातन मत से, सूर्य तीव्र गति से, थुरी-भ्रमण कर रहा है; जिससे क्षीरसागर में अदृश्य लहरें सी उत्पन्न होने लगती हैं, जिसमें पड़े ग्रह, भंवर में आये टुकड़ों की तरह उसकी परिक्रमा करने लगते हैं। नजदीक के टुकड़े तेजी से परिक्रमा करते हैं तथा दूर के टुकड़े धीरे-धीरे परिक्रमा करते हैं। वेद का यह मत सही इसी से सिद्ध हो जाता है कि जो ग्रह जितना नजदीक है वह उतनी अधिक परिक्रमा कर रहा है। यदि ऐसा न होता तो प्रत्येक ग्रह की परिक्रमा एक सी होती; जैसे साईकिल का पहिया। उसके थुरे के साथ बंधी वस्तु तथा पहिये के साथ बंधी वस्तु के वृत्तों में कितनी भी छोटाई-बड़ाई क्यों न होगा, परिक्रमायें एक सी ही करेंगे; परन्तु गोचर में ऐसा नहीं है, तो मानना पड़ता है कि

ग्रह भंवर की सी स्थिति में ही परिक्रमा करते है।

सूर्य के तेजी के साथ धुरी-भ्रमण करने से उसके चारों ओर का रुद्रवलय भी तीव्र गति से धुरी-भ्रमण कर रहा हैं उससे निकलने वाले किरण-समूह भी वृत्ताकार स्थिति में ही क्षीरसागर में निकलकर दौड़ते हैं। इसी से सारे ग्रह धुरी-भ्रमण करते है। धुरी भ्रमण से ग्रह की माया गद्दी बन जाती है, ऐसी स्थिति में सूर्य से आने वाली वृत्ताकार किरणें उसकी परिक्रमा कर निकल जाती हैं, उसे [ग्रहकों] धकेल नहीं पाती। यदि ग्रह भ्रमण न करता हो तो किरणों का एक ही समूह उसे सौर-मण्डल से धकेल कर बाहर फेंक देगा और वह ग्रह मायाओं से टूटकर महाप्रलय को प्राप्त हो जावेगा।

संक्षिप्त रहस्य बताया मैंने आपको, परिक्रमाओं का। परिक्रमा; जो सनातन दर्शन का विशिष्ट अंग है।

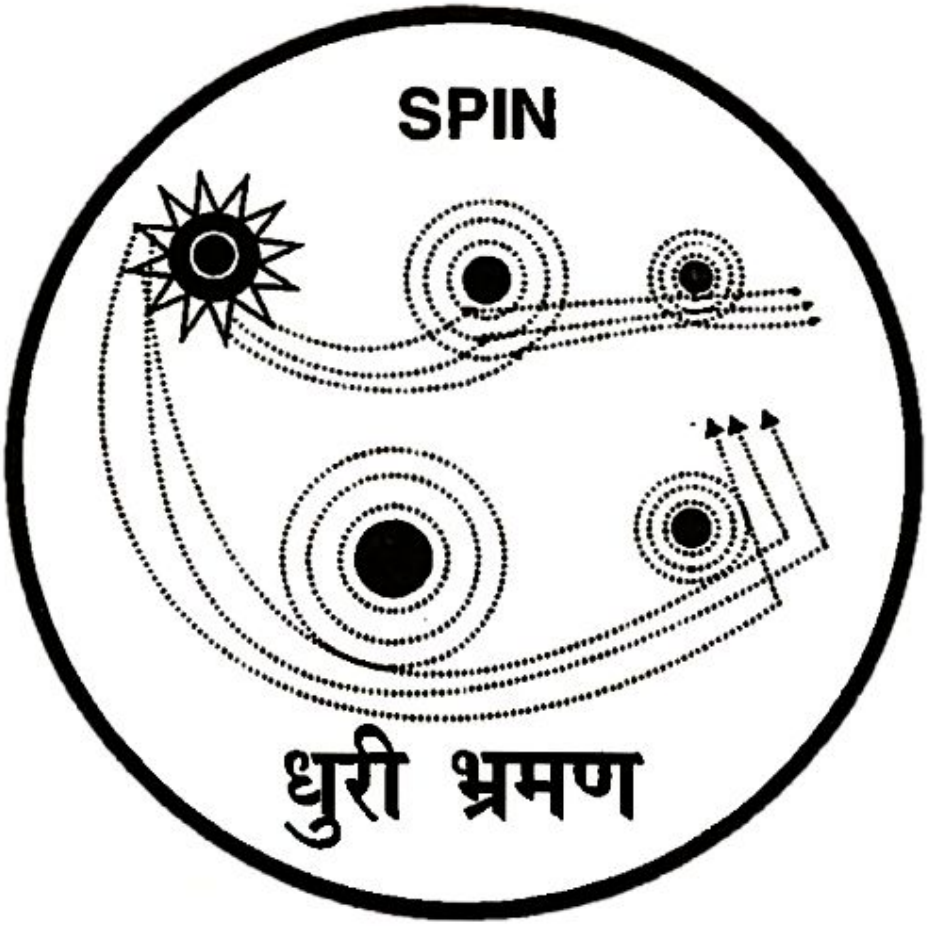

परिक्रमा; जिसे सनातन ने जीवन का प्रतीक माना है! परिक्रमा; जो मोक्ष दायनी है! फल दायनी है! जिसके विना जीवन व्यर्थ है। कोई भी पाठ, पूजा, हवन, यज्ञ व्यर्थ है। सनातन वेदों में इस प्रकार का ज्ञान सर्वत्र ऋचाओं में दिया गया है, परन्तु एक बात नहीं भूलनी चाहिये कि यह ज्ञान-विज्ञान मात्र उपमाओं में दिया है, सनातन प्रभुओं ने। अर्थात् उन्होंने इस ज्ञान-विज्ञान को महत्व न देकर मात्र 'अहं ब्रह्मास्मि' , मोक्ष को ही लक्ष्य बनाया है, प्रत्येक ऋचा में। सत्य है नाना ज्ञान विज्ञान किस काम के, यदि मैं स्वयं कोही न पहचान सका! स्वयं को ही न प्राप्त हो सका!

हे भक्तगण! आपकी श्रद्धा-भक्ति-धैर्य की बलिहारी है! सम्पूर्ण ज्ञान आपकी श्रद्धा के आगे हीन है! आप महान है! यह ज्ञान; यह विज्ञान; यह बुद्धिमत्ता; सब ले लो। मुझे मात्र कन्हाई का संग दे दो! अरे सम्पूर्ण ज्ञान नष्ट हो जावे, एक कन्हाई का संग रह जावे बाकी।

कितना मुर्ख था यह भक्त आपका कि हतंअपजल तमेमंतवी औरववदजतवस के सपने सजाता था, ठीक उस बालक केजैसा जो सागर के तट पर बैठा रेत में पैर देकर उसकेघर बनाता रहता है। बहुत व्यस्त है वह! जबकि खाना उसकी माँ उसके लिए बना रही है। रेत में घर बनाते बालक की दाढ़ी-मूछे निकल आती हैं। सफेदी छाने लगती है। कमर झुकने लगती है। बहुत व्यस्त है वह। जबकि आज भी खाना-मिट्टी से; राख से; —माँ प्रकृति ही बना रही है। नहीं जानता है वह किराख का ढेर चला कैसे, मुस्कराया कैसे, बोला कैसे,

सोचा कैसे, रेत के घर बनाता बालक बुढ़ा हो चला-बालकपन अभी वैसा ही है। अति व्यस्त है वह।

धिक्कार है उस ज्ञान को! धिक्कार है उस विज्ञान को! जो मुझे दूर कर दे मेरे कन्हाई से! मुझे ज्ञान-विज्ञान का सम्मान मत दो! दशानन नहीं हूं मैं! एक भक्त की, एक कन्हाई के पुजारी को, श्रद्धा भर दो कूट-कूट कर; कि मूढ हो, गाता फिरूं उसको! भजता फिरूं उसको! जहाँ देखूँ ही दिखे—मुंदी आँखों में; खुली आंखें में! अब तो वही श्रोता हो, वही वक्ता हो, वह ही कथा हो, वह ही कथाकार हो! भूमिका वही हो! भूमिकार हो। वही अलंकार हो-शब्द-शब्द में साकार हो! मुझे दे मूढ-भक्ति कन्हाई की!

झूम-झूम कर गाओ मेरे गीत कन्हाई के-कि सुधि न रहे बाकी! रोम-रोम है प्यासा! युग-युग की प्यास है बाकी! जन्म जन्म की भिखारी आया है द्वार कन्हाई के! अब तो मिलन होकरही रहेगा! लौटकर गाँव अपने, जाने वाला, सुदामा नहीं हूं मैं! जो भागेगा मुझसे दूर, तो छीन लूँगा मोर मुकुट सब इसके औरपकड़कर बालों से बिठा लूंगा पास अपने! देखूं कैसे भागता है यह छलिया! लिपट जाऊँगा उससे! समा जाऊँगा उसमें! अब कि जो हुआ मिलन तो बिछुड़ना हो सकेगा नहीं! अरे मेरे कोटि-कोटि कन्हाइयों! मुझे अपनी भक्ति दो! आशीर्वाद दो!! प्रार्थना करो मेरे लिये! मैं तो भक्त हूँ तुम्हारा! मिला दो मुझे मेरे कन्हाई से!!

हरि ॐ नारायण हरि!!

VED CHAKSHU :

THE GATEWAY OF COSMOS

[Shradheya Swami Sanatan Shree Ji has for the first time in the history of Indology and Cosmology made clear the true meanings of Maya, Ksheersagar, Brahma, Parbrahma, Devaloka, Brahmand etc. which are frequently used in the field of Spirituality with always varying nuances and confusions. The terminology is the same but their clear cut scientific alternative terms to comprehend the concept of cosmology that are same in spiritual field but utilized by the great Seers of yore only as examples in vedic scriptures are provided by his holiness Shradheya Swami Sanatan Shree Ji here for the first time. According to Shradheya Swami Sanatan Shree Ji, the following is the terminology:

Maya= Gravity

Ksheersagar= Gravity-less Zone; the Space

Brahma= Tinniest indivisible part of the matter; the tiny ball, absolute Atom

Parbrahma= Radioactive Atom that can cover even the whole Universe

Devaloka: Galaxy

Brahmand: the Universe

Rudragni= Cosmic Fire

Rudra Valaya= Cosmic Arch

Maha Pralaya= Total Decay; Complete Destruction of the matter; Dissociation of matter into atoms

Ulka=Asteroid; Meteoroid

Dhoomketu or Puchhal Tara= Comets on the path of total decay

Pashupataagni= Cosmic Fire

Pashupatastra=Cosmic Warheads

Brahmaastra= Atomic Warheads

Devayaan= Space Ship of gods

Indrayaan= Space Ship of Lord Indra

Sudarshan Chakra= the Cosmic Wheel

Etc.

-Translator]

My dear devotees!

Today I, being your devotee, salute you all great souls full of Faith and Devotion that moves me always upto a great extent. Knowledge, whatsoever may be great, if it is devoid of devotion and faith, is mere distraction from the Truth. It is disgusting and misrepresentation. Faith and devotion are higher and greater than mere knowledge! So, you all!! As the Sanatan discourses delivered by me are being listened by you all without any 'if and but', without any 'questions to ask and doubts to dispel' simply because you all are full of that faith and devotion!

Your faith and devotion is much greater thus, than my knowledge. Kindly bless me also so that the almighty Shri Hari make me a true devotee like you!

Today, I shall tell you how all the planets, Nakshatras etc. are created and creation took place through the Yajna!. How the earth came into existence and how the life was transported to this planet Earth and also, as to how planets proceed for Mahapralaya (Decay & disintegration) and how some of them without instead of proceeding for decay, obtain the Sanatan form by adopting Rudravalay (Cosmic Arch)!

Sun is a big burning ball according to modern science. It is subject to continuous blasts. In similar fashion, once upon a time, there was a severe blast i.e. big bang in the Sun. Because of this big bang one portion of the Sun was broken and severed therefrom. The portion severed from the Sun was also a burning ball that again divided itself into two parts due to another blast therein. One part of the same became Earth and the other one, the Moon. Both the parts started cooling down slowly and slowly. Then, Earth started revolving around Sun and Moon started revolving around the Earth. The hot wax, when starts cooling down, there appears a solid layer thereon in its surface. In similar fashion, there appeared a solid layer on the periphery of the Earth. The vapours cooled down below the solid layer and became water. Thus, there appeared huge oceans on the Earth. Again suddenly there appeared single cell creatures i.e. amoeba and bacteria in the sea waters. Then these creatures invaded the Earth. Slowly, slowly these single cell creatures became double cell creatures and from two cell creatures, became all of a sudden multi cell creatures like we people etc. etc.

My dear friends, this is the story that science tells you in the name of evolution. This is all rubbish and has no head and tail. When the Author Sanatan corners them, all such scientists have no answers.

When they were asked that O Great Scientist! if the Earth has come into existence like this, how were the other planets produced and came into existence? The answer is absent.

Again asked, Let suppose the Earth is separated from the Sun then tell us what exactly 'Sun' is. They said "a burning ball, an atomic reactor, millions and millions times hotter and bigger then any of the biggest reactor on Earth." O.K., "then, is it not true that in such a heat, the matter cannot remain solid or liquid? Is it not correct that in such a heat the matter will get decayed into atoms *suo motto?* There cannot remain even any element in such a situation!" asked by your devotee Sanatan.

"Yes we agree with you. Matter shall always split into atoms in such heat. These atoms may further become radio active and cosmic due to such a high temperature and blast."

"Then my friends, whatever supposedly separated from the Sun due to the so called blast that must be a mass of radio active atoms."

"Undoubtedly, certainly", they said.

"Thus atoms when started running due to blast into the space then there cannot be any decrease in their motion because of absence of gravity in the space. It is the gravity only which is responsible for friction of the atoms that causes the reflection of energy and causes the decrease in motion."

'Yes, quite correct,' they admitted.

Then my dear friend, if something was alienated from the Sun that was supposedly the mass

of radio active atoms and the atoms retained their motion in the space and thus crossed, space while traveling. They could not stop themselves into the space. Then how that mass could have become the Earth! It is clear that radio active atoms fighting each other, could have crossed the space and must have reached to different planets that are distant, Crores of light years from each other and there, the gravity of these planets might have reflected their energy and diminished their speed. What do you think then, one atom at the distance of Crores of light years from the other must have telephoned the other atom and asked, O brother, where are you? and why are you there? Don't you remember that we were supposed to get together in the space on a particular place to join ourselves and become Earth?"

"Yes, my dear friend, if this is your science then what are the gossips? If this is the achievement of modern science then stories like Tota & Maina, (the he parrot & the she parrot) etc would be greatest achievements. Friends, the whole modern scientific society of the world is not capable of answering the questions of your devotee, Sanatan. They become shameful due to their so called scientific explanations of evolution."

Now listen what the holy Sanatan, Vedas and Gita say: According to them, the creation takes place into gravity less zone, the Space (Ksheer Sagar) through Yajna, in the *"Hiranya Garbha"*.

Bravo! Long live Sanatan!! The determination for the Crores and crores of years remains infallible and the scientist of today becomes fallible. Amazing, great, the story of big bang theory on which many awards were distributed, the same becomes rubbish in front of the truth revealed by Sanatan.

Why the light ignited? why the fire spread? Because, the subtle atoms (Sookshma Brahma) when scattered out of decaying matter, the subtle space around them was destroyed. When these atoms were in the matter, they were surrounded by subtle space (Ksheer Sagar) and then the gravity (Maya) was ineffective. But as soon as the space diminished because of the scattering or dissociation of subtle atoms, the gravity became effective and started surrounding the atoms. Now what should the subtle atom do? Atom is immortal, but there should be decay due to gravity, then how he should keep intact its immortality? This is how the atoms become radioactive to counteract the effect of gravity and thus the radioactive atoms starts taking the large form. Atom expands, atom does not break. There started appearing many limbs of the atom in the form of electrons and the same took form of enlightened one to counter the gravity and started revolving like Sudarshan Chakra and got above up. In this way the same atom after counteracting the gravity came into space again, it became quite and took the same subtle form of the atom. This is the way in which innumerable atoms continuously join in space. These conjoined atoms takes form of tiny small, small balls in the space. These small or subtle balls run around in the endless space and continuously conjoin again with the similar atoms in space that are coming therein after defeating the gravity of any other planet. In this way, this smaller ball takes the form of greater one and becomes the asteroid. If these asteroids enter into the gravity of any of the planet, it is sure to get destroyed on that planet that attracts fatally due to its heavy gravity. However, if these asteroids are lucky enough to refrain from entering the gravity zones of any of the

planet, slowly, slowly, through the process of creation above, they take form of planets themselves. In this way, in the space in "Hiranya Garbha", the Universe, a subtle atom which is smallest, tiniest point, takes shape of a planet and thus the planet is created just like a tiniest part of semen takes shape of a child in the womb of a mother having "Ksheer Sagar" that is (space) therein. This child is also created in the womb of a mother in space through Yajna and in the same manner in which an atom becomes a planet in the "Hiranya Garbha" (Universe) in the space through Yajna.

Look! It is none else but nature which is Sanatan! Its all rules are Sanatan! Planet comes in existence in like manner in which a child comes into its existence. This is the view of this author Sanatan! The Nature Sanatan!! Please ask the Nobel Prize winner scientists to disprove or ignore this view of Nature!!!

As the womb of a mother is affected by the gravity of a planet, she gets miscarriage & not the child, in similar fashion, when a gross body of atoms i.e. Asteroid or (Meteoroid) when gets affected fatally with the gravity of a planet and meets with its premature death. It is real Sanatan Darshan (Philosophy)! Acknowledge now! What great Dharma you have! This is the highest peak of the science! The Dharma of Atman, the Dharma of Nature – alone, is the Dharma! Rest, that are called religions like Hindu, Muslim, Sikh, Christ, Bahai etc., are the sects of only. And a sect can never be the Dharma. These are Dharmas in disguise like dramas.

Brahman! Vishnu!! Mahesh!!! Dharak (Beholder, Progenitor)! Creator, Protector!! Destroyer!!!

Subtle - Brahma (atoms) of Brahma when got associated in space with the help of the power of

Vishnu, the creation of new planets is witnessed. Atoms took form of asteroids and meteoroid and these took form of planets that start revolving & orbiting around to maintain the balance of their individual gravities with the gravities of other planets in the cosmos. When an asteroid falls on a planet, the mass of that planet gets increased by consuming the mass of asteroid leading to the increase in its gravity of the attracting planet too. Hence, it has to widen continuously its path of orbit due to its increased gravity backwardly from the bigger planet whose it is orbiting to maintain the balance of gravities. The load of gravity, thus continuously go on increasing on any planet due to continuous fall of asteroids etc. The live example of this phenomenon is our own Earth. The gravity of Earth is going on increasing continuously and this fact is acknowledged by all the scientists of the world that this is due to fall of asteroids and meteoroids on earth resulting into increase of mass of the earth and gravity of the earth & there is slow but tangible departure from the earlier or enlargement of the earlier orbit backwardly of Sun around which the earth is orbiting. This is true for any planet in the cosmos. The gravity of a planet go on increasing & it goes on moving on backward orbit to balance with the gravities in its family or complex of planets from the central planet or star whom it is orbiting by subtle enlargement of the orbit. Then time comes when the planets while shifting or moving its orbit backwardly come at a point to balance the gravities in its own family or complex (just like solar complex or Solar family for Earth, Jupiter, Saturn etc.) where they are unaware of the fact that they reached the point where giant planet from another complex having very heavy gravity attracts it and nothing could be helped and then it goes on the path of destruction like

meteoroids or asteroids in furtherance to increase the gravity of the giant planet of the other family/ complex that attracted fatally this planet. The other way may be that when a planet is at the brink of being alienated from the family by being at the remotest point of the orbit in family/complex and it get sudden & heavy bombardment of meteoroids or asteroids on it that raises its gravity to the level where it is unable to maintain the balance in the family/complex and then it goes out of the family or complex into space with a very high speed due to its gravity and only to be attracted destroyed by a higher gravity planet somewhere else in any of the other families/complexes.

"Balance of gravities with different planets of complex was lost. Total gravity of planet fell on the planet. Total gravity resulted in total decay of that planet. Thus entire planet disintegrated into radio active atoms due to absolute gravity. This is MAHA-PRALAYA i.e. Total decay of matter and dissociation of all the subtle atoms that constituted the planet".

Thus, when the planet lost the balance of gravities and all the gravity come on it itself, the planet got decayed and turned into subtle atoms. These atoms become, thus, radioactive and struggled with gravity and fled away to calm down ultimately in the space. Again these subtle atoms started associating in the space and creation of small tiny balls started again in the space. The association of atoms to form some matter in the space is creation and decay and dissolution of a planet in gravity is Mahapralaya. This is the cycle of creation & destruction in the cosmos.

Dhoomketu, Puchchal Stars i.e. Comets are, in fact, the planets that have broken their relationship due to their own heavy gravity from their complexes and on way to some different star complex of some

other galaxy even to get dissolved completely and this is his being on path of continuous decay. The array of radioactive atoms dissociated from them, though several light years away from us, are witnessed by us as a continuous array of illuminated bar of a *Jhadu* (Broom) or a beam of duster. The diffused beam on tail in illumination is nothing but the gather of the atoms in space that are dissociated of the planet on path of complete destruction or death.

The westerner scientists are under illusion that those comets i.e. planets (we call them on path of complete destruction or death as above) are also continuously orbiting in the cosmos. This is totally baseless hypothesis of theirs. If these comets are really orbiting, there would have been existed orbiting other planets of those families or complexes alongwith them and the orbit must be the defined

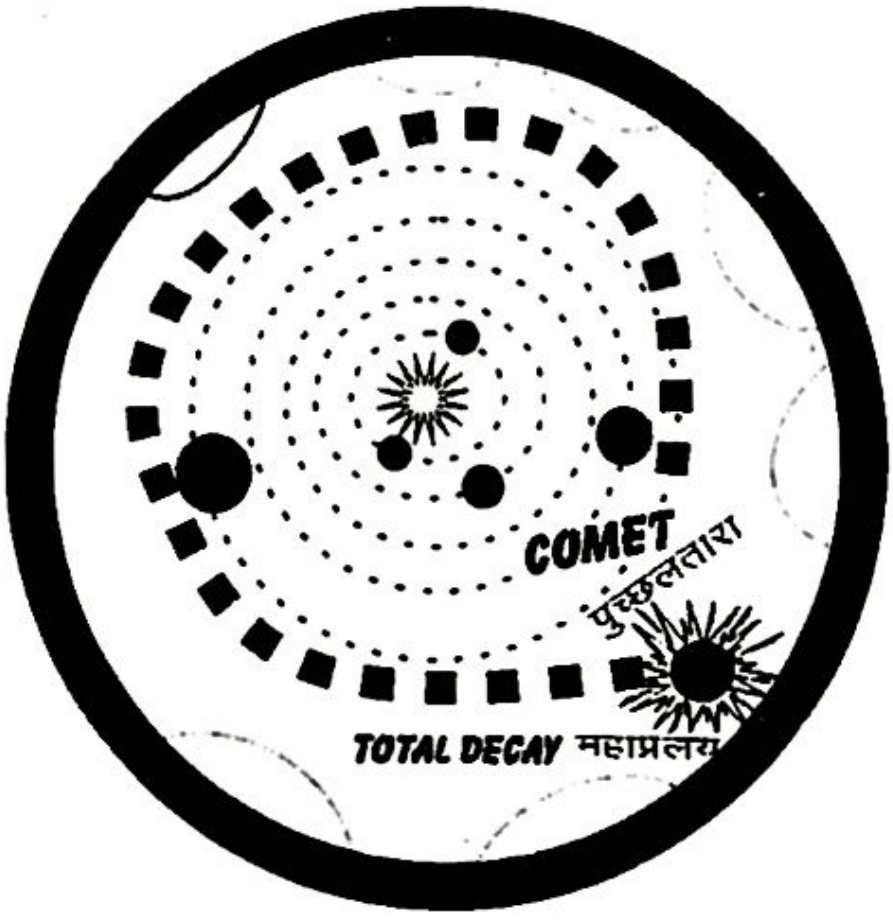

orbits for each such of the planets & the comet or Meteor in their respective complex. No such fact is in existence there. These comets or Meteors are the dying planets & the hind smoke seen as a tail or beam of light is the set of dissociated atoms being radioactive in gravity on path of space to cool down & be available to associate for new creation therein. Hence, the decaying planet following the path of gravity (Mahapralaya) in way of Dashanan (i.e. the way where every other thing is consumed fast by exploiting many fold without caring for its proper replacement or replenishment in the nature and feeling no responsibility therefor) is the comet or big meteor whose life is going to be over soon.

The old custom throughout the world is that whenever one goes on travel for some good cause such as business or alike and if he sees such decaying comet/Meteor on his path in the sky, he treats it to be very inauspicious. The reason is simple. This lore of cosmos suggests that witnessing the path of a dying planet itself indicates the travel path of a person unfruitful and thus advised to be abandoned. How the dreaded path of a dying planet can signify the fruitful path of a traveler on earth! My westerner friends must review their theories!

In this way, in the limitless gravity less space, innumerable galaxies having innumerable complexes in each are orbiting around the space and one can see that somewhere some planets are being created in the complexes & at the same time somewhere some planets are being grown to reach their span of life and the some old planets who have attained their life span are dying by following the path of Mahapralaya by leaving their own complexes (families) and on way to some other complexes than their own due to their respective gravities and going

to disintegrate into the subtle atoms, just as we witness on earth that somewhere some child is being born, some are being brought up & progressing in life and somewhere, some old people are dying simultaneously. The rules of Nature are universal and whatever is happening in the cosmos, the same is happening in the lives of ours too. That is how, we are Sanatan, the followers of Universe, the cosmos. We can never alienate ourselves from these laws of Universe being Sanatan Dharmi or follower of Sanatan Dharma, the religion of Nature.

Thus, we know that as the planet disintegrates into subtle atoms due to cosmic fire (Pashupatagni), accordingly our bodies should also be disposed of. This is why, the Sanatan Dharma guided the humanity and ordered its followers to put a dead body of an old person on a pyre and set it on fire to dispose it of into tinniest particles like atoms to provide or surrender them back to the nature for its use for further procreation. At the same time, Sanatan observed that a small asteroid does not face the brunt of cosmic fire to get destroyed but add to the mass & gravity of the planet in the same complex/ family being fatally attracted by the planet in consideration, the Sanatan ordered its followers not to put the small children met with ultimately premature death, on pyre and expose their body to the fire but surrender to the nature as it is either by burying them under soil or leaving the body into flow of running water like rivers etc. Sanatan ordeals can never go against the nature. Sanatan further ordered that since no mature planet dies in its own family or complex, no person should die while remaining in his family and he must follow the law of nature by going out in exile and embracing Sannyas & being Vaanprathee in his last days when he is supposed to

loose his life at last. Do you need any other or more evidence about Sanatan's being the follower of the true Dharma (i.e. religion) of Nature and its being or dealing at fullest in consonance with the law of Nature?

Was that not a fool who said that the people started worshiping the fire & other gods because of fear in primordial times? O! My dear devotees! Remove your blinkers & put them off of your eyes & brain both that were provided to you by the so-called scholars of Indology in the world, especially from the West start thinking on your own! Leave the scripts that are untrue! Leave the crutches of the western knowledge & understanding of our Holy Vedas & try to grasp the truth of the cosmos & laws of nature enshrined in the Vedas & perceived & protected by Sanatan now that being unfurled through these discourses before you great souls! The height, the peak of science is the 'Sanatan', today! The peak of knowledge & etymology is the 'Sanatan', today! Only 'Sanatan'! Only 'Sanatan'!! Everywhere 'Sanatan'! Everywhere 'Sanatan'!! 'Sanatan', alone & nothing else!

Dear Devotees! The knowledge of lord Sanatan is like Vast ocean! I am telling you only the background of the same! I can not illustrate it more now, else, even the story of background may not be completed to make it The Gateway To The Cosmos, the Space, the Lord Sanatan! Let me, for the time being simply introduce it here! The whole scenario may be described at some other appropriate time to suit the same, again & again.

Till now you could know how God! Atman! Krishna! Lord! Om! Create the Universe through Yajna! The Secrets of creation of Vegetables through Yajna is revealed in earlier discourses! The secrets of creations

of various Planets & other bodies etc. through Yajna is revealed now before you!! The path is shown as to how you can transform your bodies alongwith yourself into light to attain the title of 'Yajneshwar' itself. This all, I am doing in brief as the subject matter is very heavy that may even cross over the head of some of you. Let me describe the holy story of churning the space (Ksheersagar Manthan), the Space Research.

But before that, let us recall for a while the evolution theory of Charles Darwin! According to which the Amoeba & Bacteria are our forefathers! (?)! According to him, single cell creatures were produced *suo motto* according to their Moods in the oceans. When their mood got disturbed, they invaded the soil or land on earth from the water? Then they started to produce multi cellular creatures out of their single cellular community. Some of them became vegetables whereas some of them became the real moving creatures full of lives of various degrees. Then those tiny creatures became Mammals! Thereafter, their sizes started decreasing like monkey. And Monkey, ultimately, became human beings like you & me! Is there any logic in it?

The so called beautiful story (theory) of Dr. Darwin has now been thrown out into dustbin. It was admitted by the scientific community with the condition that if in future, single cell could produce a double cellular thing; the story may be entertained as one of the plausible theories of evolution. However, the researches therefrom till now reveal that no single cell could develop into a double cell element during the last 200 years or so. Hence, there is no question to believe this so-called Darwin's theory or hypothesis of evolution. The other hypothesis of Dr. Darwin is beyond understanding or comprehension that when

the gravity of earth was lower in earlier ages, the Amoeba & Bacteria could develop & produce the creatures like the mammals of huge/large size but why the size of creatures gone down with the increase of gravity of earth that was conducive to raise the size of the creatures, according to the law of gravity, the law of nature, the law of science? Can the flow of Ganges be reversed and be witnessed from Gangasagar to Gangotri, Gomukha? Not at all! Its all rubbish! We all know, higher gravity → higher decay, higher shape & Size; Lower gravity → Lower decay, lower shape & Size. For a moment, let suppose the monkeys produced the men, then why this type of evolution or production stopped now? Monkeys are still there and I hope, their reproductive organs have also not gone on strike. They are functioning well as far as their own progeny is concerned. Let us relax our demand. O.K. Don't produce men, O Monkey! But kindly produce at least goats, hens, rats, etc. if you were capable of producing men at once upon a time according to Dr. Darwin! That too, in adverse and non-conducive environment of Earth & its gravity!! Alas! Hundreds of such questions can not be answered by the Darwin's theory/story. That so called theory has failed but the view of and knowledge recorded by Sanatan is infallible. It gives answers to all such questions. The whole world has no choice but to salute the Sanatan!

According to Sanatan, the life was not suddenly evolved on the earth but it was transported from some other planet of some other galaxy. Yes! It was inter-galaxy transfer of life, as that planet full of life therein that galaxy was going to die soon! This topic would be taken up later on. But, let me answer the query first that how the life was created? The answer is, through Yajna and not through Amoeba

& Bacteria. The creation through Yajna is possible only in space, the gravity less zone. The atoms can not be integrated in gravity (Integration of atoms is possible only in space (gravity free zone), and never in gravity). We can disintegrate the matter into atoms but we cannot integrate the atoms to transform into the molecules of new matters. Only Pralaya, the decay or destruction alone is possible in gravity & nothing else. Recreation or re-procreation is possible only in (gravity free) space. Till the space is available intact and protected by Atmakund, the soul, the dust or ashes can be recreated and transformed into vegetables through yajna. But the ashes can not be transformed into vegetables or blood etc. in the gravity full zone by any means. It is rather impossible in gravity. That's how the Vedas have always discussed gravity, the Maya, continuously.

The man overpowered and controlled the sound. He has made supersonic planes that run faster than the speed of sound even. But he, till now, could not control & overpower the speed of light. Why? Because, without having control over gravity, you cannot get even the speed of light! If you could control the gravity, your plane would be weightless and you can get the speed of even more than 1, 80,000 miles per second and you can travel unimaginable distances too in the cosmos at that speed or more. Then, you can create space i.e. gravity less zone and there you can also transform the dust particles or ashes into Blood, Gold, Diamond, Cakes, Water & other things according to your sweet will? Is it not amazing! However, it is a scientific fact & infallible truth. Now, you decide yourself, what type of chaos & thunderous situation would be, if the control of gravity is given into your hands? This is also ultimately true that you would be immortal if the control of

gravity is in your hands. No scientist of the world can disprove this fact. This is how, Maya, the gravity is given so much importance in Sanatan. According to Sanatan, the world is made up of those tiny particles and that atoms are unitary only. Thus, the atoms of dust or ashes, atoms of blood, atoms of Gold etc. are same atoms and there is no difference between the atoms of one kind of item from the atoms in other kind of item in the world. This is how "Eko Bramha Dwiteeyo Naasti!" Atom is one! Brahma means tiniest indivisible part of the tiniest particles which is subtlest one, the atoms (Please do not get confused with our this atom with the atom understood in physics). And Para-Brahma or Brahmaa means the widest of widest in which all the families of planets, complexes & the whole universe is beholded. In this way, one should first understand the meaning of Brahma & Brahmaa (Param or Para-Brahma) clearly & unambiguously. To make it more comprehensive, let me show you the Sudarshan Chakra (The Divine Wheel) of Lord Mahavishnu, the Sanatan! To see that you have to get awakened the Divine eyes of yours that is known as Jyotish or astrology. **"Vedasya Chakshurahu"**!

According to Sri Sanatan Jyotish, first of all the life was transported & organized by Gods on this planet Earth. The question before them was, what should be system of Time Determination. Which could be the principle that could be acceptable and applicable to all the planets, complexes & galaxies in the Universe? Then, they made the Sanatan Principle of recognizing the time for indefinite period of time! The Principle is "Time is untrue! Motion (speed) is true!!"

Therefore, the unit of time could have been none else but that in terms of speed or motion only. The

gods, thus, discussed at length and devised the system of time recognition for the people on earth. This system is such that it can never fail or be disturbed.

They declared that one revolution or spin around its own axis of a planet would be called one day & night of that planet. The same planet is also orbiting around some main central planet/star of the family or complex that is the chief of the complexes or family. Hence, one revolution or orbit of the same planet around the chief planet of star of the family/ complex would be called one year of such planet. Thus, they defined the day-night & a year of a planet. This definition holds good for all the planets, stars, galaxies etc. for indefinite period of time. Why? Because, the orbit or spin takes place either in spherical or ELLIPTICAL shape having a center therefor and this path of orbit has always 360° at center when one revolution completes on any point at the periphery of the path. It will remain 360° only, no matter the periphery of the path or the orbit is large or small as we all know that the periphery increases in direct proportion of increase of gravity on a planet due to continuous fall of asteroids etc. on it as discussed earlier. The other thing is this that every planet has a different periphery than the other but every planet has to revolve around the center & complete 360° without fail to make one complete orbit i.e. its own one year. So is the case for day-night on a completion of its spin or rotation around its axis which becomes center therefor. Hence, the Sanatan system of time scale is universally infallible and for indefinite time too.

Let us take example of our Earth. When it completes its one spin around its own axis, it becomes a Day-Night duration of Earth. When it

completes one revolution or orbit around its chief of the family i.e. Sun, it becomes one year of the Earth. There is further a correlation between spin & orbit. When it completes one spin around its axis, it also completes roughly one degree on the path of its orbit around Sun. Hence we can understand that one year of Earth also comprises of almost 360 Day-Night durations roughly. To have further subdivisions, we divided these 360° into 12 equal parts of 30° each and such each division is given a different name

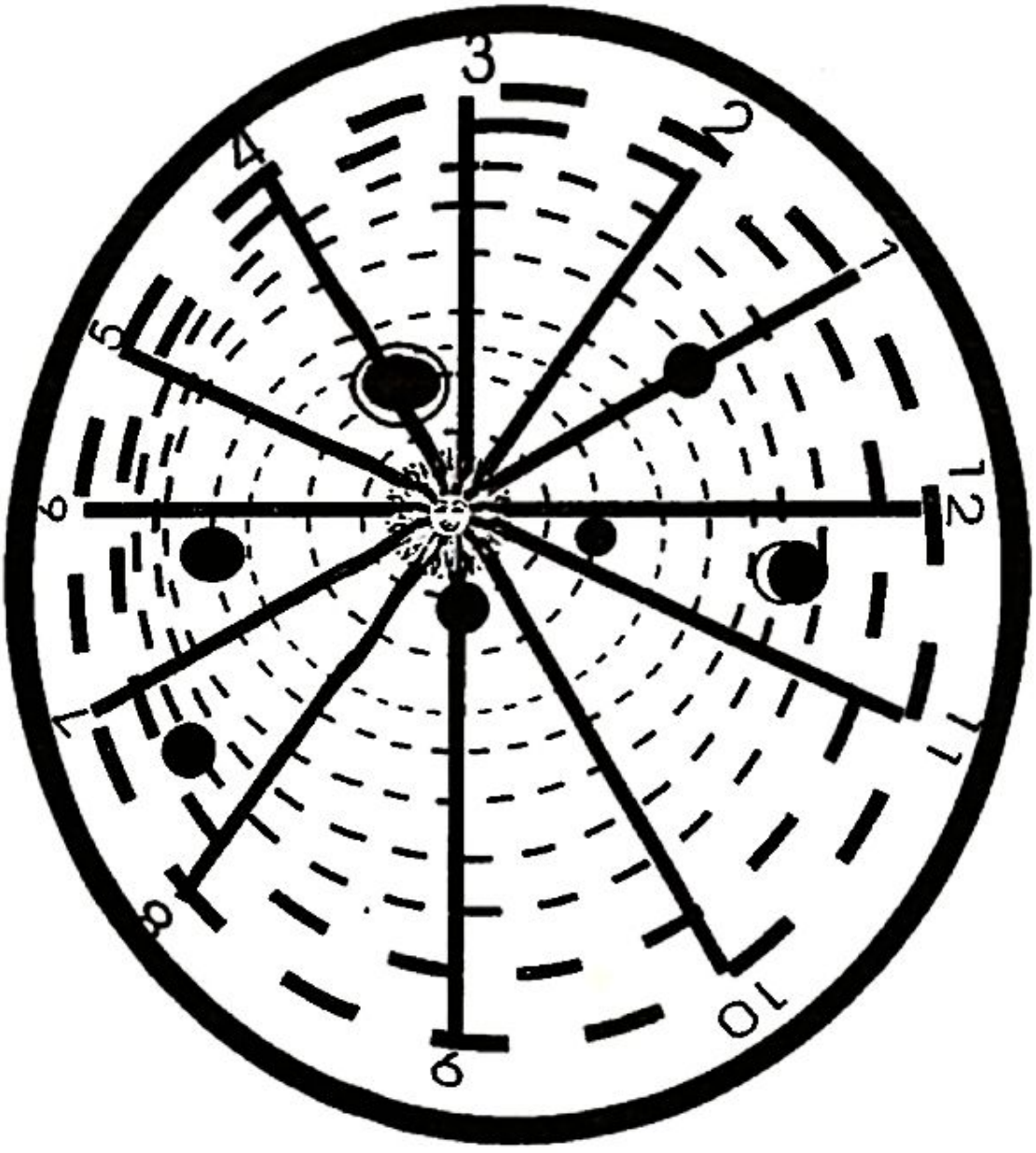

to distinguish from each other. These 12 parts of the zodiac are called Rashis (signs) and the earth's solar year is complete with these 360° traveled by earth on its orbit.

Thus, the proportionate time scale is clarified for each planet. Let us see the relational time scales of the earth with other planets. Take Jupiter for example. While Jupiter completes one orbit around Sun, the Earth completes roughly 12 rounds of its orbit around Sun. Hence, we can see that one year of Jupiter is almost equal to 12 years of earth. Similarly one year of Saturn is equal to roughly 30 years of Earth. This also means that when Jupiter completes its journey through a sign or Rashi (30°) on zodiac, the earth completes around a year and when Saturn completes its transit over a sign, the earth gets roughly 2 and half years completed.

This is not the end of the story. The Sanatan gods declared that even Sun is not static. It is also spinning and orbiting around something alongwith all the family members or the whole solar complex in a similar fashion in which the Earth though being orbited by Moon, is orbiting the Sun, alongwith Moon. In the same way, the Sun (alongwith the whole solar complex) is orbiting the Devalok, the galaxy. In fact, our own galaxy has many complexes like solar complexes and all the complexes like solar complexes are revolving around the Galaxy. The concept of Ekadash Rudra (11 solar complexes) in our galaxy is not thus, a myth. At least, there are 11 solar complexes were known to our forefathers to exist in this particular galaxy.

By the time, thus, Sun completes 360° i.e. one orbit of Devalok or there is one year of Sun, our earth completes 360° by 43,20,000 times around Sun. This simply means that one year of Sun is equal

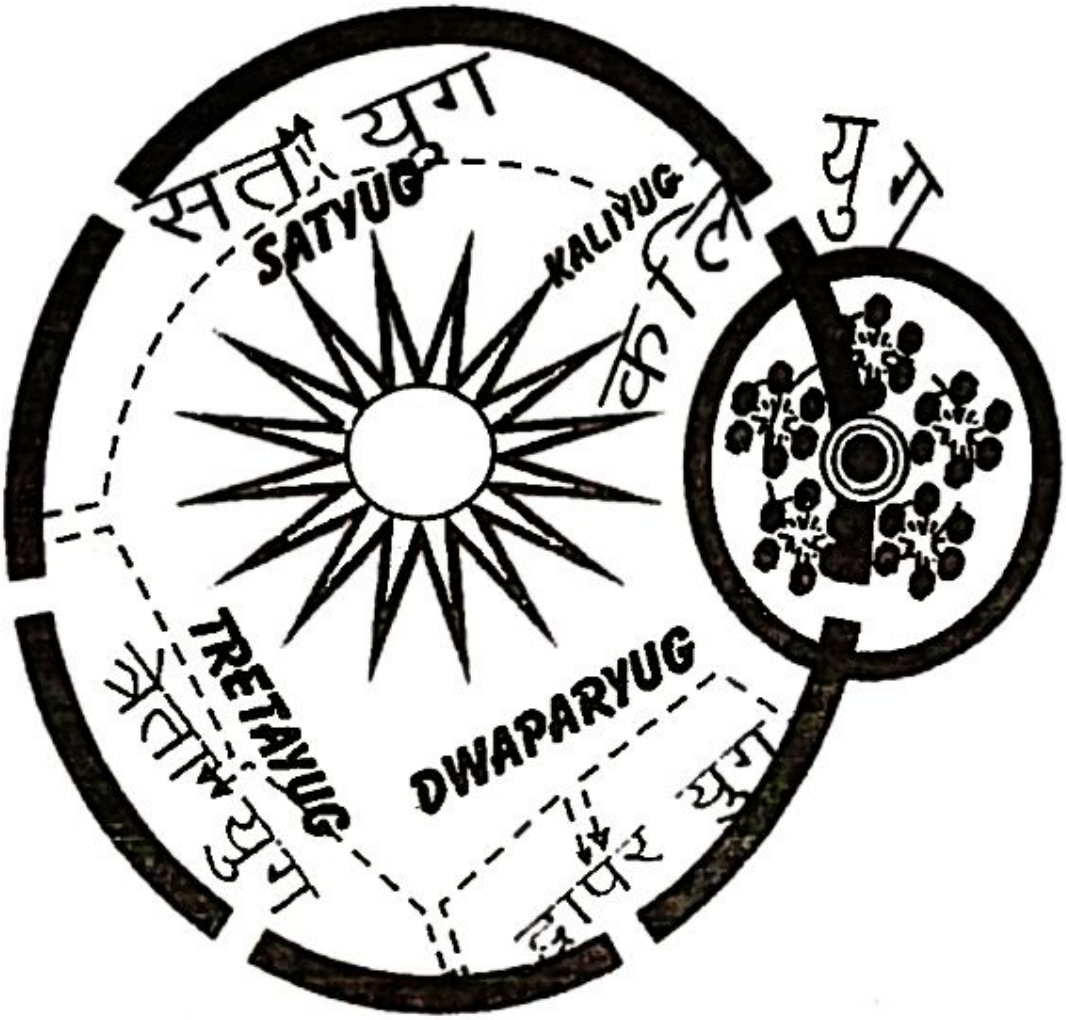

to 43,20,000 years of the Earth. As we divided the orbit of earth around Sun into 12 divisions to have 12 months, the orbit of Sun around Devalok is also divided but only into 4 divisions. These 4 Divisions are called Yugas, namely Satyug, Treta, Dwapar & Kaliyug respectively.

Again the Sanatan gods said that the Devalok, being orbited by solar & alike complexes, is also not static but moves around some other lok called Brahmalok. Thus innumerable Devaloks alongwith their, respective constituent complexes like solar complexes continuously revolve around the Brahmalok, the Universe. By the time Devalok completes its one year, the Sun completes its 1000 years and Brahmalok completes half of its spin.

Meaning thereby, the Day-night span of Brahmalok is equal to 2 years of Devalok and that in turn, equal to 2000 × 43,20,000 years of Earth. Since, there is a co-relation between spin & orbit and one spin is equivalent to 1 degree of orbit, the year of Brahma would be equal to 360 spins of Brahma. In terms of earth years, thus, **one year of Brahma is equal to 360 × 2000 × 43,20,000 years of earth i.e. 31, 10, 40, 00, 00, 00, 000 or 31104 $\times 10^{10}$ years of earth.**

The Sanatan gods further say that Brahma has been prescribed the life span of its own 100 years and out of that, 50 years of Brahma has elapsed and on first day of 51st of Brahma with 13 Ghatis 42 Pal 3 Vipal & 43 Prati-Vipal had also elapsed of Brahma since they transported the life on this planet earth from some other planet of some other Galaxy. This gives the concrete idea about as to how old is the present time determination system devised and when transportation of life took place on this planet earth as well.

Let us move to Sanatan Lok Mandal whose other name is also Sudarshan Chakra, the Divine Wheel. The meaning of Sanatan is eternal; the one who does not orbit around any other item and also does not spin on its axis even. Since, it does not have any motion, it is beyond the concept of time as defined earlier & there can never be any unit of time therefor. Enumerous Brahmalokas are orbiting or revolving repetitively around this Sanatanlok. Enumerous Devalokas are orbiting or revolving repetitively around their respective Brahmalokas. Enumerous & various complexes like solar complexes are repetitively revolving around their respective Devalokas. Various solar complexes are having their family of planets & satellites. Various planets

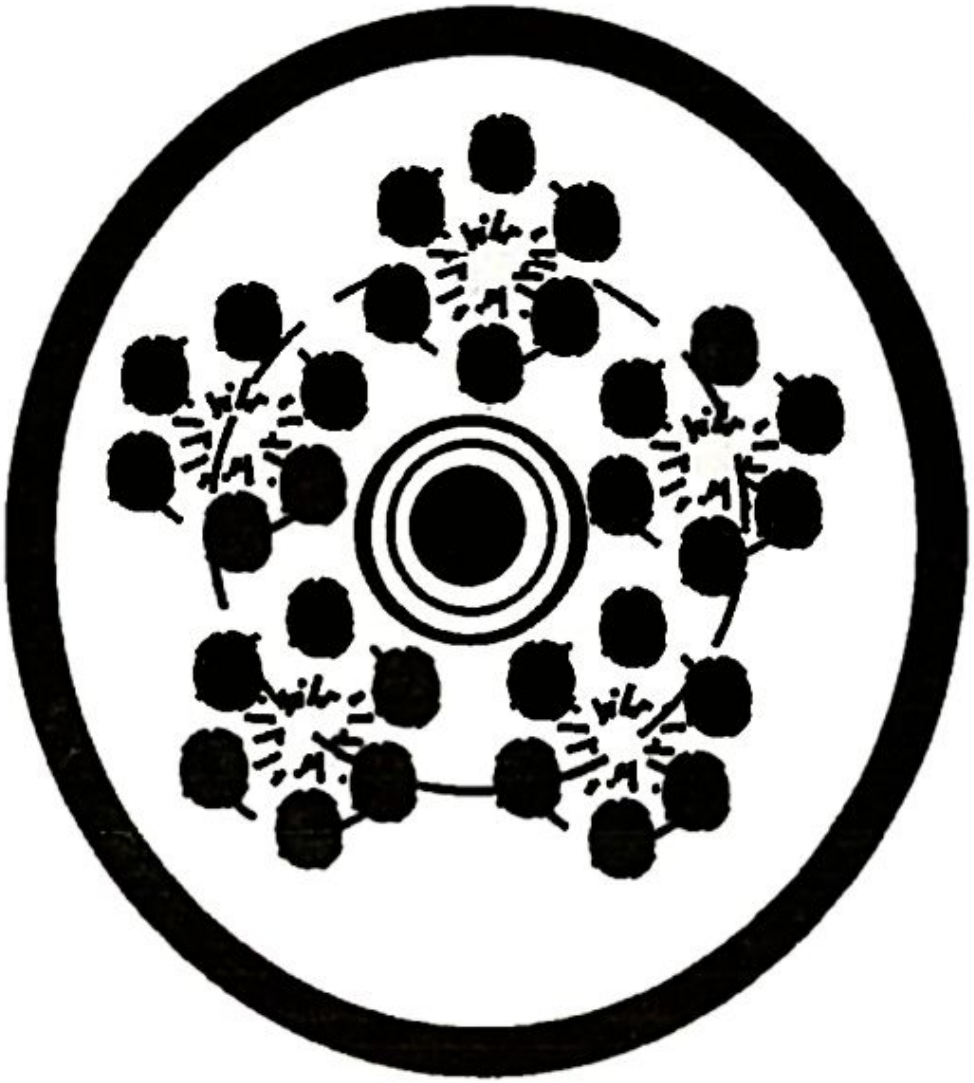

alongwith their satellites are revolving repetitively & continuously around their respective solar complexes. Various satellites are revolving around their respective planets and we creatures individuals also orbit around their respective satellite or planets repetitively. Similarly, various cells in the body of an individual are orbiting around respective individual repetitively and continuously. Each cell of the body of an individual is also not the last entity. Various & innumerous subtle atoms (Sookshma Brahm) are orbiting each cell over here in the body. Well, this revolving wheel of wheels is the Sudarshan Chakra of Lord Mahavishnu that is depicted here before you by your devotee Sanatan the author. Lord Mahavishnu, The Sanatan, is the beholder of this Cosmic Wheel i.e. Sudarshan Chakra

in the space. This is Su= Beautiful, Darshan = Scene.

Since the whole universe is full of revolutions, Sanatan Dharma has given utmost importance to the orbiting or revolving around i.e. Parikrama. This phenomenon may be witnessed in all of our rituals, may it be yajna, Marriage, worship or any other Samskar including the death on pyre. All rituals are declared fruitless devoid of Parikramas or revolutions. We can not ignore the scene of nature being part of the same.

This is no secret that the westerner scientists used to treat Sun as static till very recently, Now, their opinion has also changed. According to them, the Sun is moving to the destination unknown. We say, O! Great Scientists! Why are you still in dilemma! leave the hesitation! Accept the other facts too of Sanatan about Sun! Destination or direction can never be unknown because Sun can not move

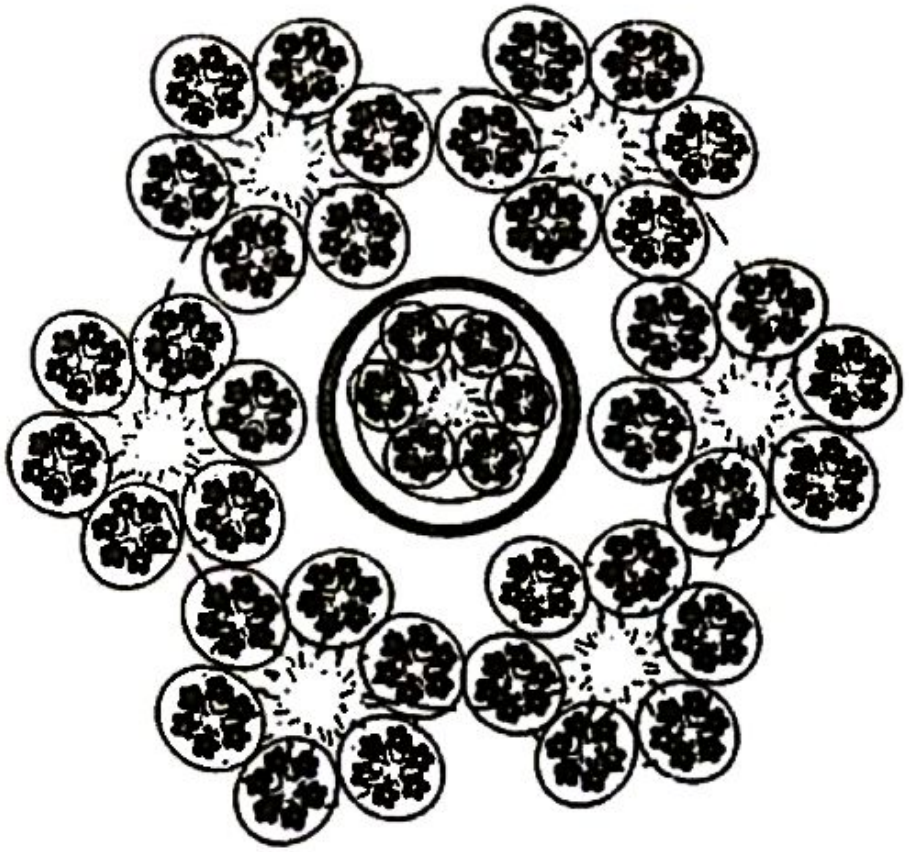

according to his sweet will. It has to follow the Sanatan law of gravity or Nature being the part itself of the Nature. It has to move by following the spin & orbit motions like others. It can not move sometimes left & sometimes right or up & down according to his mood. It has to follow the law of balance of gravities. It has to revolve around Devalok as discussed earlier in these discourses.

Why should they listen to us? What exactly is our existence in their eyes? The history of Bharat begins with the pronouncements of some so called historian like Patwardhanas etc. There are no great periods of Vedas, Ramayana, Mahabharat, Geeta etc. in our so called history books. This is the real difficulty in ratifying the truth enunciated in Vedas. They feel that the Vedas etc. have intruded in this country without any authority & thus are not reliable. Whatever is told to you from the Vedas, if some other one says or some other person/scientist says the same thing, the whole world would be amazed to accept it from that very day! No wonder, we celebrated the 5th centenary of Copernicus recently and spent lakhs of rupees on it. We also paid our regards to him by naming a road in Delhi & other places as Copernicus Road or Copernicus Lane. You too, may extend your tremendous regards towards him and make him immortal by celebrating his birthday even (he simply told us around 500 years ago only that earth revolves! around Sun and ratified the observations of Galileo).

This is our attitude to display our gratitude to the persons who could tell the half truths only. However, we are shy of showing any amount of gratitude towards Sanatan who reveals the whole truth of Vedas before you & forever. Govind Hari! Narayan Hari!!

Ask these greats that are cursed by Vedas that if the Earth was not revolving around the Sun, how was it possible to have the Sanatan System of Time recognition since the time immemorial? You have insulted a great civilization & culture and you have destroyed completely the universality of a great country Bharat. You have taken the pride of a nation (Bharat) beneath your dirty feet and crushed it. Wake up now! Atone your sins by restoring the same before you get late. Else, you know, the effigies of Ravan & Hiranyakashipu etc. are burnt every year here to mark the fate of such sinners! Those, who are empowered to utilize all the resources of the country for its welfare, can not escape the charge of making everybody culturally impotent in their great land of God, the Bharatkhand : The burden of restoring it is on you all who desire to have great pride of your nation. Shirking from your this duty will not Do! Do the duty. Take the right Direction from Sanatan. The people would hold you on their eyelids. Every body would worship you like God! You will become immortal & Sanatan by remaining alive as hero in the folk lores for the ages to come! Come fast, Do it. It is your job only. Govind Hari! Narayan Hari!!

Let me clarify one thing more as to why the earth is depicted to rest on the hood of a great snake. The Earth is the planet like earth whereas snake is taken to describe the form & nature of its motion on the path of its orbit. The Vedas are great in telling us every thing in details minute. According to this depiction, we come to know that the earth does not move in its orbit around Sun on a simple linear path but in the fashion in which a snake moves ahead in water. Sometimes it dips, sometimes it comes up over the water level and also moves in a zig zag manner. So is the movement of earth or any planet

on the path of the respective orbit. The secret of it lies in the balance of gravities around pertaining to various & enumerous planets in the complex. It is also manifested in your movement too. You too, move in similar fashion. Just remember your behaviour while driving a vehicle. Even if the road is very clear, you can not steer through a straight line. Your steering wheel follows the law of balance of gravities. This is how your steering wheel is seen shaky all the time. Thus, as the snake moves slightly up & down and slightly left & right on his path in the water, the earth or any other planet also swirls in the same way in the space on his orbital path. This is the signification of being earth shown rested on hoods of a great snake. There has been a great war like Mahabharat that destroyed even many planets in the complex. The Sanatan people tried to identify their culture & civilization thereafter on the basis of these signatures or codes that lost their real significations and then in that process of identification, if majority of them got something else than the truth, this does not imply that there is no real truth or signification in such things! One should not forget that we faced slavery for around 200 years and in those recent times no proper researches could take place in this field because the great books like Vedas etc. had never been the part of the curriculum in education during this unfortunate period of history. Even after independence in 1947, the directionless policy/leadership could not bring it in educational system, nor it could become the subject of scientific researches in Bharat till now. Not only this, if somebody tried on its own to find out the truth in Vedas by setting aside the western view of it, no opportunity or help was provided by the present leadership, although USA is ready to lend his helping

hand on this issue. This is stark reality which is quite unfortunate. Would Bharat become Bharat someday? Govind Hari! Narayan Hari!!

There are repeated narrations of Brahmastras (Atomic Warheads) & Pashupatastras (Cosmic Warheads) many times. Not only there is a mention of Devayaan i.e. gravity controlled space-ship but the whole description of its mechanism is also present there in the Vedas. Surprising is that there could have not been any other way of space-ship with gravity. If you wish, I will give you a brief description of that space-ship to quench your thirst upto some extent. Govind Hari! Narayan Hari!!

The space-ship was manufactured on the pattern of work-system of Sudarshan Chakra, the Cosmic Wheel only. There used to be a commandship surrounded by high speed revolving magnetic controlled balls on each side. These balls were also surrounded by further smaller similar balls from all sides and so on. These balls were having the motions of both types i.e. spin & orbit, in the same manner, the whole Universe is surrounded by same spinning as well as orbiting bodies & complexes and revolving around Sanatanlok. The space-ship due to highly speedy spins & orbital motions, used dispel & neutralize the gravities & go up out of the gravity to enter the gravity less zone i.e. space after taking off. As soon as it reaches the space, its all balls use to constrict & it becomes weightless due to absence

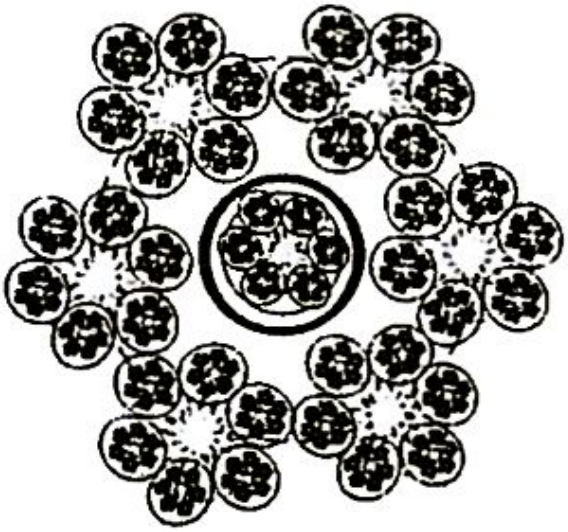

of gravity. However, the momentum gained by it in the earlier stages due to kinetic energy, it used to cross the space at speed higher than even electricity to re-enter the gravity of the desired planet i.e. destination. Again as soon as, the spaceship, when entered the gravity zone of the destination planet, all the balls starts functioning as earlier before the space. There, after controlling the speeds of the constituent balls of ship, it used to land on a big glacier or cold surface of water. These ships could not be landed on solid soil surfaces of a planet because everything around there could have been destroyed completely by the heat generated by the ship while landing. Thus, whenever a space-ship used to land on a planet, lacs of tons of ice used to vapourise for raining and rivers used to get flooded with water. This is how, the people started worshiping lord Indra. There are mentions of Indrayaan, the space-ship of Indra, landing frequently many times on earth in the Vedas.

To treat this description simply work of imagination and fiction, would be a great foolishness. This is true that Vedas are written in verses by the Sannayasin as he was not the perfect scientist! But, whatever science he perceived & visualized, he depicted that in his own creative manner with the use of similis. However, whatever he has told us in mere similis, we could not alter it into anything else till now! Our opinions & beliefs went on changing though! Wake up! Wake up! O Sanatan people! Recognise & identify yourself, who you are! What the great philosophy (Darshan) you have! What type of your ancestors were! Mere tiny part of their vast knowledge is capable you to make most knowledgeable person on earth with your own great philosophy.

"Jyotish, the astrology is one of the special achievements of Sanatan! The child leaving the space in the womb of Mother enters the gravity zone on earth & the astrologer starts mapping the impacts of all gravities that had started affecting the life of that child.

Astrology is the science which studies gravitational impacts on different subject at different times and places. Comparative study of these impacts is the predictive side of astrology.

Today's scientist has not known even what exactly is gravity & of how many types it is! That is how I say that Jyotish, the Astrology would be the supreme science of tomorrow. Just as, nobody can falsify or disprove the fact of death which is due to the effect of gravity, similarly, the importance of gravities on life, can never be diminished.

All is the play of Gravity, the Maya. According to Sanatan the subtle atom transforms into the enlargement of that form capable of even to cover the whole universe. The western view is that atom breaks. Sanatan believes in expansion of atom while western science believes that atom breaks. Sanatan says atom does never break, it expands according to the pressure of gravity and is competent to produce electrons and decrease their number when needed. Atom is one."

The subtlest part of the Universe is atom that is vested with all the powers of the Universe. These atoms qualitatively, thus, are of same kind. To treat them as different entities is a blunder & illusory. These atoms do not conjoin each other but they are attracted to associate. These are immortal. They can never be destroyed. The molecules of any matter can be converted into these atoms to associate into different molecules of some different matter and it

is called re-creation. Thus the wood can become diamond & a stone can become a child. Whatever you think to be a gossip, is a definite scientific fact!

Matter can be changed to light and light can be converted to desired matter, - say Sanatan Vedas.

And this will be the lone discovery of tomorrow, — says Bhakta Sanatan. (Swami Sanatan Shree, the author)

The elements are transformed into pure light with the help of Rudragni (the cosmic fire) by atma and from same atoms of that pure light, the Atma re-creates or procreates the new or other elements of matter etc. Thus, the ashes turn into vegetables, blood, meat or flesh, bones etc. Therefore, element (Tatwa) alone is light & light alone is element. The matter after becoming weightless attains the stage of light.

Therefore light is matter and matter is light, matter can take the speed of light and can travel swifter than light. Spaceship can move with the speed of light.

You know! Kalpavriksha, the Divine Tree is shown upside down! Its roots are above up in the sky and branches are below on earth! Why? Because the atoms gone up in the space to turn into light and when associated there, they constitute many many different molecules of matter and come down on earth through the fall of asteroids/meteoroids etc. that become the gather on earth. This is how the matter incarnate on earth. This is how the Divine Tree, the Kalpavriksha is said to be up side down as we reap the fruits only on earth from the branches of the tree. However, the tree has to take its nutrition through its roots and that are above in the space.

"This only is the secret of Yajna! Atom's transformation into light and then their association for creation to form various kinds of matters! Since light alone is essense and this alone transforms into essential elements & thus, the matter is created!

Atom can expand to any extent. Single atom can cover the whole Universe, says Gita."

It is not desirable to discuss in detail all the scientific achievements of Vedas right now. That should be listened by the scientists themselves. Here I have described the things in nutshall so that you can know what exactly your Vedas are! Now you are on the threshold of or the Gateway of Cosmos. Today, all the scientists are perturbed about the cosmos but you, see, your Vedas are smiling on their ignorance. Just wait! The time has to come and only time has to come when Vedas will return to Bharat, says Sanatan, your author! When this slave country and its rulers throw away their mental slavery and come back to original Bharat! Sanatan is confident and optimist! Worry free!! Peaceful!!!

Why did I give you the subtle description of Sanatan Science? So that you can understand and grasp the real nuances of KsheerSagar Manthan i.e. the Churning of Space. "The Space Research", would be told to you as a story by me. Hereafter, whenever, I use 'I' in the description, you treat it not 'me' but the God, the MahaPrabhu, the Sanatan, Krishna, Om, the Omnipresent etc.

"As a planet grows, its orbital path is also enlarged continuously. The gravity and its effect gets more & more intensified. The decay of the body also becomes faster due to the increased and intense gravity. To counter this decay the body also grows bigger &

bigger. In this way, the planet alongwith its residents attain the stage of a Danav i.e Demonic stage where all the creatures there have taken the demonic sizes. This is the time when the whole planet must go for Mahapralaya i.e. complete destruction or decomposition which is necessary according to the law of Cosmos.

I, the Lord & Beholder of this divine cosmic wheel, the lord of Sanatanlok, the one who is worshiped (orbited) by all the lords of all the lokas /complexes! Have to keep intact the divine cosmic wheel, the Sudarshan Chakra and have to take measures for its safeguards. I saw with my divine eyes that after sometime, the planets having creatures in a solar complex are going to ruin itself due to excessive load of gravity thereon and the livestock has also reached at the Demonic stage accordingly.

I ordered the concerned Devalok (galaxy) who being orbited by the solar complex, that Look! In that particular solar complex (family), so & so planet is going to be ruined. You just find out a new planet and transport the life from the ruining planet to that new planet so that there should not be any hindrance in the cycle of life in that particular solar complex and the solar complex does not remain devoid of life.

'Aham Brahmasmi', ' I alone is Brahma', said Devas (gods, Devalokas) converted themselves into light and went on soujourn in space to search the suitable new planet that may be conducive for life. This operation of Gods was given the name of "Ksheer Sagar Manthan" i.e. "Space Research". As soon as the Gods got my orders, they enter the space. They saw various & innumerous asteroids but none was conducive for life.

Later on, In the process of this search, they found a big Asteroid or Meteoroid. This asteroid was almost

attaining all the virtues of a planet. It got the spin as well as orbital motion in that complex. The gravity of this new planet was also just sufficient to hold life thereon. Then, they decided to transport life onto this new planet!

But there was a great difficulty before them. This planet was devoid of water. They know that life can not sustain without water there. Thus, the planet should be provided with water first before transfer of life there. The Gods (Devas) inspected each & every planet in the complex for water but they could not find water anywhere. Now what next? How to bring water on this planet?

The gods again returned back to space. Then, the Devas (Gods) started converting the Tejus atoms(light atoms) running around in the space through Yajna into water. In this way, they created a huge water reservoir in the space. They called it Vaitarani. This much water in the reservoir (Vaitarani) was multitimes more than the needed one for the planet. Rather, it was much more than many times of the planet itself. Now the question was how to get water descended on this planet.

If the water is thrown directly on the planet, the planet itself would get destroyed due to the great jerk of water on it that would take or throw it away out from the solar complex on the path of Mahapralaya or complete destruction because of imbalance of gravity. Then mass of the earth (the planet) would also suddenly get increased with the coming water and that also endanger the life of earth itself. Hence, the water can not be brought on earth in such conditions in either of two ways described above. The only way was to provide water to the earth slowly, slowly & continuously. The conference of gods discussed various plans to transfer the water

from Vaitarani to earth that became ultimately Gangaavataran or decendence of Holy Ganges on earth.

The Plan was finalized ultimately. According to it, first of all they decided to reduce the gravity of earth by balancing through a satellite planet having much, lower gravity than the earth and that can be set around earth to follow the spin & orbit around earth in this solar complex. Alas! No such asteroid or small planet could be found to suit by them in the whole solar complex. They searched it in other solar complexes of the same galaxy but failed. Ultimately, they could find such a small planet in a complex of other galaxy called Chandralok, the Moon complex, another Devalok. The gods brought this smaller planet from Chandralok to this solar complex by controlling the gravities and then set its motion appropriately to move around the earth with definite spin and orbit in similar way as other planets do in the solar complex and to balance the gravity in between the Earth and the Moon, the Satellite.

This planet has no weight; weight is of gravity. If I can lift the gravity, I carry this planet on my fingertips, say Vedas.

Do you know that planets are weightless! Weight is due to the gravity & in gravity only. If I can neutralize the gravity, I can lift any planet, on a tip of my finger, no matter howsoever big it is! This explains how Lord Hanuman lifted the great mountain Sumeru and how Lord Krishna held the mountain Govardhan on his finger to save all his people in Brija area from the continuous rains thrust upon them by god Indra in anger. Both the mystic stories in different ages of Ramayana & Mahabharat respectively are only to prove the point that weight is the subject matter of gravity and in gravity less zone, there can not be

any weight of even heavy looking large bodies, mountains or planets.

Since this tiny planet was brought from Chandralok, the Devas (gods) named it 'Chandra', the Moon. It was set to become a perfect satellite to earth and in between earth & Moon; the balanced gravity gave the opportunity to the gods to send the water down from Vaitarani to earth without jerk. This is depicted as Gangaavatarana i.e. the Descend of Holy Ganges on earth through the small bunch of hairs on the head of Lord Shiva, The lord of gravities that had Moon also on his head cosmetically. When the water was released from the reservoir (Vaitarani), through the space or controlled gravity zone between earth & Moon, it was pulled slightly towards Moon and rest was towards earth slowly, steadily & continuously and in this way, the continuous rains were observed on the earth for a long long period. Nevertheless,

the earth got water but without any jerk to destroy it or increase its gravity all of a sudden. It took considerable efforts as well as time to process all this but it could happen before the earlier said dying planet endangering the extinction of life thereon. Since the lordship over space, is with Mahavishnu, it is said that the Holy Ganges sprouted of the feet of Lord Vishnu, as the reservoir was in space only. The lordship of gravity is with Lord Shiva and ultimately, the Ganges was beholden in gravity on earth that is why, it is shown flowing from the head of Lord Shiva in Vedic scriptures. This was only with a view to demonstrate how it became possible to bring water on earth that was stored as glaciers in Antarctica.

Later on, the Gods transported various vegetations & livestock etc. in subtle forms to be brought up here on earth in conducive environment. Some livestock was also transported as it is and that is how we get the mention in Vedas of large sized people & creatures on earth in the initial stage. Since, those fellows were coming down from a very large sized decaying planet having optimum level of gravity, the inmates thereof were naturally also of a very-very large size like mammals that are identified and acknowledged by even Dr. Darwin, though only for his wrong conclusion. Rest were brought in embryo form in the wombs of the holy cows etc. in their hibernations state to deliver them on earth. This is how we get the description of mammals or giant sized people at one place & King Dileep & his beautiful wife, the queen serving the holy cow Nandini at other in the vedic scriptures. The life of the holy cow Nandini was threatened by a lion who was none else but Lord Shiva himself taking test of the cow, King Dileep of their skills as to how to save the cow by producing the congenial environment against the gravity on earth for getting life seen generated on earth. Who

else could have taken the test except the lord of gravities, the Lord Shiva himself! The great King Dileep and his wife could produce the conducive environment without caring the lives of themselves and thus the holy cow Nandini delivered their *in vitro* first child Raghu that started the human race on earth. This is why Bharat treat & worship the cow to be holy mother as we all are indebted to her. She is not worshiped because it gives us milk & other things that allow our life to sustain but because, the very existense of ours on earth is due to her only. This is also why the Dynasty on earth runs through the first child 'Raghu' & lord Ram becomes belonging to the clan of Raghu & not King Dileep, who, in fact, was the real father of Raghu.

[This is all depicted here in Sri Sanatan Ashram through the holy statue of Bharat Mata (The Mother Bharat) in the temple campus & a photograph is put in on the cover of this presentation. This is uniquely devised by his holiness Swami Sanatan Shri ji in accordance with Vedas in the present day environment where lots of idols are installed in many Bharat Mata Mandirs having no scientific correlation with vedic scriptures. My parents Learned Daya Shankerji & Rajeshwari Shankerji, the editors of The Times of Astrology, both were blessed and given the fortunate opportunity by Shraddheya Swami Sanatan Shriji himself to have honour of unveiling this unique statue/idol of Bharat Mata on 12th May, 2005 at the auspicious occasion of 46th foundation day celebration of the holy Sri Sanatan Ashram, Lucknow and great 94th Birth day celebration ceremony of his holiness Swami Sanatan Shri ji .

-Translator.]

According to Sanatan, the creatures, who were brought as it is, were large sized in accordance with higher gravity planet where they were the residents earlier. However, when they came on earth that having very low gravity in comparison to the original planet, the decay of their bodies became slow and thus their life span increased many times on earth. That is how they could live longer for thousands of years of earth. However, slowly, slowly, their successors & next generations on earth acclimatized with the gravity of & on earth and thus their size and span of life, both became normal in accordance with earth like present one. In this way, the gods brought life on this earth by inter-galaxy transfer of the same. The confusions arise in Pauranik period due to lack of accurate knowledge conceived in Vedas and there may be some distraction of this symbolic story in a few Pauranic stories that were meant only to ratify the facts (mentioned here &) told to you by your devotee Sanatan, the author! *Darwin's* theory & Big Bang theories have not remained there but the Vedas only before the whole world to accept it not as a gospel but truth & nothing else.

Here I want to clarify one more thing. The Moon was never remained a part of the earth. This has been discussed above but this has been proved by the fact also that whatever piece/part of soil of Moon was brought in by Astronauts of America in 1969, has strangely & entirely found having different atomic structure than the soil of the earth. Rationalists must understand and appreciate now the story of space research narrated and unraveled here.

While explaining the secrets of Maya (Gravity), the Vedas say why does the water on earth seeing full Moon come up to *high tide* and when not seeing the Moon at all, Why does it embrace the earth down

like a frightened child to have *low tide* in the Oceans? To know this, first we have to get to know why the light coming from Sun appears hot and from Moon appears cool!

This was asked around 30 years ago only from the western scientists and they said that there are atomic blasts in the Sun and hence rays coming from Sun carry the heat and thus the Sun rays are hot whereas, the Sun rays reaching to Moon, get cool over there due to heavy icebergs on Moon and when reflected to earth, the Moon rays remain cool & this is how Sun rays appear hot & Moon rays cool respectively! Alas! They forgot that they have reached Moon and found not a single drop of water overthere! Them how could they answer like this! In fact, they have no answer at all for these queries! If the Sun rays could carry heat from Sun even after traveling and crossing around 90 million (90 crore) miles of space, there cannot be any possibility of having any thing hot or cool kept in a thermo-flask that has a very small artificial vacuum insulator supposed not to allow the sun rays reach to the material inside the insulated walls of the flask and affect the matter therein.

Heat cannot travel in space. Heat can travel only in gravity-Vedas.

According to Sanatan, neither the Sun rays or Sun light is hot nor the Moon light is cool. This is all the game of Maya, the Gravity. When the atoms in Sun rays blasted through cosmic force reach the space, they became pacified because the war is always in and against gravity only. The friction or anti friction of atoms can not go on in space i.e. the gravity less zone.

Atoms has no electrons when in space. It is competent to produce as many electrons needed to repulse the attack of gravity.

When it exploded from the Cosmic Arch of Sun, matter changed to atoms and atoms became radioactive and cosmic. But when these atoms reached the space the electrons disappeared and there was no war, no heat.

But speed and force of explosion remained unchanged in the space as there was no friction in the space. Atoms with the speed and force, in fact, fought the gravity of planet (Earth) and became radioactive again to repulse the pressure of gravity. Due to heavy force of blast it touched the bottom of the planet and repulsed the gravity with the force of electrons and fled away to space again. Again electrons disappeared in the space.

Now I felt the heat of friction of electrons with gravity; not that the heat was transmitted from Sun to earth.

In this way, atoms coming from Sun when enter the gravity zone of earth, they fight the gravity and due to this friction of atoms caused of the gravity, the heat is generated, Not that they carry heat from the Sun itself! Since, the push from Sun behind these atoms is higher, they reach to the surface of the earth and thus carry heat upto the surface of the earth, that was generated by friction in the gravity zone of the earth itself. Again the heat carrying atoms of Sun meeting the surface of the earth are rerlected by the earth and they go back to space. Some of them reach to the Moon and again reflected with lesser impact to space and some of them re-enter the gravity arena of Earth. Since the impact & push behind these re-entered Sun-atoms reflected from Moon is not such that they can reach to the surface of earth, they remain fighting in the atmosphere above with the gravity of earth and return back to the space there from itself and thus, we see only

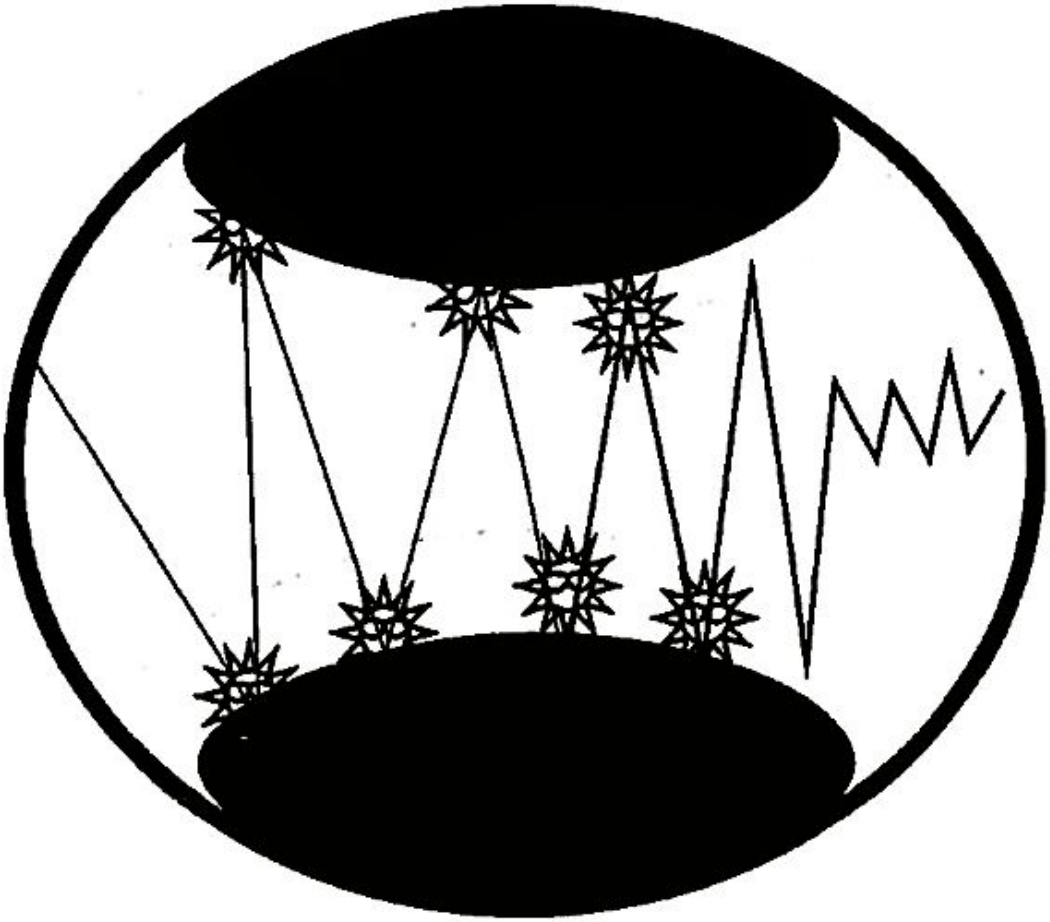

the Moonlight through those atoms and do not have a feel of heat on the surface of earth.

So dear devotees! You have come to know that neither the rays coming form Sun are hot nor coming from Moon are cold. Heat etc. can not travel through & cross space. When the Sun rays reflected from Moon re-enter the gravity zone of earth that can not reach the surface of the earth, we see only light without heat. However, The atoms in this moonlighted rays go back to space from the upper part of the atmosphere of earth, they create sort of temporary vaccum over there that results into upward tension and that pull up the liquids, especially water in the oceans and this phenomenon is witnessed as *high tide* which is very very significant on full Moon day. This also manifests into vegetations where the seeds sprout and a little plants shoot up from the seeds of vegetations. The tension &

vacuums created by Sun rays is much greater than the Moon rays and that takes away water itself in the atmosphere through vaporization also. The reason is simple. Sun rays come upto earth's surface level whereas Moon rays, not. Moon simply creates vacuums in the atmosphere, whereas Sun lifts the water physically away up from the oceans. This is the Sanatan view.

There are great differences in Vedic view & the views of west about the Sun. The western scientists say the Sun is a big fire ball & biggest possible atomic reactor. Vedas say, it is a cool planet. According to Vedas, the Sun itself is not an atomic reactor & fire ball but it is surrounded by enlightened Rudravalayas, the cosmic arches or spheres from all the sides, though away lacs of miles from the Sun. This cosmic sphere attracts big asteroids and meteoroids and gaseous clouds because of its very very heavy gravity towards itself and in this gravity, the subtle atoms become radio active. The mass of these radio active atoms can never enter the cosmic sphere as inside the cosmic sphere (arch) the gravity goes on further increase. You must remember, all the radioactive atoms try to escape gravity & reach the space by running out fast from the gravity. In this way we witness the continuity of beams of lighted radio active atoms around Sun, though these atoms are running continuously to space and as usual, the Sun is moving on its axis through spin and around Devalok through the orbit in accordance with the universal law of cosmic wheel, the Sudarshan Chakra.

If the Sun itself had been the Atomic Reactor, its existence could have been destroyed within three minutes and its atoms could have been scattered in the space. Thus, the view or opinion of the Western Scientists that the Sun is an Atomic Reactor , is

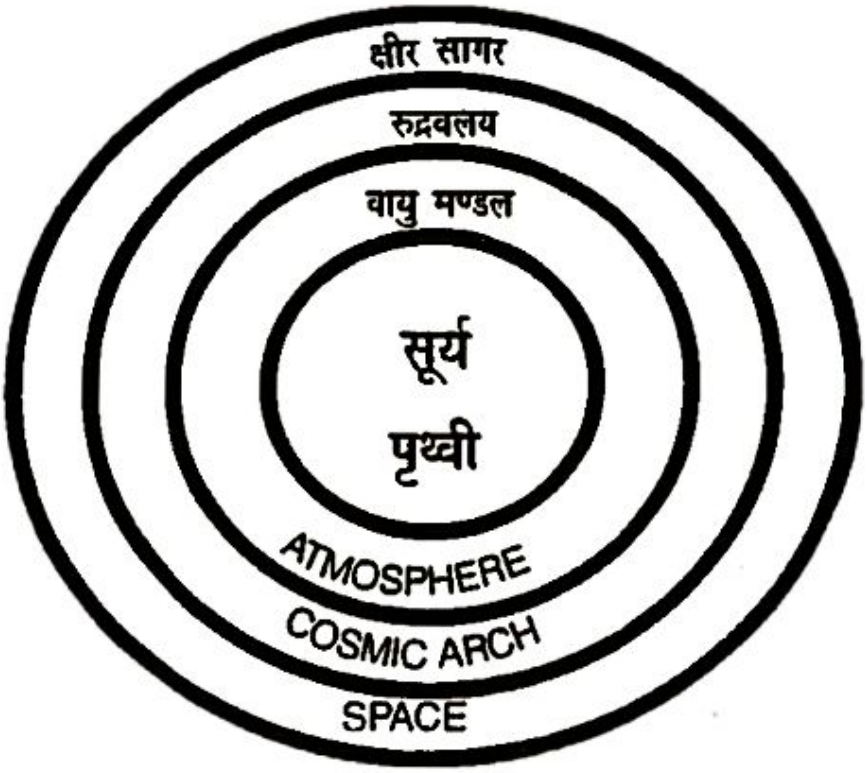

baseless. Certainly Sun is cool and neither has it taken light and neither heat nor it gives! Its heavy gravity is balanced by the surrounding cosmic arch. This cosmic arch continuously eats the asteroids and translates them into radioactive atoms that are scattered in the space. This view of Vedas is much more powerful and authentic being more scientific within the views of modern scientists.

In this way the unreasonable fear of the western scientists that once the Earth goes far away from Sun, the heat on Earth will be decreased and Earth would become cool is totally baseless. According to Vedas if the Earth goes far from Sun by 1 Crore miles more, the heat on Earth would increase instead of decreasing. The decreased of heat on Earth is not possible in such a situation because when the Earth would be at more distance from the Sun, the gravity of the Earth would be more and due to increase of gravity of the Earth, the heat would also increase. Thus, it is the increase of gravity that

matters and counts for heat and not the distance as believed by the Western people. There is no reason of decrease of heat in case of increase of distance because distance is covered by space and there cannot be any loss of kinetic energy of atoms in the space as such. Therefore, the distance of 8 crore mile is as good as the distance of 80 crore miles. There, where friction is absent due to lack of gravity, to presume the decrease in the speed is totally irrational.

Secondly to say that the Sun is becoming less hot or being cold and after some time we need to find out a new Sun for our purposes, is also absurd. We know that the Sun was never hot and would never be cold or less hot as discussed above. So long the cosmic arch is invisible and suddenly comes up again and becomes visible on surface. Similarly the earth sometimes comes up towards the side of Devalok and Sun and sometimes being on the opposite side the Earth appears to be depressed and this phenomenon causes seasons like summer and winter etc on certain parts of the Earth.

The hypothesis of Western Science is quite fool hardy that winter season comes on Earth when the Earth is far away from the Sun. We have already discussed it that as far as the distance between Earth and Sun is concerned, if it increases, the gravity of Earth will also increase and that will result into more heat on Earth and there is no question of having winter season in that situation. The Sun alongwith its all constituent planets i.e. the whole solar complex is orbiting around Devalok. The Earth alongwith its own family that includes only Moon is orbiting around the Sun. While orbiting around the Sun when Earth comes to the side of Devalok, we say that Sun is in 'Uttarayan' and when the position of Sun in its orbit

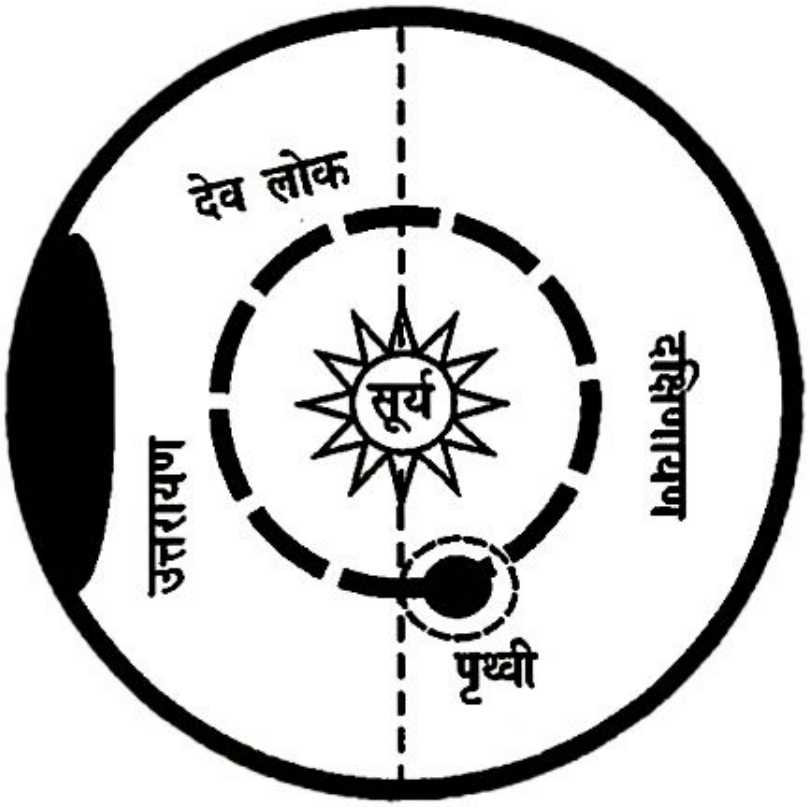

is away from Devalok that is opposite to the earlier situation being on other side of Sun, the Sun is said to be in 'Dakshinayan'. In this way the Earth orbits for six months around the Sun from the side of Devalok i.e. Uttarayan and for rest of the six months from the opposite side called Daanav side i.e. Dakshinayan. Bishma Pitamaha waited around six months while lying down on the hoods of arrows only for such Uttarayan before leaving this world. To mark Uttarayan it is well-known that it is there from the point of entry of Sun into sign Capricorn and it remains till it enters the sign Cancer. There the existence of Sun would be there and so long the Sun is there, the cosmic arch will remain there. In this way the Sun has attained immortality. Thus, we have seen that at one place the planet disintegrates into atoms and looses its existence whereas on the other side, the other planet like Sun gets cosmic arch and thus becomes immortal forever.

Look Man! this is the way shown by Sanatan Vedas to you. It is upto you to choose the path.

Either you follow the way of Dashanan by drawing and exploring everything from the nature for yourself and disintegrate into atoms through ashes on pyre or follow the way of Dasharath by making unison with the Atman for God and cannot transfer yourself into light and become immortal like Sun.

According to Vedas the Earth orbits around Sun in the same way in which a piece of wood orbits continuously into whirlpool, where we witness that some times the piece of wood becomes the planet which is nearest to Sun having highest speed of revolution and planet which is farthest from Sun in our solar complex is having slowest speed in its revolution on orbital part around us though the centre of all the revolutions is the Sun. One should not get confused about these speeds and orbits from the speed and revolutions too i.e. Wheels of a bicycle

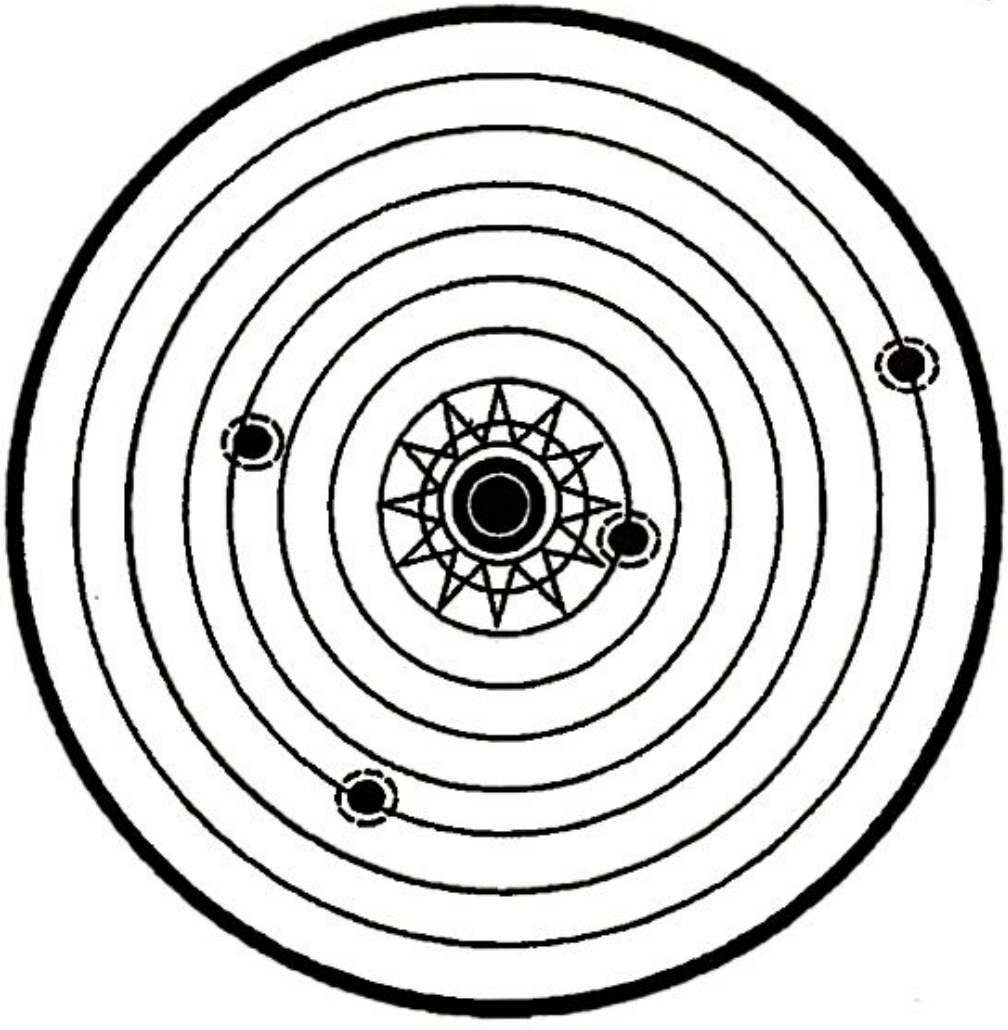

where the revolution of the wheels is not dependent on the size of the wheel. In this case of bicycle sort of thing if different wheels having different diameters are tied up with one axis, all the wheels have to complete one revolution simultaneously. But this does not happen in the space. Hence, it is proved that the planets move in like manner as a piece of wood into the whirlpool.

Because of the spin of Sun on its own axis, the cosmic arch surrounding Sun is also spinning on its axis very fast. Therefore, the rays of atoms from cosmic are also being scattered in the space in circular positions. That is how every planet is having the spin on its axis. Because of spin on its axis, the gravity of the planets becomes like the seat and that is how the circular rays coming from Sun crosses the planets by orbiting them and they do not push any planet from its path. Had there not been any spin on this own axis of the planet, the mass of the atomic rays from Sun

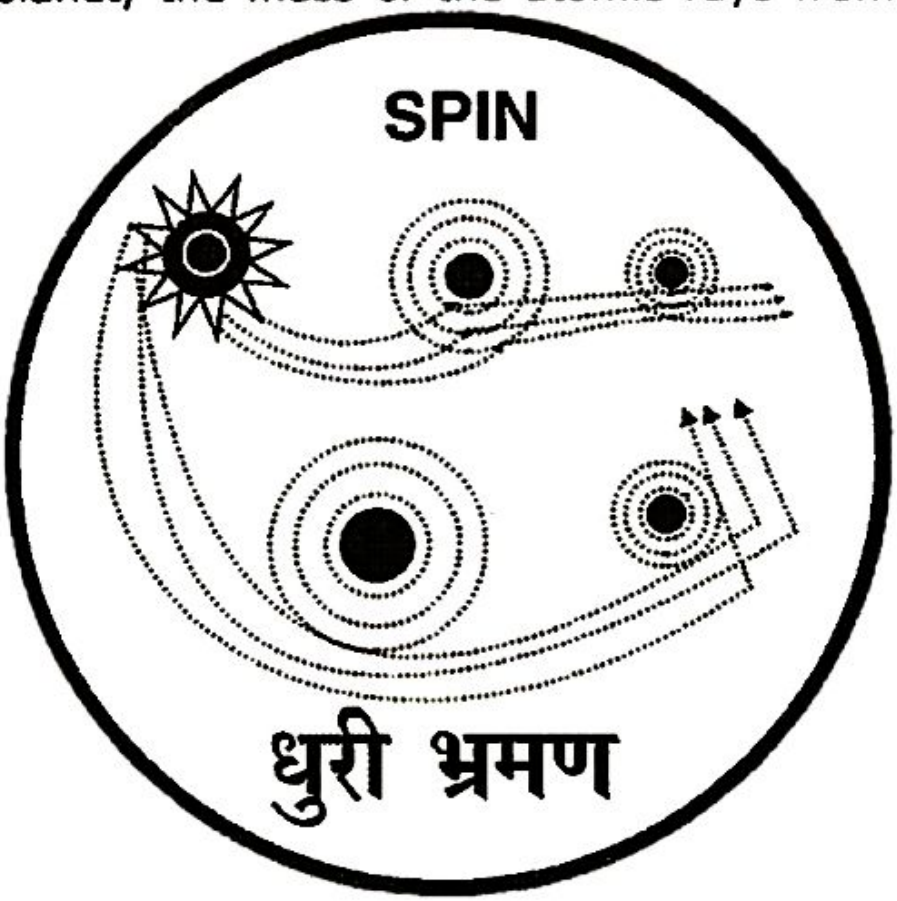

could have thrown the planet out of solar complex and that planet could have been broken into atoms again as in 'Mahapralay'.

I have briefed you about these orbits. The orbit which is the specific part of the Sanatan philosophy, the orbit has been remembered by perpetuating into a ritual. The orbit is made the sign of life by Sanatan. The orbit is said to liberate a man. The orbit is fruitful without which the life is useless. That is how none of the worship Yajna or any auspicious performance is complete without orbit. Sanatan Vedas have spelt out these things many times in its Richas. However, one should not forget that this knowledge and science has been depicted by our great sheers in similes meaning thereby the importance is not given to the cosmic signs but the spiritual signs which allows you to realize that Aham Brahmaasmi. The target was liberation in each Richa. Is it not true that if I cannot recognize myself, realize myself what use of all various knowledge of Science and Philosophy even if it is stored in Vedas. If I could not realize myself, all the knowledge is useless for me.

O Great Devotees of Sanatan! The great is your faith, devotion and patience! The whole knowledge is patty in comparison to your faith and belief! You are really great! I keep you in great esteem! You take away my all knowledge, all special knowledge and science including my all wisdom, if any, I possess and dispossess me of all these things. However, bestow me the mere association of Lord Krishna! I wish that my all knowledge should vanish but remain there only the association of mine with my Lord Krishna, the Krishna of childhood!

How foolish and childish was I, your devotee which used to indulge in dreaming of gravity research and wished to take control of gravity in my hands, in the same fashion and manner in which a child wishes

to build castles in the sands of a sea shore where he is busy with his hands and feet all! Whereas, the food is being cooked and served by his mother. The child becomes young full of youth while he is busy in building the castles in the sand. In this process of building the castles in sand, he further grows and goes to fag end of his life with apparent signs in his body like having grey hairs and bent back. Nevertheless, he is very busy even then in his business, thinking and believing that he is able to build a castle himself whereas the fact is that even today the Mother Nature alone is creating food for him from the ashes. The child does not know that, he, the gather of ashes and soils was moved by whom! Who gave the life to it! How he got the smile on his fact! How he got speech and oratory! How the thoughts came to him! How he is able to think! He does not any of such things. But he is busy in making castles of sands even at the matured age. He became old but his childhood is as it is even now! O! He is very very busy!!

Condemned is that knowledge! Condemned is that Science! That takes me away from my Lord Krishna, Lord Sanatan! Please do not confer upon me the honours for my knowledge! I am not on the path of Dashanan! I am not Dashanan either!! I need only the staunch belief and faith of a devotee or worshiper of Lord Krishna, so that I may become devoid of everything but Lord Krishna! So that I wander singing Lord Krishna! So that I go on calling him alone! So that I see him everywhere – whether my eyes are open or closed – no matter! Now onward, alone He, Lord Krishna, is the orator, listener, story teller and story itself! He alone is the script as well as script writer. He alone be allegory personified in each word of the script. I need that type of Devotion in Him! Kindly provide me the same!!

तन एक मन्दिर !

Body The Divine Temple

NISHKAAM PEETH PRAKASHAN